

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN
SURAT.

Manuscripts Library

S. D. P. B.

Coll. No. 559

(a) Viśva prakāśa.

Title (b) Ekakṣara māma-
māla.

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN, SURAT

Shastri Dinmanishankar Pustak-Bhandara

No. : 559 Subject : Lexicography

Title : (a) visva prakāśa
(b) Ekāksara nāmamālā.

Author : (a) Mahēśvara
(b) Amara Scribe : (b) Devanāma

Date of the work : — Date of the Ms. : 7.5.1983

Place of the work : — Place of the Ms. : —

Size : 9.9" by 5.9" Extent : 112 fol.

Language : Sanskrit Script : Devanāgarī

Remarks : —

वसुधैव कुटुम्बकम् । वीरेश्वर उवाच ।

1875

This image shows a blank, aged, cream-colored page, likely an endpaper or flyleaf of a book. The paper has a slightly textured appearance with some faint smudges and a small dark stain near the bottom center. There is no text or other markings on the page.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सुवीमहिमामोहकेशांतकनिषण्णरं ॥ त्रैधा
 तुकनिदानं ॥ सर्वज्ञं दुःखशान्तये ॥ शाकलाविलासात्मकरंदविंदुमु
 द्राविनिद्रेहदयारविंदे ॥ याकल्पयंती रमते कवीनां देवी नमस्मामि स
 रस्वतीतां ॥ १ ॥ कवीद्रुमुदानंदकंदोऽमसुधाकरं ॥ वाचस्पतिमति
 स्पृष्टिसेमुरवीचंद्रिकोऽलं ॥ २ ॥ शुद्धतल्लीरात्रिकलोचमालोद्धा
 सियशःश्रियं ॥ गुरुवंदे जगद्गुणरत्नैकरोहणं ॥ ४ ॥ श्रीसाहसार्द्ध
 नपतेरनवद्यविषयैघांतरंगमपदद्वयमेव बिभ्रतं ॥ आसीदसीमवसु ॥ १ ॥
 धाधिषवंदे नीये तस्यान्वये सकलवैद्यकुलावतंसः ॥ शक्रस्य दस्त
 वगाधिपुराधिपस्य श्रीतल्लइत्यमलकीर्तिलतावितानः ॥ ६ ॥ संक
 ल्यसंमिलदन्त्यविकल्पजल्पः कल्पानलाकुलितवादि सहस्र
 यश्चंद्रचारुचरितो हरिचंद्रनामा स्वव्याख्याचरकतंत्रमलंचकारा ॥ ५ ॥ ३४

पुः ॥ तर्कत्रयत्रिनयनसनायायदीयोदामोदरः ॥ समतवद्विषजावरेण्यग
 तस्यातवसु नुरुदारवाचो वाचस्पतिः श्रीललनाविलासी ॥ सदैव विद्या
 नलिनीदिनेनाः श्रीमल्लः सत्कुमुदाकरेणुः ॥ ८ ॥ यज्ञातजः सकलवैद्य
 कतत्वरत्नरत्नाकरश्रियमवाप्यचकेशोऽनूतः ॥ कीर्तितिकेतनमति
 चपदप्रमणवाकाप्रपंचरचनाचतुराननश्रीः ॥ ९ ॥ तल्लस्यतस्यचसुत
 स्मितपुंडरीकखंडातपत्रपरतागयशःपताकः ॥ श्रीब्रह्मइत्यविकला
 त्ममुखारविंदसोऽह्लासलासितरसार्द्रसरस्वतीकः ॥ १० ॥ तस्यात्मज
 सरसकैरवकांतकीर्तिः श्रीमान्महेश्वरइतिप्रथितः कवीद्रुः ॥ तिः
 षवांश्चमहासर्वपादश्चाशष्टागमांबुरुहखंडरविर्बनूवा ॥ ११ ॥ मः
 साहसांकचरितादिमहाप्रबंधतिमिणैपुणगुणयंतगौरवश्रीः ॥
 ग१

स्य२

यो वैद्यकत्रयसरोजो जे सरोज बंधु बंधुः सताच कवि कैरवकान्तमंदु ॥१२॥
वयो नतिस्तस्य महे श्वर वैद्यसिंघोः पुरुषोत्तमाना ॥ देदीप्यतां दुर्लभमे
पुनित्यमाकल्पमाकल्पित कौस्तुभश्रीः ॥१३॥ लघैः कथंचिदतिजातसुव
को४ एकारलीलेन शशतर लघिशशरलैः ॥ विश्वप्रकाश इति कांचनबंधु
शोभा बिज्जमयात्रघटितो मुखमंडपः ॥१४॥ फणी श्वरो दीरितशेष
कोश रत्नाकरालोडनलादिता ॥ सैव कथं नैष सुवर्णीरो लोवि ॥१५॥
श्वप्रकाशो विबुधाधिपाना ॥१६॥ भोगींद्रकात्यायनसाहकवाचस्प
तियाडिपुरसराणां ॥ सविश्वरूपा मरसंमलानां सुभाद्रु गोपालितना
गुरीणां ॥१७॥ कोशावकाशात्प्रकटप्रभाक संताविता नर्घगुणः स एष ॥
संपायेनैषति वांछिर्था न कथं न चिंता मणितां कवीनां ॥१८॥ आमित्र

द१

तो१

दि४

शैलचरमाचलमेकलाद्रिकैलासचूमिवलयाघदिहास्तिकिंचित ॥ एक
त्रसंस्तमगोचरशशरत्नमालोका तां तखिलं सुधियः कवीद्रा ॥१९॥ य
द्यस्ति वाङ्मय महात्मा व संथनेछात्रा मुंपदं फणिपते यदि कौतुकं
वः४ वौ ॥ विश्वप्रकाशमनिशंतमिमनिषेव्य संताव्यतां परमशाहिकरोखर
श्री ॥२०॥ सतां पुस्तकसंभारभार मोहः रित्तो मया ॥ नामानुशास
नमिदं संपूर्णं तत्त्वतां दुतां ॥२१॥ एकदित्रिचउषं च षड् लनुक्रमो हूतौ ॥
नं५ कातादिवर्गे नानार्थः संग्रहो यं वितत्यते ॥२२॥ नानार्थः प्रथमां तां
त्रसर्वत्रादौ प्रदर्शित ॥ सप्तम्यंते पुशष्टे पुवर्तमानः सुनिश्चित ॥२३॥
शक्षां२ दृष्टं तेन सहकापि सप्तम्याधार एव च ॥ स्पष्टां लिङ्गते दा यक्काप्य
त्रपुनरुक्तता ॥२४॥ कैकं कोब्रह्मात्मानिला क्के पुशमनेशर्वनामिवा

य२

पाव के चमयूरे चसुखशीर्षजलेषु कां॥२४॥ कदि। अकपापे चडः रेवेच
शकोरा जन्मदेशयो॥ बकसु बकपुषे स्यात्क के श्रीदेवरहसि॥२५॥
शुको व्याससु ते कीरे रावणस्य च मन्त्रिणि॥ ग्रंथिपर्णे शरीरे च शुक्रः शिरीषे३
स्यात्को के कचित्॥२६॥ द्विकः को के च का के च स को बाणानिलो त्यजे।
अर्कीर्क पर्णे स्फटिके रवौ ताम्रे दिवस्य तौ॥२७॥ कर्कः कर्क मते वदो
शुक्ला श्वेदपीणघटे॥ तर्कः कांरा वित कीह क मने दे मु की त्तते॥२८॥
श्रीको यशसि पद्ये च लोकसु तु वने जने॥ स्तो को त्ये चा त को कश्चक्रे ॥३०॥
वृ३ के न्येष्टे खर्जरी दु मने दयो॥ आरो को दीप्तो बिलेरो को नो कात्रय को३
एनेदयो॥३१॥ के च स्या तौ कंचाप त्पुत्रयो॥३२॥ उ॥ ठाठे को विदग्धे छेक विश
स्त म गपहि णोः रे को विरे केश कायारे कस्या दध मे पिचा॥३३॥ का

कः स्याद्यय सेवृ ह प्रजे दे पीठ सर्पिणि॥ शिरो वहा तमे मान विशेष दीपने दयो॥
वे स वारे च धृष्टे च ज्येष्ठ त्ना तरि चैष्यते॥३४॥ का का स्यात्का क ना सयो का को
ली का क जंघयो॥ रक्ति का यां सु लिह्यो च का क मा च्यो प्रकिर्त्ति ता॥३५॥ का क
स्त्री रत बाध स्यात्का काना मपि संह तौ॥ पाकः शिशौ जरा मिष्ट पचन के दनेषु॥३६॥ च५
शा को दीपां तरे शक्तौ न पदु म विशेष यो॥ शा के हरित के चापि ना कः स्वर्ग ॥३७॥
तरिह्यो॥३८॥ मू को प्य वा अतौ दीने शुको नु क्रोश सुहृयोः॥ नू कश्चिन्ने च का ॥३९॥
ले चने को मंडू मेघयोः॥४०॥ ए कंज के बले श्रेष्ठे इतर स्मिं श्रवा च्यवता ॥४१॥
शो कं शुक्र समूहे च स्त्रीणां वकरणं तरे॥४२॥ अक स्तानेति के मं तौरूप को
संगलं ससु॥ नाट कादि परि छेदे चित्र युद्धे च नृषणे॥४३॥ कं कः कृद्दिजे
ख्या तो लो हृष्ट च तां तयो॥ कं कः प र्याण नागे स्या नू दी पात्रे च जंगुरा॥४४॥

रंकः कपि च नेदे स्यान्मानांतरस्वनित्रयोः॥ कोपेसि कोशे नंघा योदं कणाया
 वदारणे॥४७॥ रंकस्तु तपणे मले पंकः कर्दमपापयोः॥ न्युक्तं रंगे रूषो नाकुर्वामि
 रगिणौ सुनौ॥४८॥ शंकुः कीलेशिवे स्नेहसंख्यायादः प्रनेदयोः॥ कस्तूः पापाशये पा
 पेदं नेविदं किद्वयोरपि॥४९॥ वल्कलं तु वल्कले खंडे शक्ते शकलवल्कयोः॥ मु
 क्तं घटादिदे ये स्यात् जामातुर्वधके पिचा॥५०॥ निष्क्रमष्टाधिकस्वर्णशते
 दीनारकर्षयोः॥ वत्सो लं करणे हो मया त्रेह मपले पिचा॥५१॥ मुष्कोऽऽ कोशे संघा
 ते मुष्को मोह कपादये॥ किं कुर्वितस्तौ ह से च प्रकोष्ठे कुसिते पिचा॥५२॥ त्रिका
 कपस्य नेमो स्यात्त्रिकं दृष्टा धरे त्रयोः॥ लंकारतः पुरी शाखा इति नीकुलदा ॥५३॥
 सुचा॥५४॥ शंकात्रा सेवित केच राका उ सरिदे तरे ॥ ५५॥ कस्तूरे कोच नारे च कापी
 ॥५६॥ कस्तूरे कोच नारे च कापी ॥५७॥ कस्तूरे कोच नारे च कापी ॥५८॥ कस्तूरे कोच नारे च कापी ॥५९॥

चंपकं च पके गौरे पीतपुष्पे च चंपकं २

चंपके स्वर्णे किंशु के नाग के सरे॥ धंतूरे काच नारे च कापी ये पि कृत्ति
 न्ततं॥५६॥ कर कस्तु कर के स्याद्वाडि मे च क मंडलौ॥ पक्षि नेदे करे चापि
 कर काच च तो पले॥५७॥ नर को निरये दे त्य सरकः सीधु ता जने॥ अठिना
 धग पंतौ च सीधु पाने च सीधुनि॥५८॥ खन कश्चित् विंत्तं से संधि चौर तव ४
 च मूषिके॥ जनकः पित्र राजर्षी र्मुत्तकं संशये युगे॥५९॥ यौत के चलन ता ५
 ५५॥ यौत के चलन ता ५५॥ यौत के चलन ता ५५॥ यौत के चलन ता ५५॥
 मधु को बिडुं ने दे स्याद्घृष्टा के विहगांतरे॥ मधु को मधु पत्नी स्यादणु को ले ४
 निपुणा त्ययोः॥५६॥ वसुकः शिव मध्यो स्याद र्क पत्नी च रो म के शिशु ॥५७॥
 कः शिशु मारे स्याद्वाल् को धू कि नोरपि॥५८॥ क्रमुकः पट्टि कालो घ्रेन शेर
 द्रमुस्त क पू गयोः॥ फले कर्पासिका माश्च क्रमु को ब्रह्मदारुणि॥५९॥

बहुकः कर्कटे के चरासूहे जलखादके ॥ धनिके साधु धन्या धनेषु धनिका स्त्रिया ॥ ५॥
 प्रियकः पीतसाले स्यान्नीये चित्रमृगलिनि ॥ ऊं ऊं मेव प्रियगोचरं धुकश्चिपिदे
 शिशो ॥ ५॥ यमके यमजेशाले कारे संयमे पिच ॥ मराकः कथ्यते हृद्गं उ
 रोगविशेषयोः ॥ ५॥ ऊं ऊं कंडु पटोले स्यात् श्लोकसंबंधगुणके ॥ ऊं ऊं कश्चुके
 श्रेष्ठवल्मीके का कतिंदु के ॥ ६॥ तिलके चित्रके प्रादुर्लभा मेतिलकालके ॥
 रोगाश्च दूमने देषु व्योम्नि सौवर्चले पिच ॥ ६॥ ऊं ऊं को मार्गने दे स्यात् रुम
 ने दे ऊं ऊं तमे ॥ ऊं ऊं कः स्यात् सुनौ तैलशेषे सार्ज्यवृत्तयोः ॥ ६॥ चषके उ सु ॥ ५॥
 रापात्रे मध्यमघत्रने रयोः ॥ चटकः कलविके पिचटका स्त्री स्वपत्ययोः ॥ ६॥ क ॥ ५॥
 टके वलये सा नौराजधाती तं वयोः ॥ समुद्रलवणे दे तमंडने दे तिना मपि ॥ ६॥
 कडु के कडुरोहिण्यो व्योषे पि कडु के स्मृता ॥ चतुः प्रज्ञे तौ तांडने दे चुलु
 निर ॥ ५॥

३ चसौव
 के ५
 धन ५
 कवमतः ॥ ६॥ पुलकः कृमिने दे स्यात् तन्वर्क मणिदोषयोः ॥ गजान्त्रपिंदुरो मा
 चे हरिताले शिलोतरे ॥ ६॥ चरुके मंगलद्रव्ये ग्रीवा जरणा देतयोः ॥ इकटे बी कर
 जपूरैर्चल विडंगयोः ॥ ६॥ रोचताया चरुचक मश्चा जरणा माल्ययोः ॥ हुरकः
 को किलारव्ये स्याद्गोहुरे तिलकद्रुमे ॥ ६॥ कामुकः कामने शोके पादपेचा
 तिमुक्तके ॥ पात्रुकः पातमालौ स्यात् प्रपातजलहस्तिनोः ॥ ६॥ आन कः
 पटहे जे र्पा मृदुं दे ॥ आठ के मानने दे स्यात् तुवर्या माठ की मता ॥ ७॥
 तारकः कर्त्तधारै च देत्ये च दिशितारके ॥ कनीनिका योन रुत्रे तारके तार
 का पिच ॥ ७॥ दूरकः क ॥ त्रिप्रोक्त मादावपिकारके ॥ चारकः
 पालके श्वादेः स्यात् संचारक बंधयोः ॥ ७॥ वाराको श्वगतावश्च विशेषे च नि
 पेधके ॥ जाहको घोघ मज्जरिव द्वाका उदिका सुच ॥ ७॥ पावको ग्रीसदा
 ६४

^{जे १} चोर वस्त्रि मंथे च चित्र के ॥ न जात के विडे गो च सायकः शर ख डु यो ॥ ७३ ॥ नाय को मे
^{जे ३} तरि श्रेष्ठ हार मध्य मणव पि ॥ प्राण कः सत्व जा तीये जीव के द्रम शा वयो ॥ जाय
 के कोर के प्रोक्त उ लाये जा निनी फले ॥ आना ये दे ने दे च वस्त्रे ने दे च जा नि का ॥
 ७५ ॥ बाल को हे शि शौ के शो वा जि वारण बाल भौ ॥ अंगुली य क की वेर पारि हा ^{धान ३}
 र्येषु बाल के ॥ ७६ ॥ बार्द के दृढ संघा ते दृढ ते दृढ कर्मणि ॥ माम के म मता यु ते
 मानु ले माम के स्मृतः ॥ ७७ ॥ या ज को य ज निख्या तो या ज को रा ज ऊं ज रे ॥ ग्राह को घा ति
 विह गे व्या धा ना च गृही तरि ॥ ७८ ॥ दार को ने दे के प ते रा त्र के पं च रा त्र के ॥ ये न ^{॥ ६॥}
^{सो ३} वे श्या गृहे नी नो व सरः सूत्र रा त्र कः ॥ ७९ ॥ ला स को विल स के ला स्प कारि ण्य पि
^{कि २} मयूर के ॥ रा के क श क रा पि डे डु ग्ध फे ने च शार्क कः ॥ ८० ॥ हार कः किं वे चौर ग घ तर
 विज्ञान ने द यो ॥ ८१ ॥ स कार व्या च च चि को ज ला दे र पि बु दु दे ॥ ८२ ॥ प्रा त क लु
^{चा १}

^{क २ चूले २} ^{मु ३} ^{को ३} शिला ने दे वि र ग्धे घोष के पि च ॥ नाम को जंबु के धर्त सूर्या वती र म ने द यो ॥
 ८३ ॥ पि ण्य कः सिद्ध के हिं गो तिल कु के च उं उ मे पि ना को हर को दं डे पां शु व र्ण
 त्रिशूल यो ॥ ८४ ॥ का व कः रुत को वो स्या त्यौ मं स्त क का क यो ॥ हार कः प कि ^{त ३}
 म स्था दि पि ट के जाल के पि च ॥ ८५ ॥ पाट कः स्या न हा कि कौ कट को तर वा द्य
 यो ॥ अक्षा दि णे ल ने मू ले र व्या प च य रो ध सो ॥ ८६ ॥ वार कः संग रे शो च्ये प र ^{वरा कः ४}
 को द्र त र ख डु यो ॥ पु ला क सु छ धान्ये स्या सं दे पे तृ क्त सिद्ध के ॥ ८७ ॥ वि पा
 कः की र्त ते स्वा दौ परि ण मे च डु र्ग तो ॥ नि पा कः प च ने खे दे प्य स त्व र्म फले
 पि च ॥ ८८ ॥ लं पा को लं प टे दे शे किं पां प ल मूर्ध यो ॥ श म्या कस्त क के ध रे सु म्या
 कश्च उ रं गु ले ॥ ८९ ॥ मो च कः क द ली सिं गु नि मे च क क्षि रा गि णु ॥ पे च को ज लो
 मूल मूल प र्यंत क यो ॥ ९० ॥ मे च को च हिं चं दे स्या ने च कः स्या म ले पि ^{श्या म २}
 चा ति मि रे त ल व र्णो उ मे च क वा च व द वे त ॥ ९१ ॥ सू च कः सी व न द्र यो
^{शि ३}

बोधकेष्टपदशके॥ पिशुनेशुनिकाकेचसेचकसेचमेष्टयो॥ १॥ धा॥ नो॥
चकोमांसपिडेस्यादहि॥ तारचकजला॥ ललाटा॥ नरतो॥ स्त्रिणा॥ क॥ र॥ ली॥ नी॥ ल॥
वस्त्रयो॥ १॥ शनि॥ बु॥ धौ॥ क॥ र्ण॥ पू॥ रे॥ च॥ मो॥ व्य॥ न्॥ श्र॥ य॥ क॥ म॥ ए॥ ॥ मो॥ द॥ को॥ ह॥ र्ण॥ के॥ रे॥ प॥
खा॥ घ॥ ने॥ दे॥ च॥ मो॥ द॥ के॥ ॥ ३॥ ॥ खो॥ लो॥ क॥ पा॥ क॥ व॥ मी॥ क॥ म॥ ग॥ को॥ श॥ शि॥ र॥ स्त्र॥ के॥ ॥ ४॥ स्त्रि॥ ४॥
गो॥ ल॥ को॥ वि॥ ध॥ वा॥ पु॥ त्रे॥ ज॥ रा॥ च॥ म॥ ए॥ के॥ गु॥ ले॥ ॥ १॥ ॥ क॥ प॥ को॥ गु॥ ए॥ व॥ हे॥ स्या॥ तै॥ ल॥
पा॥ त्रे॥ ऊ॥ ऊ॥ द॥ रे॥ ॥ उ॥ द॥ पा॥ ने॥ च्यु॥ ता॥ या॥ च॥ क॥ पि॥ का॥ नो॥ ग॥ तो॥ प॥ ले॥ ॥ १॥ ॥ क॥ ल॥ क॥ ह॥ मि॥ शै॥ ले॥
च॥ प्र॥ ती॥ र॥ ॥ स्तू॥ य॥ यो॥ पि॥ ॥ रूप॥ क॥ ना॥ ट॥ के॥ ध॥ र्ते॥ का॥ व्या॥ ले॥ क॥ र॥ ए॥ वि॥ डु॥ ॥ १॥ ॥ च॥ त॥ क॥ ॥ १॥ ॥
क॥ प॥ के॥ प्या॥ मे॥ सू॥ त॥ क॥ स्त॥ न॥ नो॥ ॥ भू॥ त॥ की॥ स्या॥ त्य॥ शो॥ चि॥ त्रे॥ सू॥ त॥ क॥ प्रा॥ व॥ दे॥ से॥
की॥ च॥ को॥ दे॥ ॥ त्य॥ ने॥ दे॥ च॥ शु॥ क॥ वं॥ शे॥ द्र॥ मा॥ त॥ रे॥ ॥ की॥ ट॥ क॥ ह॥ मि॥ जा॥ तो॥ स्या॥ नि॥ ष्ठ॥ र॥
की॥ ट॥ को॥ न्य॥ व॥ त॥ ॥ १॥ ॥ जी॥ व॥ क॥ पी॥ त॥ सा॥ ले॥ स्या॥ त॥ ह॥ प॥ ए॥ व॥ धं॥ जी॥ वि॥ नि॥ ॥ से॥ चि॥ ॥ ४॥
नि॥ प्रा॥ ण॥ के॥ प्या॥ हि॥ उ॥ उ॥ के॥ पा॥ द॥ यो॥ ॥ १॥ ॥ त॥ रे॥ ॥ १॥ ॥ आ॥ नो॥ वे॥ जी॥ वि॥ का॥ मा॥ ऊ॥ जी॥

प५

स४

वंत्यामपिऊत्रचित्॥ दीपकं वागलेकारेदीपकोदीप्तिकारके॥ वीरकोधिंक्रिया
लेखेपतंग्यावीरिकासता॥ सेकस्तुप्रसेवेस्यात्अनुजीवीनिचान्यवत्॥ १॥
अशोकोवजुलेमानेद्रमनिःशोकयोर्मतः॥ अशोकाकटुरोहिण्याअशोकपा
देरेस्मृता॥ २॥ आलोकोदर्शनोद्योतः॥ आलोकोबेदिनापणो॥ पेटकंपुस्तकादी
नामंजुषायाकदंबके॥ ३॥ हेरुकोबुद्धनेदेस्यामहाकालगणेषिच॥ भैनुकेक
रणेस्त्रिणाधेतुनामपिसंहतो॥ ४॥ विवेकःस्माजुलद्रोण्याविचारैपिरहस्यपि॥
गैरिकंकनकेधौतौप्रसेकःसचनेश्रुतौ॥ ५॥ वैजिकेशिगुतैलेचहेतोसद्योऊ
रपिच॥ कोरकंऊजलेविधात्कक्कोलकमृणालयो॥ ६॥ कौतकेचाजिलोषे
स्याडुसवेनमहर्षयो॥ परंपरासमायातमंगलेचऊतहले॥ ७॥ विवाहसूत्रगी
तादिभोगकामेषुचस्मृता॥ कौशिकोनकुलेव्यालगाहेगुगुलशक्रयो॥ ८॥ वि
श्रामित्रेचकोशतोवृकयोरपिकोशिका॥ कोशिकीचंडिकायाचनदीनेदे

विजेशे४

चकौशिकी॥१॥प्रतीकोवपवेप्रोक्तप्रतिकूलविलोमयो॥मूलीकमपि नूनि
 वेदीप्यकपूरकर्तणे॥१॥अनीकः कामुकेरुने कवौचनयवर्जित॥वल्मीक
 कोवामतूरस्यान्मुनिरोगविशेषयो॥११॥अनीकं हुरणे सैन्यव्यलीको नाग
 रे स्मृतः॥वल्मीकमप्रियाकार्यविलक्ष्येपि पीडने॥१२॥नालीकपत्रखंडे हैता
 लीकः शरशिष्यो॥अलीकमप्रियो प्रोक्तमलीकममृते दीवि॥१३॥अनू
 के उऊलेशीलेप्यनू को गतजन्मनी॥अनूकः कुरुयो धे स्यात्त्रैपके जंनते
 नि॥१४॥शेषूको गजकुंतां ते दैत्यने देपि घोषके॥बंधुके बंधुजीके स्यादंधूकः
 पीतसालके॥१५॥मंडूके बंधुने देपि डुरे शोणके विड॥मंडूपाण्या मंडूकी वली
 कश्चारणे स्मृतः॥१६॥विलेपने चंदनेपि वल्मीके स्यादधार्मिकः॥डिने मूर्खे तः
 शे नूणे वत्तको श्वरपुरे खगे॥पुष्पके चौरिकाने त्ररोगघोरनू के केले॥
 ऊबेरस्य विमाने च कासी संचरसांजनो॥१७॥नोहं को स्य मृदंगारशकया
 शांशे १ शक्ति १ लोकहस्या १

मपि पुष्पके॥पूषकः स्वर्णचूडे स्यान्नाशाठिल्यो नु पूर्णिका॥१८॥दर्शकः स्यात्प्रतीहारे
 दर्शयि च प्रवीणयो॥पन्नपन्नकाधेन विदुः जालकयोर्मतं॥१९॥दीपके चाजमोरे
 स्याद्यवानी बर्हिचूडयो॥संस्पृकः स्यान्मसौरखंडे नादिके तस्य चांतरे॥२०॥रक्त
 को स्यान्बंधुकरक्तवस्त्रानुरागिपुचित्रकः स्यात्तरुव्याघ्रनेदयोर्नेषजांतरे॥२१॥
 वृश्चिकसुहुणे राशौ शूककोटे तथौ पधे॥अंशुकं सूक्ष्मवस्त्रे स्याद्वस्त्रमा
 त्रोत्तरीययो॥२२॥अति के निकटे चुल्पां मेति का साति लोपधे॥तथा ज्ये
 ष्ठजगित्वा च नाघो तपो कीर्त्या तं तिका॥२३॥स्वस्ति को मंगलद्रव्ये च उऊ
 गृहनेदमो॥पिष्टकस्य विकारे च स्वस्ति को रत तादिके॥२४॥कंचुको वारवा
 णे स्यान्निर्मोके कवचे पिचा॥वर्दापके गृहीतांगस्थितवस्त्रे च वोलके॥२५॥
 अषधो कंचुकी चाधवं च करवत्तधूर्तयो॥जंबुके गृहकौ च गसकळे कनि
 ह्यो॥२६॥बंधकः स्यादिनिमये पुंश्वली स्याच्च बंधकी॥गांधिके लेखके प्रा
 खेन १

ॐ सुगंध व्यवहारिणि ॥ १२८ ॥ अधिक पिपली मूले ग्रंथि को गुणु लडु मे ॥ मादे ये च करी
 र च दे व जे च प्र कीर्तिता ॥ १२९ ॥ बाह्मिको देश जे दे श्वे बाह्मिके धीर हि गुनो ॥ अनयो
 र पि वा की को या जिको या ज के ऊ ॥ १३० ॥ वार्षिकं त्राप माणे स्या द्दर्पा काल नवे
 न्य ॥ १३१ ॥ खड्ग को महिषा क्षीर फेन सौ निक योर पि ॥ १३२ ॥ आद्रिके दिन निर्व त्ते नो ज
 ने नि त्प क मणि ॥ १३३ ॥ गंड को मल ने धूलौ कालोक्ति स्नेह पात्र यो ॥ १३४ ॥ गंड क खड्गि
 नि र्वा तः संख्या विद्या प्र ने द यो ॥ १३५ ॥ अव छेदं तरा मे व गंड की सरी द तरो ॥ १३६ ॥ तंड क खज
 ने फे ने समा स प्राप वा चिनि ॥ १३७ ॥ गृह दारौ तरु स्के ध मा यो बहु ल यो र पि ॥ १३८ ॥ कंठ क रु
 द्र शत्रो च कर्म स्थान क दोष यो ॥ १३९ ॥ रो मां च व द्रु मां शे च कं ट को ॥ १४० ॥
 मर के पि च ॥ १४१ ॥ तक्ष क फणि ने दे स्या द्दी कि द्रु म ने द यो ॥ १४२ ॥ पक्ष क पात्र प हे च पक्ष
 दार च पक्ष क ॥ १४३ ॥ शंख के वल ये के बो शिरो रोगे च शंख क ॥ १४४ ॥ नंद को हरि रव
 ऊ च हर्ष के कुल पाल के ॥ १४५ ॥ शीत कंशी त काले च सु स्थि ते रा र्घ सू त्रिणि ॥
 श्री मात्रे १

कारिणि १
 उल्ल क स्तु ति दा घे स्या दा उ रे हि प्र कर्मणि ॥ १४६ ॥ दुष्कु को गंध कु घा स्या दि हा रा घ
 व का श के ॥ १४७ ॥ उड क शोण के त्रे रु द्र क स्व त्प नि च यो ॥ १४८ ॥ पिष्ट को ने रोगे स्या दा न्या दि
 च म से पि च ॥ १४९ ॥ जस्म के रोग ते दे र्पि वि डंग क लघौ त यो ॥ १५० ॥ चुंब क स्या द्द्रु गुरु धू
 त पि स्का त का मु के ॥ १५१ ॥ जंबु क फेर वे नी च प्र ती वी दि का ता व पि ॥ १५२ ॥ दुडु को बा घ ने
 दे स्या दा त्प हे म द म त्त को ॥ १५३ ॥ तुर कः सिल के स्नेह जा तौ श्री वा स के क चि त् ॥ १५४ ॥ का
 मु के वं श धनु षो कर्म स ते उ वा च्य व त् ॥ १५५ ॥ निमी को मो रु के व्या म्नि स ना हे सर्प
 के चुं के ॥ १५६ ॥ इ स्वा ऊ क दु उ व्या च सूर्य वं श न पे पि च ॥ १५७ ॥ क ची ऊ स्तु दुरा ध र्षे ड
 शी ले च विलेश ये ॥ १५८ ॥ ऊं शा ऊ र्म ऊं टे ता नौ परो ता पि नि पा व के ॥ १५९ ॥ द्वा ऊ
 र्द श्वि के व्या घ्रे चित्र के च सरी स पे ॥ १६० ॥ स दा उ र नि ले व जे दा वा ग्मो प्रति सूर्य
 के ॥ १६१ ॥ गोर ऊ प र्म जा तौ उ त्त वे न्न ग्म क व दि नो ॥ १६२ ॥ त्रिश ऊ श ल ते रा ज वि शे
 ष व हं दे श के ॥ १६३ ॥ पत्थ को मं च परि र्प क वृ षी प र्म स्ति का सु च ॥ १६४ ॥ कर को म स्त के

ससेनातिकेफलास्तिनि॥ कलं कौर्केपवोदेचकात्तापेअमर्षपिच॥ ४९॥ ता
 लांककरपीनेस्यातशाकनेदेचरोहिते॥ महालहणसपुण्ड्रुकेकछपेहरे॥
 ५०॥ वषांकः शंकरेसाधौनधातकमहध्वयोः॥ आतंकोरोगसंतापशंकासु
 मुरजधनौ॥ ५१॥ पायं कः शधकीशाकनेदयोपादपहिणि॥ आलकेधिवत्ताके वाजि४
 स्याद्योगोन्मादितकुंरे॥ ५२॥ उदकं एषत्कालीयफलेमदनकं कंटे॥ संपर्कसु रके५
 रतेष्टतौवितर्कसंशयोहयो॥ ५३॥ अंबिकापर्वतीपांडुजनमोरपिमातरि॥ अं
 धिकाकैतवैसिद्धेश्वर्यामपि कीर्त्यते॥ ५४॥ अम्बिकातित्रिडीकाम्बोजारेचा
 गिरिकासुच॥ मृथिकासानुकेपुष्पविशेषपिच॥ ५५॥ राजिकापिचकेरारेराज ॥ ५६॥
 सर्पपरेखयो॥ ५७॥ रसिकायिसालामाकांचीरसनयोरपि॥ ५८॥ रुडिकाधारपि
 आचदृतिकायारणहितौ॥ नमिकारचनायास्यामूर्त्ततरपरिहे॥ ५९॥ कलिग
 काकरिहस्ताग्रेकरमध्यागुलावपि॥ क्रमुकादिठटोशेचकणिकाकणिसु
 यथिका४ ग्र

रुणकसुदने
 विनेस्मरणे
 प्रणेरे

षणो॥ ५५॥ बीजकोशेसरोजस्यकुहिन्यामपिउत्रचित्॥ कणिकाकथ्यतेत्यंत
 सूक्ष्मवस्त्वग्निमंथयोः॥ ५६॥ गणिकायूथिकावेश्यातर्काकोरीकरिणीपुच॥
 गणकोपिचदेवनेकारिकानटयोपिति॥ ५७॥ तौविवरणश्लोकेयातना
 याचकारिका॥ नापितादिकशल्पेचजालिजालिनिर्फले॥ ५८॥ नटानामश्मरवि
 तांगरहिण्योचजालिका॥ गिरिसारेजलौकायामपिस्यादिधवास्त्रियां॥ ५९॥ जा
 लिकपुनरुद्दिष्टोग्रामकूटेचधीवरो॥ नीलिकानीलिनोदुदुरोगसेपा
 लिकाखपि॥ ६०॥ कालिकायोगिनिजिदे॥ काव्यगोयांघनावत्तौ॥ ६१॥ क्रमदे
 यवस्तुमूल्यधूमरिनवमेघयोः॥ पटोलशारवारोमालीमांसीकाकीपुका
 लिका॥ ६२॥ तथावृश्चिकपत्रपिमालिकासरिदंतरे॥ ग्रैवेयेपुष्पमालाया
 पद्मिहमेचमालिका॥ ६३॥ चालिकावालुकावालापिछेलाकणितुषणे॥
 दलिकाकथितालेख्यकूर्चिकावलशययोः॥ ६४॥ चूलिकानाटकेस्यो

ते कर्णमूले चरति नो॥ मघिकाट ए श्रुत्येपि मीन म त्या ननेद पो॥ ६६॥ मत्रि
 कोहं सनेदे चक्रिही का मित्रिका पिचा विलेपन मने मिह्या मात प स्मरुचि स्म
 ता॥ ६७॥ वायु कासिक ता सुस्या दालु के त्वेन वायु के॥ नग्रिका पिउ मा यो
 स्याद थरु पण बंदिनो॥ ६८॥ नम कोधेनु कोध नौ स्त्री करे ए प्रसुत यो॥ रे
 ए का पिहरे एो स्या क्रमद मिस्त्रिया म पि॥ ६९॥ जनु का जिन पत्रा योज नु के
 हि गुला ह यो॥ कचिका सूचिका यो च त्रिका यो च उ झले॥ ७०॥ क पाय
 उट के हीरे विल ता वपि कचिका॥ ना त्रिका धा त्रिका मा त्रो मा त्रिका क
 रणे स्वरो॥ ७१॥ पता का वै जयं त्यो च सो नाये क धजे पिचा॥ स्या तु त्रिका पु
 त्तलिका डहि ज्ञो या व दल के॥ ७२॥ पुत्र कः सर ते धू ते शौ ल व ह प्रनेद यो॥
 उष्ट्रिका म त्तिका ना उ जे रे पि कर तु स्त्रिया॥ ७३॥ बिडिका जल बिबे स्या त
 माण के को मु क स्त्रिया॥ शमी कालिका यो च रा मी को ना उ व ह यो॥ ७४॥

नि१

ना ५
॥ १११॥

३१
 उपिका लूतिका यो च उपिका ने यो मने॥ ऊर्मिका त्वं गुली ये स्या द स्र चंग तरंग यो॥ त
 यो हनु के पि स्या डुर्मिका मधु पधने॥ ७५॥ स्या छिला का पि मदन सारिका शल्य यो॥ शि
 र दे रे पंजर का ध्या च शांती की पशु र ह यो॥ ७६॥ न र्त की ला सिका यो च करे ए वा म पि
 न र्त की॥ न र्त कः केलिके पो ट ग ल चारण यो न टा॥ ७७॥ चुलु की शि श्रु मारे पि उ उ ते दे
 उ ला त रे॥ च उ फी म क ह यो च च उ फी पट्टि को त रे॥ ७८॥ क च अल स कः पिके ते
 के मधू के पध के सेरो॥ न वेद लिपि को त रे को किलेर ति हि डि के॥ ७९॥ स्य तः ऊरु व कः
 शोण म्ना न फि दी प्रनेद यो॥ न वे म रु व कः पुष्प विशेषे द मन दु मे॥ ८०॥ ब ला ह को
 गिरो मे घे दे त्य ना ग विशेष यो॥ न मर को ए ले त रे गिरि के चूर्ण उ त यो॥ ८१॥ व
 २३ गटक सु लं जौ प द की जे क पर्दे के॥ शृंगाटक न वे दारि के ट के उ प्य थे॥ ८२॥ गो कं च ३
 को गो हुर के सु पुटे च ग वां हुरे॥ आ क त्य क स मो जो ह ग्र या बु क लिका मु रो॥ ८३॥
 आ स्ये प को निल बा घे व्या घे नि दा करे पि चा॥ प्र च ला कः श रा घा ते ब र्हि च दे नु ज गो

न
 मो॥८॥ वंरारक सुरे अष्टम नो जे पुरन्यवत॥ नियामक कर्तधा रे पोत वाहे नियंतरी
 ८॥ विनायक सुहेरं बे ता री विवेजिने गुरो॥ निश्चर का पुरी कस्य हये अरिसमोरि
 १॥ ८॥ नहार क सुरे राति कथित श्व तपो धनो॥ दासर क स्यात्करने दासी पुत्र
 च धी वरो॥ ८॥ अंगार के ऊजे विद्या दु सु को शे ऊरंट के॥ अंगार के हु कांडे स्यात्को
 र के किं श्रुक स्य च॥ ८॥ द्वाट क सु ऊं दे स्यात्करि कर्ण शिष्यो॥ स्वयं जाते ति
 ले फेने खात के नाग के सो॥ ८॥ वा त्या यां प्रश्रिका पां चौरिके च महत्तरो॥ न वे
 ५ पा ल्पानि कं पूर्ण पात्रे पट ह त्रयो॥ ८॥ प्र कीर्ण कं ग्रंथ ने दे चा मरे विस्तरये॥ सुरे ७
 त पुष्कल को गंध मगे रूपण की लयो॥ ८॥ को शी त क चो ज्यो स्त्री पटो ली धो ॥ १२॥
 ष के पुत्र॥ को शा त की वाणिज को वाड वाग्नौ वणि ज्य पि॥ ८॥ निर्गंध क स्यात्त पण
 निफलैष परिष्ठे॥ स्याद श्रंत क मुक्षने नालु का छ दने पिचा॥ ८॥ कटि ह्व कस्तु पण सि
 वर्षात्त कार वेधयो॥ कपर्दी को वराटे स्यात्त जट्टे च धूर्जटे॥ ८॥ गो मेद कं पी त म

को प २
 णिका को लोपित्र के पिचा॥ मंडोद के चित्र रागे न वेरा त पण पिचा॥ ८॥ शतानि को
 मुने ने दे व दे चाथ खरा लिक॥ ग्रामणि नं डि नारा च प्र धाने पुत्र यु ज्यते॥ ले
 रवी ल को लेख दीरे पः स्वहस्त विलेख मे ता लेखे पु पर हस्त न त त्राप्ये प्र दशि
 त॥ न वे मंडल के विवेक ए ने दे च दर्पण॥ ८॥ पिष्य लं कं स्तन वं ते म त सी वन सूत्र के॥
 पिंडी त क स्यात्त गरे मदन द्रौ फणि ज के॥ ८॥ त्रिवर्ण कं गो रु र के त्रि फला पा क दु
 त्रिके॥ शाला व कः शृगाले पि सार मे ये बली मु खे॥ ८॥ कौलेय क कुल अष्टे स्या
 दिंद्र मंह का मु के॥ सुप्र ती कं शो न नागे न वे दी शान दि गजे॥ ८॥ जै वार क त शो च
 द्रे ने ष जा पुष्प तोर पिार त द्वि कं स्याद्वि व से सुख स्ताने ए मंगले॥ ८॥ वै ना शिक
 स्यात्त रुणि के पर त॥ त्रोर्ण ना नयो॥ वै देह को वाणिज के श्रु द्वा द्वे रूपा सु ते पिचा॥ ८॥
 चित्तो लु कं जु ध्या त के तथा ना य मलो षधो॥ गो कृ णि कः के करे स्यात्त क सु गो
 गो व्य पे रू पे॥ १२॥ नार्या टि को न वे द्रा यानि र्जिते हरि णा तरे॥ का पोटि को न्य म म
 विदु न २

हेस्त्रेस्यात्कालदेशिनि॥१॥ कौञ्जिको दान्तिके स्यादहरप्रेरिते हणे॥ नालाटिक
प्रतो न विदर्शित्या शेषाणां तरे॥ कार्याहमेव्यां लेते शिलाटिक स्तिनादयो॥ कर्को
टिक स्यान्मालीकाईवेय प्रनेदयो॥३॥ वरुंडु कस्तुमातंगवेधायौवनकंठके॥ संव
त्तने व्याखनिक श्वोरे क्रोडि मूषके॥४॥ वैतालिको बोध कारे खंहितालेपुदीरित॥
दि५ तिक शाकसुखरे वरुणे पय्य सुंदरो॥५॥ मयूरकोप्यपामागे उंठ के उ मयूरके॥ वि
शेषकः स्यात्तिलके विषे पावाह के पिचा॥६॥ विदूषकः स्यादुंबटो परतिदा करे पिचा॥
न वै सैकतिके मारयात्रा मंगल सूत्रयोः॥७॥ तथा सन्यस्तमंदेह जीव तपण के छपि॥
एउमूक स्मृतो धीरैः शठे वा कश्चुति वर्जितो॥८॥ वर्त्तुको न दीने दे का कनी के जना ॥१३॥
वटे॥ काकरू को प्युलू के स्यात्तिस्त्रिजित दंजयोः॥९॥ दिगंबर तीरु के चंदरु
को हिर तसो॥१०॥ मृष्टे स को वदाने पि मृष्टा शि न्यति पि द्विष्टि॥११॥ चकवा उर्मयूरपि
सरटे चरणमुधो॥१२॥ वेरुंडु सुना सीरें पिघनो पनो॥१३॥ कलविंक स्मृतोग्राम
साकरे१

उठ कंठुं
जन ॥ प्राज्ञ वे
खादिष्ट ॥
रकुवरी ५

चटके पि कलिंगके॥ सौगंधिकं च कलारे पभरागे च कर्तुं तो॥१४॥ गंधोपले गंधिके उ
सौगंधिक रति धनि सोमवत्कस्तुधवलखदिरे कछले पिचा॥१५॥ जयानकः स्मृतो व्या
धे सिहिके ये च तीषणे॥ पुंडरीकं सितां नोजे सित छत्रे च नेषजे॥१६॥ कोश कारा त
रे व्याधे पुंडरीको मिदिगाजे॥१७॥ जर्जरी कं बहु छिद्रे जर्जरी को जगर तरो॥ बबरी को म
हाकाले के शविन्या सशाकयोः॥१८॥ तर्जरी के बहि त्रे स्यात्तर्जरी कश्च पारगो॥१९॥ फ
र्परी कश्च पोटः स्यात्कर्परी कं उ माईवे॥ नवे दुल्हिको त्कं गदे लासलिल वीचिषु॥२०॥
शृगालिका शिवायो स्यात्तस्यादपि पलायने॥ चंडालिका किंदराया मुमाया मोषधी
निदि॥२१॥ पंचालिका नवे दस्त्र पुत्रिका गीतने दयोः॥ कनीनिका तारके च स्यात्कनि
छोगुना वषि॥२२॥ नवे दुर्गलिका नृत्ये शून्या के पाठ निश्चितो॥ संतानिका पि हीरादि
सौर मर्कट जालिके॥२३॥ संधरी कापि सुबुडी लोह यंत्र विशेषयोः॥ सघाटिका उ
पुमे स्यात्तु हिनी॥ आग योरपि॥२४॥ जीवतिका पि जीवाख्या शाक वेदा गुड चिषु॥

विद्या ब्रह्मिका निष्कामरु वस्त्र प्रदे दयोः ॥११॥ व केरु का बला कानितु वा ता र्जित शा ख
 योः ॥ स्मृता घ घरिका रुद्र घटिका चैष्ट धान्य योः ॥१२॥ वा घ प्रने दे वा दि त्र दंड यो रा फा गते ॥ क पं ॥
 स्यादा कुरित के हा स न र वा घा त प्रने दयोः ॥१३॥ गो जा करी कमित्या दु र्म ग ले कंड कार के ॥
 स्यात्कि मि दे के कंचि त्रा वि ड गो डं बरे पु चा ॥ सु व सं त र्क इ त्ये वा सं त्या म द नो स वे ॥१४॥ क का
 वे ह कमि कं ति शु द्धां तो द्या त पा ल योः ॥ द्वा र पा ले क वौ सिं गे र ग जी वि न्य पि क चि ता ॥१५॥
 ना ग वा रि क उ द्दि शे रा ज कं ज र ह स्ति योः ॥ मा णि क्य रा जे ग रु डे चि त्र मे ख ल के क चि ता ॥१६॥
 स्या द्री हि रा जिक का म लिका यां वी न धा न्य के ॥ शी त चं प क श शे यं स्या द्दी प्ति रा दी प यो ॥१७॥
 अथो ज ल कर क स्या द्वा लि के र फ ले बु दे ॥ शं खे ज ल त ता यो च क प्य ते ज ल ना य कः ॥१८॥ ॥१४॥
 का का ची रा ज श फ र म न्य योः ॥ क ट र वा द कः ॥ र वा द के का च क ल शे ब लि पु रे च जं बु के ॥१९॥
 स्या च्छे लि मालि का कं गी ने दे र व घा त वि धु तो ॥ स्या न्न व फ लि का न न्ये न व जा त र ज स्त्रि
 योः ॥२०॥ स्या कृत प र्वि का इ वा व च यो रु प का रि का ॥ पि ष्ट ने दे ग हे रा जं उ प क र्त्ता म

चि न्न

पी ष्य ते ॥२१॥ स्या ध्य व र्ण रि का लो क या त्रा स मा र्ज नी गु दे ॥ स्या धे म षु ष्पि का
 यु थ्या चं प के दे म षु ष्य कः ॥२२॥ क ष्य ट ॥ लू ता म र्क ट क पु त्रा न व मा ल्या ल
 वं ग मे ॥ सिं दूर ति ल को ना गे सिं दूर ति ले का स्त्रि यां ॥२३॥ व र्ण वि लो ट कः ॥
 के ष्ठा या ह रि णि कुं ति ले ॥ मा ड ल पु त्र को धू त फ ले स्या त्ता म का त्म जे ॥२४॥ ग्रा
 म म रु रि का श्रं ग्या ग्रा म यु दे च की त्प ते स्या न्न द न र्शि ला का पि सा र्थी का मो
 द यो ष धौ ॥२५॥ इ ति को त व र्ग प्र थ म ॥ र वे के ॥ र व मि द्रि ये सु खे स्व र्ग श्रू त्य वि हो
 वि हा य सि ॥ पु रे सं वे द ते हे त्रे कु ण हे ल फ ले क चि ता ॥२६॥ र व धि ॥ न र व कर रु हे सु
 डे गं ध द्र व्ये न र व न र वी ॥ सु र वं ती सर णे व क्रे प्रा रं नो पा य मो र पि ॥ सु र वं श म
 शि ना के च सु र वा पु र्यां प्र चे त सः ॥२७॥ ले र वा ले र व्य सु रे ले र वा लि पि रा जि क यो
 र्म ता ॥ नृ र व स प न्न नो ते स्या सा म्न ष ड प्र ण वे ष पि ॥२८॥ शं खो ति ध्यं ते रे क बु ल
 ला व स्ति न र वी पु चा ॥ शि र वा शि फा यो चू ड यां ज्वा ला या म ग्न मा त्र के ॥२९॥ लो ग त

३७

विश्वरूप
विशेषेच
२

पादपांशोतिकेपिचा॥ प्रेरवापर्यटनेन त्वेजवेदश्चगता वपि॥ ४२॥ १ वीखागतिविशेषेच२
 कांचशाखायांचूडायांचशिरवडिनः॥ सरवामित्रेसहायेचशाखापक्षांतरेनुजे॥ ४३॥
 शाखावेदविनागेचैश्वर्यसिंहाचनर्त्तने॥ मुखस्यामंगलाचारेशिरागजेनयो
 रपि॥ ४४॥ रेखास्यादत्यंकेकप्रत्यानोगोलेखपौराणिकिशिरवशिखरेविंघात्रिंशु ॥खत्रि॥ ३
 लेराहसांतरे॥ ४५॥ मुमुखस्तार्क्ष्यतनयेकैलितेरेचंपंडिते॥ दुर्मुखेनागराजेपि
 मुखरेवातराश्वयो॥ ४६॥ गोमुखकटीलागरेवाघनाडेनुपते॥ प्रमुखप्रथमेष्टे
 वृविशिरवस्तोमरेशरे॥ रथ्याखनित्रोविशिरवातालिकाग्रामपिक्वचित्ता॥ ४७॥ विंघात्रिंशु
 शाखस्तर्ककेस्केदेविशाखर्हेकहृत्के॥ मयूरवस्त्रिद्वकस्वालेवैशाखोराधमय ॥खत्रि॥ ४
 यो॥ खचा॥ अग्निमुखोद्विजेदेवेतत्रातेचित्रकेकचित्ता॥ पंचनखोगजेकूर्मेशिली ॥४८॥
 मुखोतिबाणयो॥ ४९॥ नवेद्याघनेखकुंदगंधद्वयविशेषयो॥ महाशखोनरा
 स्त्रिस्थान्निधिसंख्याप्रजेदयो॥ ५०॥ इत्येखामतासोमलताशशि कलासुच॥ श
 शिलेखाकलात्रागेवागुशवत्ततेदयो॥ ५१॥ अग्निशिरवालागलिकाकुंजमेगि

शिरवमतं॥ बद्धशिरवोच्चटायांस्याद्वालेबद्धशिरवोमतः॥ ५२॥ खचा॥ स्यान्मनिन
 मुखप्रेतेगोलांगूलेनलेखले॥ अथशीतमयूखोपिशशोकघनसारयो॥ ५३॥ स
 र्वतोमुखमारव्यातमेतरिहेचपापसि॥ विधिहेत्ररुद्रेषुकथितः॥ सर्वतोमुख
 पथाइतिखातवर्गागोस्वर्गेवषत्रेश्मोक्तेचंद्रमसिस्मृतः॥ ५४॥ अर्जुनीनेत्रदिवा
 रात्तूग्वारिषुगोर्मतागदि॥ अगशैलेदुमेनातौगवत्पवताशने॥ ५५॥ खगसूर्यग्रहे नय
 देवेमार्गरोचविहंगमे॥ नगमैश्वर्यमाहात्म्यज्ञानवैराग्ययोनिषु॥ ५६॥ यशोवीर्य
 प्रयत्नेछाश्रीधर्मरविमुक्तिषु॥ युगहस्तचतुष्केपिरथसीरांगयोयुगः॥ ५७॥ यु
 गंनतादोयुगलेवर्द्धिनामौषधेपिचा॥ पशौकुंरगेचकरिनरुत्रजेदयो॥ ५८॥ यां
 चायांमृगयायांचमृगीनुवनितानरे॥ ५९॥ अक्रैप्रपानेचजमदुनोपिनाकि
 नि॥ ६०॥ नागोरूपाईकेप्रोक्तेनागधेयैकदेशयोः॥ नागकुसीसकेरंगेस्त्री
 बंधकरणंतरे॥ ६१॥ नागःपन्नगमानं गक्रुगचास्त्रिभुतोयदे॥ नागकेसरकु

शो ५ यो ३

त्रागनागदंतकमुस्तके ॥५॥ देहनिजवने देहश्रेष्ठे स्यात्तरेस्त्रिन ॥ रागोत्तरको
 आश्रयेज्जेशादौ जोडिनादिषु ॥६॥ गांधारादौ नृपे रागस्यागोवर्जनदानयो ॥ यो
 गसुखेधनेचाहंशरीरफणमति ॥६॥ पातनेन्यवहारेचनिवेशेपण्योषिता ॥ योगी
 पूर्वार्थसंप्राप्तौ संगतिज्ञानपुक्तिषु ॥६॥ वापुंस्तेयं प्रयोगेचविष्कंभादिषुनेषजे ॥
 विश्रब्धघातिनिद्रव्योपायसन्नहनेष्वपि ॥६॥ वेगोजवेप्रवाहेचमहाकालफलेपि
 चापूगस्तुक्रमुकेवृंदेचंगानादहयो ॥६॥ आंगात्रांतिकोपायप्रतीकैष्वप्र
 धानके ॥६॥ तैकतपेराजेदेचजघायांचखनित्रके ॥६॥ उंगपुत्रागनगयो ॥६॥
 बुधे स्यात्ततेन्यवत ॥ वज्रैरात्रिषु योसुगीवंगसीसकरंगयो ॥६॥ रस
 जःकार्पासिवात्तकिवेशेनेदेषुनापित ॥ लिंगसंगेचसिद्धेयंगोहीतांगनेदयो ॥६॥
 गिर्धर्तकलायास्यादिगितेचप्रसाधने ॥ नंगस्तरंगस्येदेजयविपर्ययो ॥ नंगाशणा
 रस्यसस्येपि नंगाधूम्याटसिद्धयो ॥६॥ मधुव्रतेपित्तगश्चकेशराजगुडत्वयो ॥

स्त्रि ३ नेदे २

॥१६॥

कामलेपिच
 योगस्यादौ
 गःकुष्ठोषधे
 गदे ५

रंगोरणास्वतोरोगनृत्येरंगत्रपुण्यपि ॥७॥ लिंगचिह्नेउमानेपिसारव्योक्तप्रहतावपि ॥
 शिवमूर्तिविशेषेपिमेहनेचप्रयुक्त्यतो ॥१॥ श्रंगप्रनुत्वेशिखरेचिह्नेक्रिडांयुपत्रके ॥
 विषाणोत्कर्षयोश्चाप्यश्रंगस्यात्कूर्चशीर्षके ॥१॥ श्रंगीविषाणामृषनेस्वर्णमीनवि
 शेषयो ॥ गंगासुगंगासन्नतेनीमिशक्तिधरेपिचा ॥१॥ पिंगपिशंगेपिंगीउग्रम्यापि
 सुवालके ॥ समठेनालिकायांउपिंगागोरोचनोमनामयो ॥१॥ खड्गोउकश्रगासिपु
 नेदेषुगंडके ॥ दुर्गस्यादुर्गमेदुर्गगौरालिकयोरपि ॥१॥ स्वर्गस्तुनिश्चयाध्यामोहो
 स्माहात्मसिद्धिषु ॥ मार्गोमगमदेमासप्रनेदेत्वेपणाधने ॥१॥ शार्ङ्गिकार्मुकमात्रेपि
 विहोरमिशरासने ॥ वज्रुणागेमतोस्तेचवज्रुनापितमन्यवत ॥ फलुप्रोक्तमलघांचनि
 सासारेफलुवाच्यवत ॥ श्रंगीवराभ्रातकयोषर्कद्यामपिविश्रता ॥१॥ गंगीमुनिविशे
 षेस्यात्तदेषकिंचुलकेपिचा ॥ गजि ॥ पन्नगमुद्राकाशेस्यापन्नगोपिनुजंगमो ॥ जेवंग
 वातरेनेकेसारथोचोसदीधिते ॥ ब्रह्मगोमदेसर्वविहंगश्चाश्रुगेरवगे ॥ सर्वगंसलि

लेख्या तसर्वगः शंकरविनो ॥ ८० ॥ आनोगो वरुण छत्रे पूर्णता यन्न योरपि ॥ आयोगो व्याप
 तौ गंध माव्यो पहार रोधयो ॥ ८१ ॥ आयोगो विधुरे कूटे विश्वेषे कटितो यमे ॥ आयुगो मा
 रुते बाणेषु द्वे गं क्रमु की फले ॥ ८२ ॥ उदे गोप्यु द्वा दुल को दे ज नो ज मने पुच ॥ सं नो गं सु
 रते नो गं सं नो गो जि नै न शा सने ॥ ८३ ॥ परागः पुष्परज सिधू ली स्तानी ययोरपि ॥ गिरि प्र
 जेदे विख्या ता बुपरागे पि चंदने ॥ ८४ ॥ प्रयागः स्ती र्थ जेदे स्या त् परे शत मखा श्रये ॥ प्र
 योगः काणो प्रोक्त प्रयुक्तौ च नि दर्शने ॥ ८५ ॥ वातिगः कथितो नैद्यो धा उ र्वादि निवातिगः ॥
 तद्रा कस्तु जला धार विशेषे यत्र कूटे ॥ ८६ ॥ पुनागः पुरुष श्रेष्ठे पांडु नागे सितो मले ॥ ८७ ॥
 जाती फले च पुना गो निसर्गः शील सर्गयो ॥ ८८ ॥ विसर्गः स्था ग व दाने विसर्गो मल निमि ॥ ८९ ॥
 विसर्गनाये यन प्रने दे पि वि ता व सो ॥ ९० ॥ उ स गे वि र्जने त्यागे सामान्य न्याय
 दानयोः ॥ त्रिव गो धर्म कामार्थे त्रि फला यां क दु त्रिके ॥ ९१ ॥ वृद्धि स्थान ह्ये सत्त्व
 रजस्तम सिचे ष्यते ॥ तात गुः सु द्र ता ते स्या ज्ञ न यि दृ दित पि च ॥ ९२ ॥ अन गो
 ॥ ११ ॥

मदने नंग माकाश मनसोः स्मृतं ॥ मृदंगः पट दे घोषे मृदंगः सिद्ध सर्प योः ॥
 ॥ ९३ ॥ पतंगः शयने शालि प्र जेदे विद्मगे रवौ ॥ पतंगं पार दे का पित रंग स्त
 वरं दुके ॥ ९४ ॥ शो फे तरंग मप्या दु निष्पिंगः संग नृणा योः ॥ विडंगं ह मि घेर्या
 तं विडंगो नाग रे न्य वत् ॥ ९५ ॥ कलिंगः पूति कर जै धूम्या टी नी वृ दंत रे ॥ क
 लिंगं कौट ज फले क लिंगा यो पिति स्मृता ॥ ९६ ॥ आपांगं संग दी ने स्या नैत्रा
 च तै तिल के पि ॥ वरांगं यो नि मातंग मस्त के पु गु ड त्व चि ॥ ९७ ॥ पत्रो गं प म के तृ र्थ
 पत्रो गं रक्त चंदने ॥ रथांगं श्रु क बा के पिर धांगे चक्र मिष्यते ॥ ९८ ॥ रक्तांगं वि
 मे नौ मे विंघा क्त पि ध्वी रयोः ॥ रक्तांगं अपि जी वं त्या मातंग श्रव च गजे ॥ ९९ ॥
 लिगो नू मिक का रो दं तां ल नु जंग योः ॥ कालिं गी राज क र्क द्या धा रंग खड्ग ती र्थ योः ॥
 ॥ १०० ॥ हे मांगो ह्मि रो ता र्थे नारं गं पि ष्य ती रसे ॥ नाग रंगे विटे जे तो य मजे पि प्र की र्ति
 तां ॥ सारंगं श्रा त के चं गे ऊ रं गे च म तं गजे ॥ पद्मि ने दे पि सारंगः सारंगः श बले न्य वता

१०॥ प्रियं गुः फलिनी के गुमिष्य लीरानिका सुच॥ नीलं गुः मिनातौ स्यात् न नरा ली सु
 शालयोः ॥ १॥ उरगी चाश्च गंधायां उरगश्चि नैवाजिनो ॥ चक्रांगी कडुरो रिण्यां चक्रां
 गोमानं कसि ॥ १॥ गचि ॥ इह मृगो व के जंतो प्रने दे स्म क स्य च ॥ मध्व नागो नू मात
 गवास्याप नमु ना वपि ॥ १॥ उपरागः पसी चो रे राडु ग्रस्तार्क चंद्रयोः ॥ दुर्लभे ग्रह कक्षो
 लेः पावर्गस्याग मोक्षयोः ॥ ४॥ क्रिया वसान साफल्ये पवर्गः प्रयुज्यते ॥ उपसर्गः स
 तोरोगने दोषव प्रोरपि ॥ ५॥ समयोगस्तु संयोगे समवाये प्रयोजने ॥ संप्रयोगे र
 तेर विद्या दन्वि तौ कौर्मणो पिचा ॥ ६॥ दीर्घा धर्म श्रृंखले पहा रे च नेष्ट व त् ॥ अजि लके
 पंगो यश पथे स्यादा क्रोशे पराजये ॥ ७॥ उन्नते गोपि वैधं ये स्वाते अनृप नाशयोः ॥ कटसं ॥ १२ टी ॥
 गस्तु सस्यानां हस्त छेदे न पात्यये ॥ ८॥ गं पौ ॥ कथा प्रसंगो वातृ ले विष वैद्ये च वाच्य वत् ॥
 नाजो का कोले हि उ के तर हि उ के ॥ ९॥ इति गात वर्गः ॥ घटि ॥ अघं उ व्यसते प्रोक्त म
 उरितं दुःखयोः ॥ अर्घः पूजा विधौ मूल्ये पादु म मूल्यो ॥ १०॥ उद्यो वं यो वेगे दु तर्क्यो

नाडी तरंगः इति पाठः २

प१

वात्त्रियां ३ देप१

पदेशयोः ॥ उद्यः परंपरायां च मेघः स्यान्मुस्तके घने ॥ ११॥ लघुर्मनो रुनिः सारायु
 पुप्रथितो लघुः ॥ १२॥ ललागुरुणि शीघ्रे च स्फका यो संस्मृता लघुः ॥ १३॥ उद्यः स्यात्पवि
 केर स्तपुट के दे ह जानिले ॥ मोघापि पाटला यो स्यान्मोघो निःफल दीनयोः ॥ १४॥ म
 घामघी च नरुत्रे नैष जे च यथा क्रमं ॥ श्लाघा मता प्रशंसा यो परिचर्या निलाषयोः ॥ १५॥
 घत्रि ॥ अनघो निर्मला पाप मनो रेषु च जेष्ट वत् ॥ पलिघः काच कलशे पट प्राकारो
 पुरो ॥ १६॥ परिघो योगने दो स्त्रे मुजरे गल घातयोः ॥ प्रतिघा प्रतिघाते स्यात्तरो च प्र
 तिघो मृतः ॥ १७॥ वाचिघः कांचने प्रोक्तः स्य मंडे मृषिके पिचा ॥ महार्घस्तु महामूल्ये ४५
 तथा च बं कप हिरि ॥ १८॥ निराघो म्रीष्म काले स्यादुल्लेखे दाबु नोर पि ॥ उद्घाघो पि
 चौदृष्टो दहनी रोग योर पि ॥ १९॥ सर्वाघो गुरु वेगार्थ सर्व सन्न हानार्थयोः ॥ २०॥
 घात वर्गः ॥ अघो न्या र्थे समाहारे समवाये समुच्चये ॥ पक्षे पक्षे पुनरर्थे मपाश
 र्थमनुक्ते ॥ २१॥ अयार्थे वाक्ये स्तारे प्रसंगे पाद पूरणे ॥ सप्तापने नाल्य शेषे च

॥ चैकं ॥ २

अमोघः सफल मोघा विडंगा
नययोः स्मृता ३

शशपरिपयते ॥ २१ ॥ चक्षि ॥ कचः केरो गुरो पुत्रे बंधे मुधु वणे कच ॥ कचा करिण्यो का च सु
 मणौ सिके मंदं तरो ॥ २२ ॥ नेत्रो गोचनी च सुचा मरे पामरे स्मृतः ॥ मोचरो नो
 जने प्रोक्तो मोचा शास्त्रमतिरंजयो ॥ २३ ॥ पिचुस्तुले च कचै च उष्टरो गे सुरांतरो ॥ मे
 रवस्यास्य जेदे च पिचुकापि प्रकीर्त्तिता ॥ २४ ॥ कचो विकचने मध्ये च बोधमश्रुणि
 कैतवे ॥ कौवः खगनगदीपप्रजे देषु प्रपुन्यते ॥ २५ ॥ चचो नडिदिनिमणि च चो
 न ॥ नृणामृषे च चो चो गुले नो घां गोडी चति पयते ॥ २६ ॥ शुक्तिः शुद्धे नृपहस्ते रोनाडी चेपि
 शृंगाराषाठयो सिते ॥ ग्रीष्मे कुतवहे पि स्यादुपधा शुद्ध कचिणि ॥ २७ ॥ रुचिर्मयूदे
 शोभाया मनिघंगा निनाषयो ॥ बीचिस्वत्येतरंगे स्यादवकाशे सुरवेपि च ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥
 श्रुची कराद्यभि नये नारीणां करणांतरो ॥ सूची च सीवनद्वये शचींद्राण्यो श
 तावरो ॥ ३० ॥ कांची स्यात्मेखला दामिगुं जाया नीवदंतरो ॥ कचा स्यादुग्रगंधा
 यां सारिकायां शुक्ले वचः ॥ ३१ ॥ अचपिना प्रतिमयोश्च ॥ चस्त्रिस्तकचिंतयो ॥

चर्चिकायां चरु कशो नाकिरो क्का सुकथ्यते ॥ ३२ ॥ त्वक्कर्मवत्कयोश्चार्कन्यकनी चेनि
 म्नाका स्वर्ययो ॥ वाग्वचने सरस्वत्यां नापागी नरिती यथा ॥ ३३ ॥ चत्रि ॥ कचवोगर्दनी
 डे स्यात्सग्राहे पटहेपि च ॥ विकचः रूपरो केतुग्रहे वस्फुटिते न्यवत ॥ ३४ ॥ कचः क
 रपत्रेपि गंधिलारव्यदुमेपि च ॥ संकोचमपिका श्मीरि संकोचो मीनबंधयो ॥ ३५ ॥
 नाराचो लोहवाले स्यात्नाराचो जलहस्तिनि ॥ नाराच्ये षणिका यांच सम्यक संगत
 हृद्ययो ॥ ३६ ॥ प्रधंच संचये प्रोक्तो विस्तारे च प्रतारो ॥ मरीचिः रूपरो दीप्तावधि
 जेदे च दृश्यते ॥ ३७ ॥ मारीचोरु सो जेदे कंकोले या कदिजे ॥ मारीची देवता जेदे न मुचिः
 स्मर देत्ययो ॥ ३८ ॥ कणीचिः पुष्पितलता गुंजयो ॥ शकटेपि च ॥ अवीचिर्नरकां
 म्यैर्विपची केलिवीणयो ॥ ३९ ॥ प्रागुदक्प्रत्यग्गीत्येते दिदेशकालतो व्यो प्राच्यो
 दीच्यप्रतीच्या नो वाचकं स्यादव व्ययो ॥ ४० ॥ चचा ॥ मलिम्लुचो निले चौरजलस
 चिर्जलौकसे ॥ शृंगार्दे शि श्रुमारे च कंकोत्रो दिग्बेपि च ॥ ४१ ॥ चपा ॥ देत नारी

चरयेष कथितोरतिवृत्ते ॥ उक्तेरतिनारी च सीतारो वरयोषिता ॥ ४७ ॥ इति
 चानवर्गः ॥ छद्दि ॥ अलं स्फटिकनक्षत्रकविमालेश्वरमययं ॥ अग्निमुखेयक
 षः स्यादन्ते तु न कद्रुमे ॥ ४८ ॥ नौकां जे परिधानस्य पश्चादं च लपध्ववे ॥ कक्षा
 उचारिकायां च वाराद्यां च निगद्यते ॥ ४९ ॥ स्याद्बुद्धः स्ववके स्तं बेहारने दकाया
 लयोः ॥ पुत्रः पश्चात्प्रदेशे स्यात्तंगूले पृष्ठमिष्यते ॥ ५० ॥ स्नेहपापरते जातिने दे स्या
 दपनाषण ॥ पिठउशात्मनी वेष्टे मष्टे चाश्च प्रदानयो ॥ ५१ ॥ पंक्तौ पूगठय कोश
 मोचा विजयिलेषु च ॥ पिठपुठे महाकठः समुद्रे प्रचेतसि ॥ ५२ ॥ इति छानवर्गः ॥ य
 थ ॥ ५३ ॥ जराकाश सरस्वत्या पिशाच्यां न वने पिचा ॥ जदि ॥ कजः के शे विरंचे च कं
 पीयूषपद्मयोः ॥ ५४ ॥ अजो हरौ हरे कामे विधौ छागे रघोः सुते ॥ ब्रजो जाघाध वंदे पु
 निजमात्मीयनित्ययोः ॥ ५५ ॥ धनश्चिद्रेपता कायो धनः शौडिक शोफयोः ॥ खड्गो गे
 स्वजं रक्ते स्वजः प्रस्वेद पुत्रयोः ॥ ५६ ॥ द्विजो विप्रे उजे देते मागारेणु कयोर्दिजा ॥ बीजरेत

॥ ३० ॥

सिसत्वे च हेता वं ऊरकारणे ॥ ५७ ॥ आधाने पिच सक्तं स्या संनदे संनते पिचा ॥ वाजंष्टे
 पियज्ञाने वाजो निःस्वनमरुयो ॥ ५८ ॥ वाजं जले मुनौ वाजो व्याजः शाव्या देशयोः ॥ ५९
 जः पारणे च बाहौ च कुजः स्यान्नरकारयो ॥ ६० ॥ अजोधचं तरे चंद्रे निचुलेशं खप
 दयोः ॥ अकस्यादथ कुकोपित्युके स्यात्पादपां तरे ॥ ६१ ॥ युक्कु कर्मरं गे स्यात्पुष्प
 प्रोक्तः कुशश्चि ॥ अधोमुखे च कुके च वाच्यवराजिरिष्यते ॥ ६२ ॥ स्मरे समाव नौ
 पुद्गराजिः स्यात्संक्तिरेजास्युर्त्तं धानेषु जाजस्यादार्द्रतं दुर्लौ ॥ ६३ ॥ उसीरे लाजमुद्दिष्टं प्रजा
 सतानलोकयोः ॥ गुं नापि पटहे प्रोक्ता का कचिं च्यांकलधजो ॥ ६४ ॥ गुं नाखनौ सुरा
 हे स्याद्गोडागारराधयो ॥ गुं न कुं जो नि कुं ने पिह नौ देते च दंति नो ॥ ६५ ॥ संज प्रजा
 पतोरुद्रे लंजः स्यात्पटकठयो ॥ कुं जी वले महो साहे खजा मंथप्रसूहयो ॥ ६६ ॥
 पिनातूले हरिद्रा पापिंस्तु व्याकुलेऽयवता ॥ पिनावधे वले पिंजरकुर्वेणां गुणोस
 तः ॥ ६७ ॥ खर्जू कक्षां च कीटे च खर्जूरी पादपे पिचा ॥ मर्जु स्यात्तरज के श्रुदोः सर्जु

निजिविद्वति॥६॥ ॥जत्रि॥करजस्तुकरंजेस्यानखेव्याघ्रनखेपिचा॥कुवजोवृत्तने
 देस्यादगस्त्यद्रोणयोरपि॥६॥सहजस्तुनिसर्गस्मात्सहोचेपुनरन्यवत्॥नीरजंके
 पस३ मलेकुष्टेजलजंशंखयो॥६॥बलजंगोपुरहेत्रेसस्यसंगरयोरपि॥बलजावरयो
 षायां वसुमत्यामपिस्मृता॥६॥कारुजशिल्पिनांचित्रेकलनेनागकेसरे॥स्वप
 जाततिलेफेनवल्मीकेगौरिकेपिचा॥६॥बाहुजहत्रियेकीरेस्वपंजाततिलेपिचा॥
 वनजोमुतकेपयेवनजंवनजोगे॥७॥वनजामुद्रपण्यांचवशिष्याणि॥मृज
 विनि॥कलिकरणनेदेचवशिष्यायामपीष्यते॥७॥सामजस्तुगजेप्रोक्तसामोठेपु
 नरन्यवत्॥नृमिजोनरकैंगारेसीतायामपि॥७॥नृमिजा॥७॥गिरिजंवात्रकेव्या ॥२१॥
 तंशिलाजडसुगंधयो॥नोहेपिगिरिजागौरीमारुनश्रोदीरिता॥७॥कंबोजोहसि
 जेदेपिशंखदशविशेषयो॥अगजरुधिनंगेकेशपुत्रमदेगज॥७॥कोबोजसु
 गेसोमवत्केपुत्रागपादयो॥कोबोमाघपण्यांचहिगुपआमपिकेचित्॥७॥

उजहकलासेस्यातगेमीनेनुजंगमे॥कस्तूर्यामंडजाप्रोक्तापरंजस्तैलपत्रके॥७॥फे
 नेचकवालेचपुरंजःकुरिकाफले॥हिमजापिशदीगौरीमैनाकेहिमजःस्मृत॥७॥
 जव॥जगन्यजो॥अनुजेसूदेनारदाजःस्मृतोसुनौ॥द्रोणचवनकण्यास्यांजा
 रदाजीठकथ्यते॥७॥वृषधजोमहादेवेहेरंबेपुण्यकर्मणी॥नरदाजोगुरोपुत्रेव्या
 ध्रायस्यविहंगमे॥७॥कश्मीरजाख्यातिविषाऊष्टुंऊंमपौफरे॥हीराधिजेव
 सामुद्रलवणेमौक्तिकेकचित्॥७॥हीराधिजाश्रियां प्रोक्ताचंद्रेहाराधि
 जोनवेत॥दिनराचशशधरेसुपर्णेनेतजोगिति॥७॥धर्मसजोयमेबुद्ध
 मराजोपुधिर॥रक्तराजःकुबेरपिसावजौमेधारके॥नेगराजसुमधु
 मार्कवेविहगांतरे॥महराजोरवोचंद्रेयहिनुकेकिताहीयो॥यहराद
 वकसखेमध्वानारंगवत्वयो॥७॥जप॥मनिनेषनमगसिहरितक्योव
 लंबने॥रुषत्रधजशशेसोशकचाहंदंतरे॥॥इति॥तवर्गः॥७॥हि॥न

ब्राह्मणादीनां ववर्धने ॥४०॥ चतुःपथे च राजा विशासनांतरपीडयो ॥ प
 क्षीतत्वाट नृषा पक्षीनां क्षाप्रसारने ॥ १॥ ऊं चरोदने रावे कष्टं हन
 तं ह्ययोः ॥ इष्टमाशंसितं पूज्यतमे प्रियतमे न्यवत ॥ ३॥ इष्टं संस्कारयोगे
 च कुरु कर्मणि ॥ रिष्टं देमां श्रुता नावत्तं पाशेषु प्रवक्ष्यसे ॥ स्निष्टं मय
 क्तं वाचि स्यान्निष्टं म्लाने न्यवमता ॥ दिष्टं देवे च काले स्यादिष्टः सष्टं तु नि
 र्मिते ॥ युक्तं निश्चितं योः प्राज्यदष्टो दष्टितं वमता ॥ रोमां चिते प्रहसि
 ते जातहर्षे च विस्मिते ॥ व्युष्टं दिने प्रभाते च फले पपुषिते पित्रा ॥ त्व
 ष्टासि त्विनि देवा देस्तथा वर्द्ध किं सूर्ययो ॥ इष्टिः स्यादन्तिनास्येपि सम
 ह श्लोक पागयो ॥ विष्टिः कर्म करे न दे प्रेषणे चेतने पित्रा ॥ दिष्टिः परिमा
 णमुदोर्बुष्टिः परिमो वीदर्शनाक्षिणु ॥ रिष्टिः स्वर्द्धे समदो च त्रिष्टिः स्या
 त्कर्षणे बुधे ॥ स्रष्टिः स्वभावे निमार्णे पुष्टिर्विद्धो च पोषणे ॥ पष्टिर्ह

रतताशस्त्रनेदयोधज्ञदंडके॥भार्ग्याचमधुयथांचमुष्टिवर्द्धकरे
फलेव्युष्टिरुक्ताप्रबुधौचनियमादिफलेपिच॥नृष्टिःस्याद्भुजने
शून्यवाटिकायांचभाषिता॥गृष्टिरेप्रसूताभ्यांवराल्लोतपो
रपि॥पृष्टिःस्याद्घर्षणेविष्णु-क्रांतास्पदाकिरिधपि॥जटालंमकचं
मूलेल्लरुमांसिकयोर्जटी॥सराजटाकेसरयोःफटाचफणहस्तयोः॥
घोटास्याद्धरेपूगेधटीषडेचवाससः॥परीक्षार्थंउलायांचघटःसूरि
निष्ठते॥१३॥पटीपेटविशेषेस्याद्वायुलौजजिकादुमे॥स्याकोटिरश्रौ
चापाग्रेसख्यानेदप्रकर्षयो॥१४॥स्याउटिःसंशषेलेशेसूक्ष्मेलाकाल
मानयोः॥त्रोटिःस्यात्कट्फलेचत्वांखगमीनविशेषयोः॥१५॥खाटिः
किणेशवरथैखाटिरेकग्रहेस्मृता॥नटीहृदविलासिन्यांनर्तकाशा
राकेनटः॥१६॥टत्रि॥अवटस्याश्विगेकपेऊहकजीवीनि॥विकटः॥

सुंदरप्रोक्तो विशालविकरालयो ॥१॥ करदोगजगंडेः स्यात्कुसुमे निचय
 वने ॥ एकादशश्राद्धे विडुरे पिचवापसे ॥१॥ करदो वाद्यनेपि नि
 र्दो निर्दये स्मृतः ॥ परापरादसंयुक्ते निर्दो निः प्रयोजने ॥१॥ चिपिट
 रवाद्यनेपि पिचिटे विसृते न्यवत ॥ जकुटो मलयेरव्या तो वाक्ता के ऊ
 सुमेश्रुति ॥१॥ निष्कटस्तु गृहोद्याने केदारक कपाटयोः ॥ उर्मटक
 ठपे सुप्येषु कटस्तीव्रमत्तयोः ॥१॥ चर्पटः स्फारविपुले चपेटे चपी
 पिचा ॥ पर्पटः पिष्टवित्तौ पर्पटो नेष जातरे ॥१॥ पिचिटे नेत्रो गेपि
 पिचिटे सीसके चपौ ॥ अंगटं शिक्ने दे चधौ तां जन्मा मपि स्मृतं ॥१॥ ॥१॥
 कटः करहटे स्यात्कसंस्कारपौरपि ॥ तपीटमुदरे नीरे कार्पटो ज
 उकार्पिणो ॥१॥ उकुटस्ताम्रचूडे स्यात्कुंजनेपि कणोपि च ॥ विषाद
 श्रुजोऽपुत्रे तालमध्यचकुटो ॥ १॥ रसोनस्ये प्रनेरे स्यात्कुंजवादेन

वर्ज्ययोः ॥ विराटः चौकणविलावर्गदोनगतिगति ॥ कर्कटः करणो स्त्री
 णं राशिने दे कुलीरयोः ॥ शल्मलीफलवालुको धूतदीनारपौरपि ॥
 वस्त्रोद्योगायने चित्रकरे स्त्रीततजीवने ॥ नावदो नावके साधुनि
 वंशे कार्मुके पिचा ॥ शोलाटो दे वले सिरे श्रुक्का चकिरातयोः ॥
 शोराटः कथिता गथा प्रनेरे मगलुब्धके ॥ वैशालवटिके पि स्यात्वा रा
 टश्चातकाश्चयोः ॥ मोरटं उजवे दे रुमूलां ह्यटं प्रसूतयोः ॥ सप्त
 त्रात्यरे हीरे मूर्त्तिका पात्रमोदरावे कटः स्यादे कटिकेतया सं
 जातमौवनो ॥ वैरयो मिश्रिते नीचे वैरलवदरी फलोत्रिकटसिंधु
 लवणे चित्रकटश्च सुवेलके ॥ नाकटः कण्ठे मीने ने दे शोला
 तरे पिचा ॥ अरिष्टफेनिले निबलुने काकवकयोः ॥ अरिष्टसूति
 कागारे वतके चिद्रुश्रुने श्रुना ॥ संसरसगते विद्यातस श्रु

वमनादिना॥ अवटुः कथिता वाट कपुगर्तेषु सरिति॥ परीष्टिः परिच
 र्पायां प्रा का म्येपि गवेषणे॥ वरदाहं स योषायां धोऽस्यां वरदावणि॥
 ४॥ त्रिपुटा मल्लिकायां च सूक्ष्मे लात्रि वतोरपि॥ सातीन केच ही
 रचत्रिपुटः समुदाहृतः॥ ५॥ चर्वटी ब्रीहनेरे स्याद च्वटी पुण्ययोषि
 ति॥ पर्वटी नून फले पूगादेः स्वरुपा रये॥ ५॥ मर्कटी वानरी श्रुक शि
 म्पो स्यात्कर्करांतरे॥ मर्कटस्तु सनाने स्यात् कापो स्त्री करेपि च॥
 ५॥ ऊरुदादरुपुत्रां च ऊरुदोष्टि कोतरे॥ चिरीटी उ सुवासि
 न्या स्याद्वितीयः स्त्रियां॥ ५॥ टच॥ श्रुतिकटः प्रा चलो हे प्राप
 श्चि च नु जंगमो॥ उच्चिगटो मीननेरे तथा कोपन पूरुषे॥ ५॥ ऊ
 टनटस्तु शोभा का वती मुस्त केपि वा॥ स्यात्खड्ग रीतट फल कासि

॥२५॥

धाराव्रजतधारिणो॥ ५॥ ऊंडकीटस्तु ना वा कवच नानि ह पूरुषे॥ जारजब्राह्म
 णी पुन दासिका मु कयोरपि॥ ५॥ नारटी को स्म कीरे स्यात्खट्वा शो विह्व
 रि॥ कार्यपुट स्यात्पण्ये न तानर्थ करेणु पु च॥ ५॥ कामकटस्तु वेण्यायां त्रि
 यविन्न मयोरपि॥ चक्र वाटः क्रियारो हे पर्यते च शिखा तरो॥ ५॥ चर्कटाटः क
 टाहे स्यात्तरुणादित्यरो चिषि॥ स्त्रीणां पयोधरो संगे कांत द नसेपि च॥ ५॥
 करहाटो कुकंदे स्यात्पुष्प वृक्ष प्रजे दयो॥ परपुष्टः परच ते परपुष्टा पणस्त्रि
 यां॥ ६॥ प्रतिहृष्टं मतं गुह्ये द्विरावृत्या च कर्षिते॥ प्रतिशिष्टः प्रेषिते स्यात्प्र
 च्याख्या ते च वाच्यवत्॥ ६॥ शिपिविष्टस्त पखल तौ शिवे दुश्मनौ स्य
 ते॥ चतुःषष्टीः बद्ध चेपि चतुःषष्टि कला स्वपि॥ ६॥ स्यात्गाट मुष्टिः ह्य
 णे ह्यपाणादिषु चेष्यते॥ गंधकुपीरायां च बुध्या द्या पतनेपि च॥ ६॥ वला
 कोटिर्मान्ने दाबुंदे स्यान्नूपुरेपि च॥ श्री॥ टपो॥ ५॥ अथ स्यादश नोकि

होनिश्वासाधरचुबयो॥८४॥ इति दानवर्गः॥८५॥ कः स्वरेरुतांदस्यादत्त
 धेरवादिनो॥ मुनावपिहो वारिपण्यास्यासनेपिचा॥१॥ शोमध्यपु
 पुरुषेशो धुस्तरधूनयो॥ शोलसेचमुखेचकुंठोकर्मण्यर्चयो॥१॥ पाण
 स्यात्यगेनोविहकर्मपापपिपय्यते॥ कंगोलेसत्रिधानेधनौमदनपादो॥३॥
 बः स्यादहतोदोहखर्वेकतायुधेपिचा॥ दश्चरममात्रेस्यात् देहस्याव
 यवांतरे॥४॥ कोष्टंमूलेचापिमीपकृत्तरतगहस्यचा॥ ऊष्टेरोगेसुगधेच
 गोष्टोस्नानकेमतं॥५॥ ज्येष्ठं श्रेष्ठेपिचदेचज्येष्ठोमासांतरेपिचा॥ गेहो
 ह्योर्जेषोवैश्रवणेवरे॥६॥ कोष्टादारुहरिहरिद्रापोकालमानप्रकर्षयो॥
 स्यादिशिस्नानमात्रेणकाष्टमाख्यातमिधने॥१॥ निष्ठानिष्ठानिमाशांतया
 ज्ञानिर्वहणेषुचा॥ षष्ठिषष्टाचपुरण्यांकात्यामपीष्टते॥१॥ त्रि॥ कमठः
 ठपेनाडेनदेचकमठमतं॥ कर्कशोपांजो जटः कठिनेन्यवत॥१॥ नर्म

॥१६॥

शुबुकेसिगेविकुंठः तल्लशक्रयो॥ श्रीकंठः खंडपरशौ श्रीकंठः ऊरुजोगदो॥१॥
 वष्टिष्टः स्यात्तदुवजरेविशित्तिरवेपि॥ वरिष्टं परिचेतामेसाधिष्टोनिष्ट
 र्पयो॥१॥ अंबष्टोदेशनेदेपिविप्रावेश्यासुनोपिचा॥ वरिष्टं परिचेता
 अचष्टाचासुतोस्यास्याप्युपिकपोरपि॥१॥ कनिष्ठोविस्तृतकार
 नृपकक्षांतरेपिचा॥ ऊर्ध्वरादधरेचापिप्रतिष्ठास्नानमात्रके॥१॥ गो
 रचेपागनिष्ठतिचउरहरपद्यो॥ मऊष्टोव्रीहितेदेस्यात् मऊष्टोमोर
 रेमवत॥१॥ दतराटः स्याज्जंबीरेकपीठकमरजके॥ नागार
 गेपिचांगेण्यांस्मतादंतशषबुधैः॥१॥ सूत्रकेणेदिजेप्रोक्तः खजरीटकयो
 वयो॥ हारिकंठपरचते हाराचितगलेपिचा॥ कालकंठस्तदात्युहेक
 लविंकेचखजके॥ शिनामोगेहरेपीनसारकेनीलकंठवत॥१॥ कल
 कंठः कलधानेहसैपारावरेपिचा॥ पूतिकाष्टंउसरलदेवदारुमहीरुहो॥१॥

कालपृष्ठनवोचोणचापेकोदंडमात्रके॥कालपृष्ठोयुसारंगविशेषकक
 पक्षिणि॥११॥इतिगंतवर्ग॥उद्दिश॥पुडस्याडोलकेहस्ति सत्रोहकुविका
 रपो॥गुडासुहीगुडकपोर्गडोमीनांत राधयो॥१॥जडोमुखीहमग्रस्तो
 श्रूकशिब्योमडीमता॥गुडपृष्ठगुण्डेऊकेषउपेयावरेनिदि॥१॥व्याडो
 हिस्त्रपशौसर्पताउस्ताउनवोषयो॥मुष्टिमेयनरणादौचताडीताली
 रलदुमो॥१॥नीउंस्तानेऊलापेचसकारःपूर्वकोत्तिके॥क्रौडःश्रूव
 रपातेधोक्रौडकायपवहसि॥१॥चोडोदेशविशेषस्यातचोडप्रो
 वरणंतर॥हैउःकर्णधमेधानेगरलेऊटिलेपिचा॥१॥लोहिताक
 फलेहैवउघोषपुषेसुरासदे॥याधानांसिंहनादेउहैडास्यादेश
 शत्यके॥१॥अंडखगादिकोशेस्यातमुष्टेवीयेपिचकचित्ता॥स्यामं
 उःशकलेचैकुविकारमणिदोषयो॥१॥गडःकपोलेपिटकोपागनेव

॥११॥

चगंडके॥गंडःप्रवीरेचेहैस्यादश्चनृषणबुहुदे॥१॥चंडोदेत्यांतरती
 वेचंडोदासेयमस्यचा॥चंडाधनहरीशंखपुष्पोत्यगेतिकोपने॥१॥
 चंडीकात्यायनीहिंसाकोपनस्त्रीषुसंमता॥खंडचसादिसंघातेष
 डंस्याडोपतावपि॥१॥उडैदेवजलघानेपिठरेकयमंडलौ॥ऊडीऊडस
 तोराजासुतिपनीसुतेपिचा॥१॥दंडोयाममाननेदेतंगुडेहमसत्ययो॥
 व्युहानेदेप्रकांडेश्वकोणमंथानयोरपि॥१॥अग्निमानेगदेडेश्व
 डंशोपारपाश्वके॥गोडःपामरजाचबदनाचौचवाच्यवत॥१॥पि
 उंडेबलेषोगहोगेजीवनासो॥पिंडोदेहेजपापुष्पेनिवासिहकेपिचा॥१॥
 पिंडीस्यात्तगवेलावृक्जरीनेदयोरपि॥पंडःखंडेधियांपेडीपाड
 ऊतिवतौसिते॥१॥मडमस्तनिशाकेचमंडःस्यासारपिसयो॥
 एरडेनुषणोचार्यमंडाधाआमुदीरिता॥१॥मुडोदेयांतराहोमु

य४॥

सुडितयोरपि॥ शौडोमनेपिविख्याते शौडपिष्यतिसेव्ययो॥ ११॥ कांडना
 लेनरुस्कंधे बाणे वसरतीरयो॥ अस्मिन्नेरहिते संवेकोडवर्गे पृदाइतः॥ १२॥
 नांडनृषणमात्रेपि नांडमूलवलिधने॥ नदीपत्रे उग्राणां नाषणे
 भाजनेपि च॥ १३॥ उडावाचिगेवे दौराविला च दुयोषिति॥ कीडाकेनि
 प्रसारे स्यान्खेला वलानयोरपि॥ १४॥ चूडाशिखाया वलनौ चूडा
 बाहुविषेष्टे॥ पीडातपाशिसमालापमदे सरले दुषु॥ १५॥ नाडिना
 ले शिरागडे दुर्वयो स्याद्गुणतरे॥ नाडीषरुणकाले स्यात्त्रयार्थोक्तः॥ १६॥
 कस्य च॥ १७॥ रंडा मुषिके पण्ये च रंडा विधवयोरपि॥ चंडापियां शुभ्या
 पांस्यान् दंडो हस्तदि वर्जिते॥ १८॥ मुडा लहस्तिना मदिरा करिहये॥ १९॥
 नलिन्या वरयोषायां शुडसुमदनिर्नरे॥ २०॥ उत्रि॥ गारुडस्यान्मरकते
 विषरशास्त्रे गुभरुडा॥ डाविडस्याज्जनपदे वेधमुख्यकसंख्ययो॥

प्रचंडे डवहे चेतकरवीरे प्रतापिनि॥ पिचंडे मुदरे विद्यातपशोरवयवेपि च॥ नरंडो व
 रिशो सन्नवदवस्तुनिनेलके॥ वरंडो प्यंतरावे दौसंदो हमुखराखयो॥ प्रत्यंडो
 गंधकीटे पितथा गंधमृगेपि च॥ मार्तंडस्तपने क्रोडेशिखंडो बहूचूडयो॥ प्रको
 ङो विटपेशस्त्रे मूलस्कांधांतरे तरो॥ कोदंडो नूलतायां स्यात्तदेशने देवका
 मुके॥ २१॥ सरंडसरदेधूर्ते सरंतो मूषणांतरे॥ मारंडो डेजमानां मार्गो गोमयमं
 डले॥ २२॥ करंडो मधुकोशासि कारंडवलदलायके॥ कृष्णंडो गणने देपि च
 लोककारुकेपि च॥ २३॥ कृष्णंडो त्वौ गोर्धने रुडो निमेषदर्शने॥ मेरुडा
 देवता ने देय हृणी निदिचेप्यते॥ २४॥ बाहसे कपात्रे स्यान्मलेदकणयोरपि॥
 गणस्त्रवाजे वारुंडो दारपिद्यां मुहीतो॥ २५॥ तितिडी चूरुहे कालदासदे त्यां
 तरे पुनः॥ श्रीतितिडस्तितिडी स्यात्त्रिचा व हांतयोर॥ २६॥ वरंडा सारिका
 वती खड्गधेधुषुक्यते॥ वितंडा वाहुने दे स्यात्कधी शकेशिलादये॥ २७॥

वितंडाकखीर्याचनिर्गुडीसिंडवारके॥नालसेफसिकास्यायांचकरहाडेपिकुत्रचि
 ता॥३६॥उच॥४॥नवेद्यातखुडोवात्यावांमयोवांनशोणिते॥पिठलस्फुटिकायांचदेव
 ताउसुधोषके॥३॥सैहिकेयेप्रदेवापिदेवताडोडताशन॥चक्रवाजोदिनेदेस्यातच
 क्रवाउंउमंडले॥३॥जलरुडोजलवर्तेपयोरणेनुजंगमे॥अयोगंडमिश्रुकेविक
 लांगेतितीरुके॥३॥इतिठोव॥६॥दि॥६॥स्त्रुलेतशेगतेप्रगाठेपिठोमत॥
 वांठेप्रतितायांमूठसंदितबालयो॥गुठेरहसिगुहेचसंवेतेपुनरन्यवत॥बूठसंरतिवि
 न्यस्तपुलेषुचनेयवत॥शेठेवर्षधरेकीवेगोपतौबंधपुरुषे॥बोठस्याझारिकेसनेसोठ
 मर्षणशतयो॥३॥राठसुषुशोतायां६६दंष्ट्राविलाषयो॥माठिपत्रादिनगेस्यामाठिदे ॥३॥
 न्यप्रकाशने॥४॥॥६॥त्रि॥आषाठेवृतिनांदेमासेमलयपर्वते॥वारूठसंबलेपिस्या
 त्वस्त्रांचलकपाटयो॥पंजरेजठरेचायप्ररूठेजठरेस्त्रुत॥बडमूलेपिरूठस्त्रुसंजति
 अउरेन्यवत॥समूठप्रजितेनुमेसद्योजातेनुपसुते॥उडूठकलैठेस्त्रुलेस्यादूषोठेनिक

दोठयो॥विगूठगर्हितेगुप्तेप्रमीठेमूत्रिकेवेने॥सरूठेऊरितप्रौठेप्रगाठे
 हूठनवयो॥अधूठततसापन्यानापमिधूठरश्मेश॥॥६॥च॥अध्या
 रुठसमारूठेअधिकेचापिनेयवत॥इतिठोत॥॥६॥दि॥कणेतिसू
 सेधान्यांशेनह्याजीरकयो॥करणा॥वक्रस्यमहिकायांचरणकोण
 कणादिषु॥पणोवराटमानेस्यामूल्येकर्षणप्रदे॥क्रव्यशाकाटिका
 दतेव्यवहारेनूतोधने॥गणःसमूठेप्रमथेसख्यासैन्यप्रनेदयो॥आरां
 धीतेचनासापांकाणःकोकैकहूषे॥४॥बाणःस्यात्केवलेकोडेकोडावम
 वदैत्ययो॥बाणकिंछांसनोधीरेस्तणोमाषचउष्टये॥५॥कर्षणेकरपत्रे
 चशाणीप्रावरणांतरे॥त्राणांउत्रायमाणायोरहोरहितेपिच॥६॥प्राणो
 हमारूतेबालेकाव्यजीवेनिलेचने॥वाच्यवरपूरितेप्राणांप्राणास्त्रुसुषु
 कीर्तिता॥३॥दूणांचापेचंस्त्रुदेवदूणेवश्रिकनंगयो॥दूणीकठपिका

योच जल द्रोणामुदादा ता॥८॥ द्रोणः क्षपीप तो तल का के स्यादाठ के
 वा॥ आट चाप क ऊ के न द्रोणी स्यात्री॥ वरं वरे॥ १॥ द्रोणी का सं बुवा हि मा
 गवां घा नु जि स्थि तो॥ गोणः शुक्र फले त क म हि का हि कर उ पो॥ १०॥ को
 ण वाद्य प्र ने रे स्या त को रो मो ल गु रे क जे॥ वीणा दि वा द नो पा पे पे क
 देश ग र स्य च॥ ११॥ शीणः रे प ना क र न पो शी रा को क न र ठे वो॥ लो
 हि ते च नृ शा नो च नृ णा स्त्री ग न डिन पो॥ १२॥ ती कू सामुद्र स व रो वि
 ष लो हि दि शु क्र के॥ ती कू हारे व ति मा त्म त्या गि नी वा च्य व नृ वे त
 कराः पृ था ज्ये सु ते श्र व णा लो क ता व पि॥ १३॥ ऊ र्ख श्रे डे च व रा ॥ १४॥
 को च न प त पो॥ १५॥ व र्ख दि जा तो शु क्ता दौ स्तु तो रु प म शो क त्व मे॥
 विले प ने च न धा तो व र्ख स्या ग म ने रे पो॥ १६॥ ग तो याने स हा पे च म
 त त्र्या रू हे पु च॥ प ध्व वे पु त रू णा च प र्ख श पृ प्र की र्ति तः॥ १७॥ प र्ख

गेलु नटे गाय ने च दि ह्यु द ति रि उ र्द मे॥ वृ ह्नि॥ १८॥
 पा व कि शु के प त्रे शा र्ख त वि॥ शी र्ख यो॥ पू र्ख श्रे स म ग्रे च च पू रि वा पि वा
 च्य व त॥ १९॥ व र्ख हो द हार ने दे च र्ख दि वा स पु क्ति पु॥ की र्ख ठ ने परि
 हि चि हि सि ते की र्ख मि थ्य तो॥ २०॥ जी र्ख प के पु रा रो च दी र्ख दारि त नी त रा॥
 र चा य जि ह्यु स्य उ ह्ना स्या दान पे ग्री षे द हे त ल सु के श के॥ २१॥ व्या से र्ख ने पि के का के स
 क ले के व सु रे ल म रि च लो ह यो॥ त ल्हा उ द्रौ प दी नी ला क णा द्रा हा व के थ्य तो॥ २२॥ वा
 च्य व ने च के त ल्हा जि ह्यु श क्रे ध न ज मे॥ जि त्वा सु या दे वे मे पे व लिः पा षं उ चं
 उ मो॥ २३॥ पालिः पा श्या त्वा ना गे पा द मू ले न्य द स्त्रियो॥ से ना पृ षे च ऊ ल्यो च रं
 ह्ना लि सा पि या स यो॥ २४॥ ऊ र्ख मे र्खा दि मि स्या द त रा व त के नृ वो॥ म
 णि र्मी ले हे म ना म र द चा न ग ल स्त ने॥ २५॥ अ णि रा णि व द हा य की ले
 स्या द हि सी म यो॥ ऊ णि र्क न क र हे पि ऊ णिः स्या त्व कुरे न्य व त॥ २६॥
 ऊ णि र्क मु क ने दे पि उ षे दे व शु ता व पि॥ श्रे णि पं तौ रो पा ने श्रो णिः

स्यात्कारसंरुतौ ॥२६॥ वाणी स्याद्बृति नारत्यो वाणी मूल्येव लारुके ॥ वेणी व
 वस्य वेधे स्यात्तनदी नो चलके पिचो ॥२७॥ देवता उचतुणी वनीत्यां वरुणानि
 षांके ॥ २८॥ गुप्ता हपयो फाणि गुड कह्यो ॥ २९॥ शाणयवाग्वाप के उरा
 ए सुणा यसि स्मृता ॥ प्रतिमायां ग्रहस्तनो वीणा वधकी विद्यतो ॥ ३०॥ वे
 णु चूपां तरे वंशे स्थाणुः काले स्त्रिरे हरे ॥ रेणुः पर्यटके धूम्यो मल्येणु श्रीहि सुकी
 यो ॥ ३१॥ ए नि ॥ अरुणो व्यक्तरागे स्या संभारागे कसारथो ॥ निःशेषे कपिले
 ऊर्ध्वे सूर्ये द्रव्ये च वाच्यवत् ॥ ३२॥ अरुणातिविषाण्या मं जिष्टा त्रिवृत्ता सुचो ॥ ३३॥
 करुणस्तरसेव देत्तपायां करुणामता ॥ ३४॥ धरुणः स तेनी रे स्वर्लोके पर
 मेष्ठिनि ॥ तरुणः स्यान्नवेयु निकु कुपुष्ये रूबू कपो ॥ ३५॥ वरुणस्तरुजे दे सुप्र
 ताची पतिसूर्ययो ॥ वरुणस्तिक्तशा के पिशा कारे वरणं नता ॥ ३६॥ वरणो
 बहुचादौ स्या मूलैर्गोत्रे पदे पिचो ॥ वरणं नरे द्रौ च ररणं रा सने ध्वजौ ॥ ३७॥

लवणोर सर हो विने देषु लवणा विषि ॥ करुणं साध महेत्र काय सु कर्म सु ॥ ३८॥
 गीतांगहार संवेश क्रिया ने दे द्विषे पुचा ॥ चाल दौ च करणः स्मृतः ॥ श्रुद्रा विशो
 सुते ॥ ३९॥ नरणं जीरणा जाजी हि गु सौ व चले पुचा ॥ धरणं मानने दे पिधार
 ए धरणी नुवि ॥ ४०॥ रमणं स्यात्पटोल स्य मूलैः पिर मणः प्रियो ॥ शरणं वध
 रक्षि त्रौ शरणं र हणो गे ॥ ४१॥ कणं कर्त्तने दे च वारि पणं च कणं ॥ पंच
 ए स्यात्त्रिपमने बंधने र हणो पिचा ॥ ४२॥ प्रघणं स्तात्र कुं ने स्मा दलि दे लो ह मुद्र
 रण दुघणो मुद्ररे पि स्या दुहि च पर व श्रुधो ॥ ४३॥ प्रवणं श्रु क्र मरि नो र्या मायमि
 च च वुष्यवो ॥ प्रगुणो पि हणो पि स्या दी रि श्रुत्य ऊषरे ॥ ४४॥ ग्रहणं वृ पल द्वा स्मा
 दादरे ग्रहणं करे ॥ ग्रहोपराग स्वी कार बी दी पुग्र हणं मता ॥ ४५॥ रक्षणं दश
 नदष्टौ प्रो हणं से वने वधे ॥ लक्षणं नामि चिह्ने च सो मित्रे नापिल क्षण ॥ ४६॥
 लक्षणं वाङ्मने नामि रा मना तरिल क्षण ॥ लक्षणं षधि सार स्यो स श्री

केत्यनिधेयवत् ॥ ४५ ॥ दक्षिणः सत्त्वो मपरं हं हनुवर्त्तिषु ॥ वा श्रवदक्षिणाघाचीय
 रुदानप्रतिष्ठयो ॥ ४६ ॥ दक्षिणं काचनेविचेद्रविणं च पराक्रमे ॥ मसुलोशिवशिव
 कर्कशे स्तिष्ठे रुमायामसुलाजने वेत् ॥ ४७ ॥ ऊषणमरिचेख्याते कलायामृषणा
 जवेत् ॥ धिषणास्त्रिदशाचार्ये धिषणाधिपि समता ॥ धषणं स्यात्परिज्वरते स
 दुधिर्षिणि ॥ नीषणोदारुणो घटिनीषणसर्वकीरसे ॥ ४८ ॥ हरणं यौतके
 येनुनेपि हरणं डौ ॥ हरिणं रेतसि स्त्रो वराटे च हरिण्यवेत् ॥ ४९ ॥ हरिण
 स्यात्कुरंगेपि हरिणः पांडुरेन्यवेत् ॥ हरिणी हरितायां च चारुस्त्री वृत्तनेदयो ॥ ५० ॥
 सुवर्णप्रतिमायां च हषणाक्षि फलांतरे ॥ हर्षके योगनेदे च श्राद्धनेदेपि च क्वचि
 त् ॥ ५१ ॥ श्रवणोपतिनेदेपि श्रवणं निद्राजीविनि ॥ सुदशनासुषुलताया
 सीषु श्रमणां विदुः ॥ ५२ ॥ कल्याणमरुयस्वर्त्त कल्याणमंगलेपि च ॥ तपाणो
 सौक्यपणिनो दुकाया तु कर्त्तरि ॥ ५३ ॥ सिहाणं काचपात्रे स्याद्धो रनासि

॥ ३२ ॥

॥

कयोर्मले ॥ पुराच्यवत् प्राक् पुराणं पचलरुणो ॥ प्रमाणं नित्यमर्मादा सत्यवा ॥
 दिप्रमाच्यु ॥ एकतायामियत्तायाहेतुशेषु स्मृता ॥ ५४ ॥ निर्वाणं वारणादे शो मे
 हेच निर्गमेपि च ॥ निर्माणं निमित्तौ सरि निर्माणं च समजयो ॥ ५५ ॥ निर्वाणम
 स्तागमनिवृत्तौ जगमजने ॥ अचर्गे च कुर्वणो न च कारकयोरपि ॥ ५६ ॥ दौ
 वीणं षष्ठ्यो स्यादुर्वाया श्रवरेपि च ॥ वारणं प्रतिनेदे स्यात्वारणं श्रवणं
 यो ॥ ५७ ॥ कारणं कारणे ह तु वधयोरपि कारणं ॥ कारणं पातनायां कृपणं
 सिते च मो ॥ ५८ ॥ कारणं मंत्रं तत्रादियोजने कर्मकारके ॥ मागणं प्रार्थने च
 मागणं पाचकेशरे ॥ ५९ ॥ मत्कुलो निविषाणो जे निश्मश्रुपुरषेपि च ॥ उद्दि
 नालिकेले च धर्मलो हि द्वेनेदयो ॥ ६० ॥ कोकलो देशनेदेपि शास्त्रनेदेपि को
 कलो ॥ कंकणं शोखरे ह स्ते सूनमडनयोरपि ६१ ॥ पुरणं पुरकेपि षष्ठ्येनेदे पूरणं
 मुच्यते ॥ पठारेन कसूत्रे च शास्त्रौ पूरणी मवा ॥ ६२ ॥ सुणं खरद्वे स्या
 विष्णुसुग्रीववैद्ययो ॥ रोषणं पारदे हे मधुषणो षरणि ॥ रोषणोपि विषाणे उक्तौ

डेदिरदंतयोः पशोः श्रेयोविषाणीतु मेम श्रग्याप्रकीर्तिता ॥ कणुर्मजहसि
 न्योः कर्णिकारेपिचकेचित् ॥ हरेणुस्तु सतीत्येस्या तरेणुः काकेवयोपि
 तो ॥ ६॥ सुवर्णस्वर्णान्तेपिसुवर्णकषवत्तपौ ॥ सुवर्णश्च सुवर्णसिं
 तुत्तल्लागुरुतरांतरोर्ददी ॥ सुपर्णः चूणो स्यागुरुं देह तमावके ॥ सुपर्
 णकमलीन्याच सुपर्णता र्द्यमा तरि ॥ ६॥ श्रीपर्णमग्निमयेके श्री
 पर्णशास्त्रमौहदेउवर्णश्चकवर्णस्याद्वाकुकेरजतेपिच ॥ १० ॥ पक्षो राधौ
 तकोशेपक्षोः शोणकेपिच ॥ संकीर्णनिचितेकमश्रुदेवापिनेद्य
 वत् ॥ ११ ॥ अरण्यवक्रिमयेपिस्तु नो मय्यदासुवर्णि ॥ तरणि सरणेना ॥ १३ ॥
 नौकुमार्यपिताकयोः ॥ १२ ॥ विपणिपण्यवीय्याच जवेदापण्यपण्ययोः ॥
 रणीशोणकेरुके नरणावेतनेनतौ ॥ १३ ॥ प्रवेणीर्वणि कुययोः सरणिः पक्ति
 वर्त्मनो ॥ निश्रेणिरधिरोहिण्यां खर्जरीपारपेपिच ॥ १४ ॥ चमलीनाली
 कायाचज्जामेपीपण्ययोपितो ॥ धारणीनाडकायास्यादुधोक्तमत्रजिद्यपि ॥

चमलीरंडीकायां क्रीडाद्यायामधिशितुः ॥ ग्रामणी जोगिकेपत्यौ प्राधानेना
 पितेपिच ॥ १५ ॥ रद्राणी करणे स्त्रीणां पौलोमीसिंदुवारयोः ॥ एषणी ब्रह्ममा
 गारिणां चतुर्वाजिदि ॥ १६ ॥ क्षेपणी जालनेदे स्यान्नौ कादेउचकय्यवे ॥
 वारुणागंडुवायाप्रतीचीणसुरयोरपि ॥ १७ ॥ सारिणी स्वल्पसरितिप्रसा
 रिण्याचसारणि ॥ सारणस्यादती सारे सविवे रावणस्य च ॥ १८ ॥ काकणीपण
 तुयांशेमानदुडेचकाकीणी ॥ कल्लेकवराद्योः स्यादुमातांशकेपिच ॥ १९ ॥
 ब्राह्मणीपुडिकासुकेदिजपलीषुविश्रुता ॥ विप्रेतुब्राह्मणेवेदेब्राह्मणादि
 नसंहतौ ॥ २० ॥ पक्षिणिपूणिमायास्यात्यक्षिणीकोदिनि ॥ खन्याश्चोवत्त शाखा
 मानाहपुकार्यानिशिपक्षिणी ॥ २१ ॥ रोहिणाकडरोहिण्यां रोहिणीलोहि
 तागतौ ॥ कंठरोगांतजेदेसोमवक्रं च रोहिणी ॥ २२ ॥ एव ॥ आतर्पणं च
 सौपत्येविद्यादालिखनेपिच ॥ अथर्वगोष्यथर्वतब्राह्मणेपिपूरोधसि ॥ २५ ॥

आशेषस्यासौपानेसमारोहेप्ररोहणे॥रत्नरेणुस्तस्मिन्दुरेपलाशकवि
 कोहमे॥८६॥उहेपणचच्यनेनान्यमदनवस्तुनि॥उदरणसमुद्धारवाता
 नामूलनेष्यपि॥८७॥निगणंनोजनेपिगलेनिगणंमत॥निसणस्याना
 रणोपायनिर्पणमुत्तिष्ठु॥८८॥संसेणरणारनपुरनिर्गमिगोपुरे॥घटापये
 चसंस्तारेयसंवाचमृगसौ॥८९॥निसरणस्याउपायेननिस्तारेनिर्ग
 मेपिच॥विदारणरणेनेदेविउवेचविदारण॥९०॥निरूपणस्यादालोकेवि
 चारेचनिदशने॥नारायणोऽच्युतेजीरुगौर्षोनाशमणीविदुः॥९१॥परायण
 मन्त्रीष्टस्यात्तेत्यराश्रयपौरपि॥परायणसमास्तौकास्त्र्यपारेगतावपि॥९२॥
 कार्पाणकाधिकेस्यात्यणषोडशंकेपिच॥कागुणःस्त्वोरागेविषयासौ ॥९३॥
 गपौरपि॥९४॥पाःरीरणस्यात्कमदडेचपरशाटके॥समीरणस्यात्यवने
 पथीकेचफणीचफणीरुके॥९५॥पर्वणीनातुपर्वस्थशिरापाष्टनकंबले॥

पर्णचूर्णरसेपिस्यात्यर्तरीणंतुपर्वणी॥९६॥तंडुरीणःकरीमानेबरेतंडुलोदके॥
 मीनास्त्रीणोर्दुशनेमीनास्त्रीणस्वने॥९७॥प्रचारणनिषेधेस्यात्कास्या
 दानेप्रवारण॥जुडुराणनलेधयैरिरिहाणोहेखरे॥९८॥देवमणिःशिवेऽश्व
 स्यकठावर्त्तेचकोस्तुने॥चूडामणिःशिरस्तेकाकचिंचाफलेपिच॥९९॥प
 रवाणिस्त्वोधर्माध्यकवसरपौरपि॥शरवाणिशरमुखेपापिष्टेशरजीवि
 नि॥१००॥लेबकणःस्त्वतःकोठ्यादपेठगलेपिच॥हस्तिकसारिबुकेस्यात्पला
 शरणनेरणे॥१०१॥चीर्षपर्तस्तुनिबेपिखजूरीनूरुहेपिच॥रागवूर्णस्मरे
 दंतधावनेरतलावुके॥१०२॥तैलपणीमलयजेश्रीवासैसिद्धकेपिच॥पीलुपणी
 चबिवापांमृषपिमोषधिनिदिः॥१०३॥दाहायणीत्युत्सर्पणरोहिण्यानारकासु
 च॥पुष्करिणीसरोजिन्याहस्तिन्याचजलाशये॥१०४॥खरीणीस्यादौमात्यांर
 सालावृत्तनेदयो॥स्त्रीरत्नेमखिमलायांचप्रोक्तासिखरीणावुधै॥१०५॥अ

गारिणी ॥ हसं न्योच नास्वर व्यक्त रिख्यपि ॥ स्याद्वैतरणी नद्यो प्रेतानां पातु मातृ ॥ ४॥
 लपं ॥ अवयवमिच्छा ॥ प्रतिरोधे प्यनादरे ॥ प्रतिदारणमाख्या तं संगमे च वि
 दारणे ॥ अवदारणे च नूतानदिग्देवस्त्रा च लार्चने ॥ रोहर्षणमित्येतद्रोमा
 चेपि विनिर्गतके ॥ परिभाषणमात्रा पतिपमे परिभाषणं ॥ निदेत्यालं न वच
 ने परिभाषणमिच्छते ॥ मत्त वारणमिच्छेति दानं किं न कटदिमे ॥ महाप्रासा
 दविष्णो नावरं डे च पाश्रये ॥ च ॥ वाचरायणा उन्मत्ते निप्रसोजनपुरुषे ॥
 कोटरकरपत्रे चाकूटे च शरसंक्रमे ॥ १॥ मंडुपणोरिबुके सोराके च केपी
 तने ॥ मंडुकपणी मंजीष्टा ब्राह्मी गोजीदिका सुच ॥ १॥ राषट् ॥ दोहद
 दधरुणा गजैवपः संधौ च दृश्यते ॥ पौवनलक्षणाख्या ला वण्ये च पयोध
 रे ॥ १॥ पुष्पसाधारणः श्रुत्वा वसंते परिकीर्त्यते ॥ ॥ इति शाबर्गः ॥
 तदि ॥ ततं वितत वद्यामे विश्वेते वाच्यं न वन्मतां ॥ ततं वीणादिवाद्ये च पव
 स्तु ॥

॥३५॥

माने ततः पुनः ॥ इतंगते स्याद्विजाते रतं सुरतगुह्यमो ॥ ततमुक्तं शिलेतोये
 दाप्ते सात्वतिपूजिते ॥ ततं मूगोपि पर्याप्तं विहितं हि सिते फले ॥ ३॥ चतमा ज्येष्ठदी
 प्ते च सलिपिष्टं मत्तं ॥ मत्तं स्याद्विचित्तं मत्तं मत्तं मत्तं निधेयवत् ॥ ३३॥
 गतं वयातारगपोर्मतं पूजितं समते ॥ मत्तं त्यक्ते विधूते च तं कं पित्तं न सि
 ते ॥ ३४॥ पूतं पवित्रे सलिपे पूतं च बहुलीकृतं ॥ श्रुतं शास्त्रावधूतं पोष्यत
 ऊनप्रसेवयो ॥ ३५॥ न तं स्याद्वाच्यं वन्नमेन तस्मिन् गरपादये ॥ पूतं शीघ्रे विली
 ने च विद्राणे चा निधेयवत् ॥ ३६॥ पुतं हस्तं च बहुलं स्याद्दूतं पुतं पृथक् ॥
 स्थितं मूर्द्धगव्यभावे सप्रतिहेतु निश्चितं ॥ ३७॥ सितं समाप्ते धवले विबध
 स्तानमोशपि ॥ शतं शाते च निशितं तशोरां तं च शर्मणि ॥ ३८॥ हितं धूतं
 गवे पथ्ये सुतः पार्थिवपुत्रयोः ॥ धूतं उरंगमग्नौ समाविष्टे त्रिमात्रिके ॥ ३९॥
 लोतं उगुफितं वस्त्रे तोषूतां तरे मते ॥ सूतं सुसारयौ तत्ति प्रसूते घोरि

तेयिच॥४०॥ कत्रिया त्रवहणी जेपिसूत मारद्वं नैदिनो॥ अतं रूपं बहुलं के
 तोदीपादिनेदयो॥४१॥ अतवराटिका काष्टा पाटला शिखिनिषुवा॥ सप्तशसेविद्य
 मानेसत्या अहितसाधुषु॥४२॥ सतीपतिव्रतागौरयैरितः कर्बुरागतो॥ तातो
 वकंयेन न केजातं जलौघजमनि॥४३॥ पातस्यात्यतनेनातेघातकां उपहारयो॥
 पोतशि शौबहित्रौ चलोतमश्रुणिचौरितो॥४४॥ गीतस्यादशहितेगानेप्रीत
 हुक्षितमर्मलो॥ वीतं त्वसारदस्याद्विवितमं ऊशकर्मणि॥४५॥ नीतयेनम
 युतेवाच्यवत्यरि किर्त्तितं॥ नूतं क्तादौ पिशाचादौ न्यासित्योपमानयो॥४६॥ ये
 तोदेवलके प्राद्वै वत्तयोरनिषेपवत्॥ केतुर्धौतौ पताकायां यसौ तादिलक्षसु॥४७॥
 पा३ सेउमौलौचवरणे कतपसे मुनेर्निदि॥ धात्रस्यादर्शनवित्तनिविषये धिद्विपे
 सुवा॥४८॥ नूवादि रसरत्नादि श्लोभादिव सुधारिषु॥ वत्तैते धात्रशोभाय वि ॥४९॥
 शोभादस्त्रिगैरिके॥४९॥ सेउ स्त्रीकसुमेनासिवसंदि सुवीरयो॥ गाउ पुंस्त्री
 ता१ मा४

किलेचंगेगधर्वो शेषलोपिच॥५०॥ मंत्रस्यादपबाधेचमनुष्येपि प्रजायतौ॥ धूर्त
 ले२ स्यात्वंडलवंशवधुस्तुरयोऽपि॥५१॥ पूर्तं त्रपूरिते कत्रपूरत्खातादिकर्मणि॥ मू
 र्तमूर्त्तिमतिप्रोक्तं मुक्तालेकठिन्यवत्॥५२॥ गर्तः स्त्रिगर्तः शो स्यादवटेचऊ
 ऊदरे॥ आप्तः सत्ये लषे वप्राप्तं विने समंजसे॥५३॥ व्याघ्रखाते समाक्राते पु
 रक्षितगूढयोः॥ लिप्तविषाक्ते नुक्ते च वाच्यवस्याद्विलिपिते॥५४॥ दीप्तनीनासि
 तेदखेवदतिक्लितेपिच॥ असंदिग्धे गते प्रोक्तं मस्तपश्चि मनुधरे॥५५॥ प्रस
 गासिहतेपि स्यात्तलघुपणपिदोदिदा॥ पुस्तं उच्यते कस्तेकेलेयकमविज्ञानयो
 रपि॥५६॥ शस्त्रे मे प्रशस्ते च व्यसं व्याप्ते च संकुले॥ हस्तौ न कत्रने दे स्यात्क
 नकरयोऽपि॥५७॥ कवात्यरकलापार्थे सप्रकोष्ठवतागुलौ॥ विहं स्याते ध
 नेवैलक्ष्णे वित्तज्ञाने विचारितो॥५८॥ तत उ वेष्टिष्ठिने दत्तविश्राणिते विते॥
 वृत्तोतीते वृठः स्यातो वर्तुलेपि सूते वृते॥५९॥ वाच्यवदत्तने वृत्तचरिच

षडसोरपि॥ अतः प्रांतेति केनाशेस्वरूपेति मनोहर॥ ६१॥ वृत्तं प्रसवबंधस्या
 तथैवाधाराकचाग्रयो॥ इतो निकं जेदशने दंतसातुनिकथ्यते॥ ६२॥
 इतीत्यादौ षधी नैदे स्वातं चेतसि गकर॥ अंतप्रासे चंडनावे
 सुद्रजं तो गवेधके॥ ६३॥ अतीयांडप्रियायां च शल्लक्या गुगुले क्रमे॥
 का तो रमनिगरे चारौ का ता उफलिनिस्त्रियो॥ ६४॥ शो तो र
 सशेषे स्यादतिमुक्त कदा तयो॥ उक्ते मे का हर रब्दस्य च
 द्वापिते पि च॥ ६५॥ श्रुतो म्रै यरुषेयु ते व्यक्ते स्फुटमनिषिणा॥
 लिकोरसे सुगंधे च तित्तपयटके स्मृतं॥ ६६॥ तित्ता उक्ते रुरि
 एव रिते का न न श्रुत्ययो॥ रक्तस्या त उ उ मे ता मे प्रा चि नाम वै
 के सजि॥ ६७॥ अनु रगिणि नील्या दिरु चिते लो हिते न्यवत्॥
 यता हस्ति पके सूते व क्षापि त रि पा व के॥ ६८॥ त्रै ता यु गे गिति

॥३१॥

तये नत्ता स्वामिनी धारके॥ शा स्ता च शा सरके पुदे व क्ता वाग्मिनि
 पंडिते॥ ६९॥ मुक्ता उमोक्तिके मुत्त प्रा मुक्तौ व मो चिते॥ कृता श्रू
 द्वा श्वे श्या जे प्रति हारे च सारथौ॥ ७०॥ मुजिष्ठा तनये कृता निघु
 क्ते च प्रजा सजि॥ धाता हिरण्य सूर्ये स्यात्पालके त्वन्निधे षवत्॥ ७१॥
 माता पृथ्वि प्रसू गोषु ब्रह्माण्या धास्तु मातरः॥ लता सो तीष्मती
 स्पृक्षा शाखा वल्ली प्रियं पुषु॥ ७२॥ लता कस्तुरिका या च मा
 धवी हर्वयोरपि॥ लता पिपीलिका या स्या दुर्मना जे गदा
 तरे॥ ७३॥ पीता स्मृ हरिद्रा या पीतं स्यात्पीत गौरयो॥ सीता
 राम कलेत्रे स्या तथा लागल यक्ष्मता॥ ७४॥ ना नौ नद्या च सी
 तस्तु वानिर बहु वा वयो॥ शीत हिम गुरो प्रादु वाच्य वत्
 शीत ले लसे॥ ७५॥ चित्तं च त्रैलिका या चित्तो संहर नि चयो॥

वातावीतिगणे वता वार्ता रुषा धृतं तयो ॥१६॥ वृत्तिमन्त्री रुषो व
वार्ता मारोग्य फलु नो गति मार्गे दशायां च ताने प्रात्रानुयाययो ॥
वृत्तिमन्त्री रुषो वता वार्ता मारोग्य फलु नो ॥ गति मार्गे दशायां
च ताने प्रात्रानुयाययो ॥१७॥ नाडी चरण शरणं च मति धीका
स्मृतिष्वपि ॥ वृत्ति समूहे चिन्त्यायां दिति स्यात् बहुनेदो ॥१८॥
पतिः प्रमो गतो मूले दुति श्रम पुटे तथे ॥ यति निर्कारे मति नि
पाठे दक मेयति ॥१९॥ शिति तले सिते मूर्जे नृति नृराम
ल यो ॥ दिति निवास मेदिन्या स्या न मात्रे पिबे हिति ॥२०॥ धृति ॥२१॥
यो गंतुं धैर्ये धारणा धरतु विषु श्रुतिः श्रोत्रे तथा म्राये वाचायां
श्रोत्र कर्णे ॥२२॥ स्मृति कारिणो र्म मरिताया मपि स्मृतिः ॥ रति
स्मर प्रियारागे च सुरतेरपि ॥२३॥ रुति गंतो जुगुप्सायां स्पृहा

क्ति विन्तागे मेवायां पक्ति गौरि वपा कयोः ॥२४॥ मुक्तिः स्या नो वने मे
दो युक्ति न्ययि च योजने ॥ पंक्ति ईशा नर छंदो दश संख्या वली अपि
॥२५॥ शक्ति वने प्रजावा दौ शक्ति प्रहरणांतरे ॥ शक्ति कपाशं क
लेन रवा धावत गोरपि ॥२६॥ मुक्ता स्फोटे च दुर्गमांशं रचं रचन रवे पुच
॥ तत्रि ॥ अमृतं यज्ञ शेषे स्यात्पा युषे स लिने द्युते ॥२७॥ अया चिते च मोने
वध नंतरि सुपर्वणि ॥ स्मृद मृता पथ्या दूच्या मल की पुच ॥२८॥ अम
तं नपा वस लेप्य जित कमलापतौ ॥ अनि युते चा च्यु तस्त्रि ते स्यादु
उद्यमे ॥२९॥ अदितं याचिते हे पंवात व्याधौ च हि सिते ॥ अरुतं चा पि
ला जो पुह तीया प्रत ना वपि ॥३०॥ अहिसिते यि चा त्पा त स्त दा ले
पवने पि च ॥ आघ्रात सिचिते द्राते व्याख्यात ना पिते निदि ॥३१॥ आ
ध्यात पवन व्याधौ दध शक्ति तयोरपि ॥ आमु त स्ना त के प्या हव

सादरेचिते॥६॥ अचित शक दोमेये पलानामयुतदये॥ छिनेपि सग
 हातेस्मादाहते उ मषार्थके॥७॥ आहते गुणितेपि स्मादाहितं नान केपि
 चा॥ स्यात्पुरातन वस्त्रे च नू न वस्त्रे प नारते॥ ८॥ आतोदिशने देव नृत्य
 स्थाने जने रणे॥ आवर्त्त आवर्त्तने स्माच्चितने चांन। सां न मे॥ ९॥ संव
 त प्रलय प्रोक्तो विनित कतरावपि॥ त्रिगतः स्यात्त न दे विवक्तौ गुणि प ५
 तां तरे॥ १०॥ न वेदुर्बुरिका पां त्रिगता का मु क स्त्रिया॥ विवर्त्त समुदा
 पे स्यादावत्तन न व्ययो॥ ११॥ उत्तमं शुक्रमो सैपि संतमेपि परिश्रव
 उचितं प्रोक्तमन्यस्तेमिने ताते समे ज सो॥ १२॥ स्मादुद्धतं उ वृत्तितेपरि
 क्तोक्तितेपि च॥ उचितं वृद्धि युक्ते च प्रोद्यतौ त्म न्योर पि॥ १३॥ उचितं
 व्युपिते दक्षे सुपितं पंडिते कृते॥ उद्यतः कथ्यते पादस्त्रव लने समु
 पक्रमे॥ १४॥ प वनाभ्यासयोगा प ऊं न कादि त्रयेपि च॥ उद्देगे सु

॥३॥

॥

मंगल योरपि॥ वृत्तिः स्याद्दरणे वाटे सुतिगर्मै न मार्गयोः॥ १५॥ मति
 माने मनिष्य वहेदे तति कर रा हि सुयो॥ १६॥ रतिः प्र वा से रुं वे स्या रति
 वृद्धादिषु सुचौ॥ वीतिगतां च दीप्तौ च धावने ब्रजने शरे॥ गतिः
 ठं रसिगात्रे च नीति सुप्रापणे नये॥ १७॥ रीतिः प्रचारे स्पंदे च लो ह कि
 दासू कुटयोः॥ पीतिः पाने उ रं च नीति साधु सुका म्ययोः॥ १८॥ प्री
 ति योगा त प्रेम्हि स्मरपत्रि प्र मो दयोः॥ नूति मातंग शृंगारे जा तौ मस्म
 निसंपदि॥ १९॥ स्मृतिः सीवन संसत्योरुतिः स्यूतो चरु ह्ये॥ हेतिः स्या
 रायुधे काले हेति स्तरणिते जसि॥ २०॥ वृत्ति विवरणे जी वे कै श क्य
 दिषु वेप्यते॥ तत्तिश्चर्मत्व बोर्ज तत्ति का पां च कीर्ति ता॥ २१॥ प
 तिपदा तौ गमने वीर सैन्य प्र ने दयोः॥ विनित रति विचारे च लान
 संनव योरपि॥ २२॥ वृत्ति नति रधो ता गो स्यान्निरुहांतरेपि च॥ २३॥

सुवस्त्राहामाहुः केचिन्नस्त्रिता ॥ १२॥ निनिःक्रेप्रदेशे च संधिनागावका
 शयोः ॥ प्राप्तिः संवरणप्राप्तो प्राप्तिजाने म हो दये ॥ १३॥ गुप्तिः कारा
 गृहे प्रोक्ता नृगर्त रक्तोपमे ॥ सुप्तिः स्पर्शितायां च स्वापे विश्रुं न वा
 तिनि ॥ १४॥ शांतिः शमेपि कल्याणे कांशो नास्ति नापयो ॥ जातिं छे
 दसि सामान्ये माति व्यागो न न मनौ ॥ १५॥ जातिजाती फले धात्रा
 बुद्धी कं पि न योरपि ॥ जातिः सतो न पितरि व्याप्ति व्यापन लं न यो ॥ १६॥
 साति दाने च साते च प्राप्तिः पूर्तिप्रदेशयोः ॥ वती दी पदशा दीपगात्रा
 नुलेपन पुत्रा ॥ १७॥ वत्तिनिषजनिमालि न यनां जन लखये ॥ अचि ॥ १४॥
 पिशभनुः कोद्यो मूत्तिका टि न्य काम्यो ॥ १८॥ कीर्त्ति प्रसाद पशुसो
 विस्तारे कर मेपि च ॥ जातिर्मिथ्या मतौ ख्याता न मनो चा म वस्तिनौ ॥ १९॥
 नृज नमो न च के च यत्र सरितिव र्त्तनि ॥ तत्किं विनागे से वा पाप

ऊरेपि स्यादुदितं प्रोक्त उक्तते ॥ २०॥ स्यादुद्धितं संजाते समु नद्वृद्ध
 यो ॥ रज तं विशदे दंति दंत यो स्तार ॥ हार यो ॥ २१॥ सुरतं स्यान्निधु
 वने वैदेवत्वे सुरतामता ॥ प्रजा तं वितते सुहृ सं हतं सगते दृष्टे ॥ २२॥
 सितं सुवर्णादि श्वचिते सुरुते ॥ पलितं शैलजे तापे पांडु के शो च क
 दमो ललिते हारने स्या दीप्ति ॥ तलिते पि च ॥ सवलितं छलिते वि
 षे कलेते विदिता मयो ॥ २३॥ हलितं तासुरे रग्धे त्वरितं प्रज वेदुते ॥
 स्मिते च चले जिने हर्मि वं हि म दुग्ध यो ॥ २४॥ सुरितोति हिते च मि
 मूर्धितं सोढ्ये दृष्टे ॥ दुषितं विस्मिते प्रीते प्रणते हृष्टो मणि ॥ २५॥
 गजिता मभते गजर्जितं लदधनौ ॥ वर्द्धितं प्रसूते छिने पूरिते चापि
 वदितो ॥ २६॥ स्थापितं निश्चिते न्यस्ते चेष्टितं गवि चेष्टयो ॥ वेष्टितं
 सके रुहे स्त्रीणां च करणा वं तरे ॥ २७॥ नारितं नासिते प्राप्ते वि

रिते बुद्धि तार्थयो ॥ विहितं कुटिले प्रोक्तं व्याच्यवद्विद्युते सुते ॥ २४ ॥ ग
 थितं युक्तिं तदं सितेषु समीरितं ॥ मथितं निर्जलोदस्त्रित्यलो
 डितं निष्पृष्टं ॥ २५ ॥ प्रार्थितं मात्रितेशस्ते संरुद्धे निहिते पिच ॥
 ज्ञितं करणे स्त्रीणां इहा सुरितयोरपि ॥ २६ ॥ केदितं स्यात्तमाकाने
 हितं रुद्धिते पिच ॥ प्रोक्तं निर्दूते सिते वापितं मुद्धितं मतं ॥ २७ ॥ बीजा
 तते रशितं स्फुटं वर्मितं योरपि ॥ कारितं स्वाविते कारैरनिशस्ते
 चरं सितं ॥ २८ ॥ सूतं च श्रुते पुण्य सुविधाने च वाच्यवत् ॥ नितं न
 विप्रलब्धे स्यात्तं च विप्रतते पिच ॥ २९ ॥ वित्तं तो संसृते पि स्यात्तवी
 नसो रोगिते पिच ॥ ३० ॥ अर्द्धजलो च प्रसृतो जवायां प्रसृतो मत्त ॥ ३१ ॥
 ३१ ॥ सूतं तमंगले सत्ये प्रियवाचि च सूतं ॥ ३२ ॥ प्रसृतं वाच्यव
 त्जाते प्रसृतं कुसुमे पिच ॥ विश्रुतं तात संज्ञे प्रतीते षट्ति

॥ ४१ ॥

धेयवत् ॥ ३३ ॥ निर्मुक्तं स्युक्तं संगे स्यान्मुक्तं कंचुकं जोगिनि ॥ अव्यक्तं शंके
 रविक्ता वयं क्तं मरुदादिके ॥ ३४ ॥ आत्मन्यपि स्यादव्यक्तं मस्युदे त्वनि
 धेयवत् ॥ विविक्तं स्यादसंयत्तं विविक्तं रितं पूतं यो ॥ ३५ ॥ वाच्यव
 द्दर्शितो धीरे विविक्तं रसि स्मृतं ॥ रोहिस्त्रिधरे धीरे रुद्रशक्रशं सनो ॥ ३६ ॥
 रोहितो मीनमृगयो नैदे रोहीतकद्रुमे ॥ रोहितं रुद्धिरे लोहितं कुकुमे
 रक्ते मृगशीर्षे कुचंदने ॥ ३७ ॥ लोहितः स्यान्नदं नौ मेव लं नैदे उवाच्य
 वत् ॥ पुरितं स्यादस्ति पुष्टं पाटितं स्युतं योरपि ॥ ३८ ॥ पीडीतं व्याधितं स्त्रीणां
 करणे वापि मंत्रिते ॥ पिडितं गलितं सांद्रं मंडितं सिद्धं के कवौ ॥ ३९ ॥ हारितं
 पक्षि नैदे स्यान्मुनि नैदे च के तवौ ॥ प्रणीतं संसृते वक्षो विहितं च प्रवेदि
 तं ॥ ४० ॥ निहितं चोपसंयत्तं प्रणीतो नैद्यवन्मत्त ॥ प्रतीतं सादरे ताते प्रख्या
 तः स्यात्तं कुटयो ॥ ४१ ॥ वाच्यवत् स्युत्तं प्रमीतं मोहिते पि मृते पिच ॥ विनि

तमुपनीति स्यादपनीते जिते द्विये ॥४२॥ वणिजे सुवहा श्वेच निरुते चापि धेय
 वत ॥ पृषतो हरिणे विंदौ पृषतश्चाश्वरोहिते ॥४३॥ नवेत् पृषदिवं श्वेते वि
 दुयुक्ते च वाच्यवत् ॥ नरतो नाद्यशमास्त्रे पिदौ श्वो तोशवरे नटे ॥४४॥ रा
 रातीनुजे पि नरतस्तु वाये पि च कचित् ॥ नारतं मेय नैदे स्या जं बुदीयेपी
 नारतं ॥४५॥ नारती उ सरस्वत्यां य कृणी वृत्ती नैदयो ॥ उर्जाते व्यसने श्रो
 क्त मसम्पग जातवस्तु नि ॥४६॥ परेतो नूत नैदे स्यात् परेतो वाच्य वक्तव्ये ॥
 कपोतः परापते पि स्यात् क्त विकार्य विहंगमे ॥४७॥ व्याघ्रातो योग नैदे स्या
 दंतराय प्रहारयोः ॥ संघातः संहनौघाते संहातौ रकांतरे ॥४८॥ रैव तस्तु सु न४
 वणलौ शैल नैदे पि श्रुति नि ॥ स्याकिरातस्तु नूति बेम्ने के चाप्यतनाव
 पि ॥४९॥ मदा किनां किराती स्यात् ऊर्द्धि न्यामपि दृश्यते ॥ आयौ स्फोटश्चाक
 पत्रे स्या फोवः कोविदारको ॥ स्फोतागिरि कर्णो विन माल्यां च वि श्रुता ॥

च१

॥४२॥

उदात्तः स्वर नैदे स्यात् काया लंकार दृश्यो ॥५०॥ उदात्तोदात्त महतो निर्मि चंदे उ
 त्सर्गो ॥ उन्मत्त उन्मादवति धनूरमु च ऊर्द्धयोः ॥५१॥ पवतः शैल देव षोड
 ३ पा प्रतीति निर्जरी नगो ॥ पर्याप्तं उ पये चे स्यात् कृत्तौ राक्ते निवारणे ॥५२॥ जीमू
 तं स्याद्भुति करे राक्ते दोषोष के घने ॥ जीवा उ जि विते न के जीवा उ जी वितौ
 षभिः ॥५३॥ आपस्तस्ते जिते हि से के शिते ऊ पिते हते ॥ निरस्त प्रेशिते ह स्या
 त्रिष्टुते त्वरितो दितो ॥५४॥ संत्यक्ते च प्रतिहते विश्वस्तो मि नूते स्मृतः ॥
 विश्वासो यो वि श्वस्तो विश्वास्ता विधवस्त्रियो ॥५५॥ निवातो हठ संना हे वा
 तांते चाश्रये पि च ॥ अंतंतः शेष विह्वोः स्यादनं तं सुरवर्त्मनि ॥५६॥ अनंतं
 स्यादन विधौ वाच्य वस्तु मुदा उतं ॥ अनंता सारि वायव्या विशाल्या लांगली
 पुच ॥५७॥ अनं ता है मवत्यां च गङ्गा च चिता वपि ॥ शकंतः पक्षि नैदे स्यात्
 सपक्षि विहंगयो ॥५८॥ दृष्टं तः शास्त्र उ नयो सुरा हरणे प्रकीर्त्तिता ॥ त

तां तोयमसिद्धांतदैवाकशलकर्मसु ॥५॥ निशांतः कलितेशांते निशांतो नव
 नोषसोः ॥६॥ तां तोरसरे नावेकास्यवात्ताविषेशयोः ॥६॥ तां तः प्रक्रियायां
 चक्रचिदेकांतवाचकः ॥७॥ उदातो निर्मदागजे समुद्रीर्णववाच्यवत् ॥६॥ अ
 दातो तः पुरेराजोरहः कदातरेपि च ॥ अश्वंतमश्रुते बुद्ध्या मरणेन वधाव
 पि ॥ तत्रेपि कथिते स्वतं मुदंतः साधुवार्त्तयोः ॥ जयंतः शंकरेपि स्याज्जयंतः
 पाकशासने ॥३३॥ जयंती पादपे गौर्या मिद्रपुत्री पता कयोः ॥ गोदंतो हरि
 ता ले स्याद्दं शितोर्मिते ॥३४॥ नासंतः सुंदरा काचे ना सपत्तिणि ॥ महद्गजे
 विशाले च महती वल्ल कीर्तिरि ॥३५॥ मरुदरे समीरे स्यादहं ज्येति
 तपि च ॥ गजगदाख्या स्मृता वाते विष्टपे जंगमेपि च ॥३६॥ जगती तु वने स्म
 यां कुरो नैरे जनेपि च ॥ पिसत्यपि न्यटिषु नै नोपतने क्व विहंगयोः ॥३७॥ ह
 रि कज निवर्णे च नृणा वा वजि विशेषयोः ॥ हरितेपि वडुवायां हरिद्वर्णयोः

॥४३॥

तेन वत् ॥३८॥ विद्य सौदामिनी संघो नि प्रनेत्यत्रिधेयवत् ॥ गमुमु
 वर्णवत्तयोरो हि स्युलता निदोः ॥३९॥ नृ नृ नरे दे शो ले च पतत्यात्र
 कपत्तिणोः ॥ क के क मणि न्ये स्यादकुवत्कु सिते न्यवत् ॥४०॥ अ
 ती कुंद ना स्या च वा म्यां च परिकीर्त्तता ॥ श्रीमान्निलक वृहे स्या मनो
 निकटे न्यवत् ॥४१॥ धीमान् वाच स्यतौ धीरे ना स्वार सूर्ययोः ॥ सर्वता
 सुखसं बोहा सुरन्यां शो नने व्रते ॥४२॥ वाच्यवद्वि रता हुद्रो गे द्वि व
 ते स्फुटे ॥ वनिता जनिता चर्यरा गयो पितियो पिति ॥४३॥ वनितायां चि
 तेपि स्याद्वनितां वितेपि च ॥ जीमाता वल्लने सूर्यावर्त्तेपि वल्लनापतौ ॥४४॥
 विनेता देव केराति विधाता वेधमि स्मरे ॥ विनेता पिटका नै देवि नता ता
 स्य मातरि ॥४५॥ विनेत प्रणते शंभु शिहिते च निधेयवत् ॥ पंचतापं च
 नावे स्या त्वं वता मरणेपि च ॥४६॥ विना तारव्या प्रसूतायां जनिते विन

तेपिच॥वास्तिताकरिणीनार्थीवासितंसुरनीतते॥४॥ज्ञानमात्रेखगारा
 वेवासितं वस्त्रवेष्टिते॥पिशितामांसिकायांस्यादमिषेपिसिमते॥४॥
 नृणांतापिच॥वेस्यानृणांताकामुकेपिच॥दिजातिरुज्जेविप्रेश्रीपतीसा
 तोहरो॥४॥गोपतिःशंकरेशंटेपायिवेपिविकर्त्तने॥सुपतिशिल्प
 नेदेस्यात्सुपतिःकुबुकिन्यपि॥५॥जीनेष्टिर्जाजकेसूतेष्यमतिःका
 लाचद्रयो॥आहूतिस्यादग्निहोत्रेज्वलनाबुजयोनिषु॥५॥अगदि
 स्तिवर्हनेदेस्यादगस्तिऊनसंनवे॥नगस्तिकिरणेसूर्येस्वाहाया
 चविलोक्यते॥५॥संगतिःसंमेलनेसंगतिःप्रणतोद्धनो॥आयुति
 संपनेदेस्यादेष्टेप्रजावागामिकालयो॥५॥आयतिःस्याद्वलेस्नेहेन
 शिवेवासरेपिच॥मदार्थार्थतथापत्तिर्विपत्तिर्थातनापदो॥५॥निय
 तनियमेदेवेपदतिपेक्षिवत्तनो॥सततिःपेक्षिविस्तारगोत्रेषुकविजिस्म

॥४॥

ता॥५॥परतिपराजवेपिस्थातसंततिःपुत्रकन्ययो॥प्रमतिःस्यादतुहा
 नेयतिमान्येपिसंमतिः॥५॥समितिःसंगरेसाम्येसनायामपिसंगरे॥अ
 दितिर्वसुधायांस्यात्पुरुतिःप्रतिपत्तिथो॥५॥उन्नतिस्तार्क्ष्यदारेषुसमया
 युदयेपिच॥प्रसूतिसूनयोत्यतौतथादुहितरिस्मता॥५॥प्रततिर्विस्मयो
 वल्ल्यावहतिःसचिवैगवि॥दुर्मतिनरकेपिस्त्रेविरुतिपिडरोगयो॥५॥नि
 त्तिर्नसनेपदेवदंतिशब्दोयो॥आत्ततिःकथितारूपेसामान्यव
 पुषोरपि॥५॥प्रततिःसहजेयोनावमात्रेपरमात्मनि॥निवृत्तिःसूक्ष्म
 यास्यादस्तंगमनसौख्ययो॥५॥सुनीतिःशोचननयेसुनीतिर्द्वमातरि॥
 प्रवृत्तिःकथितावतौप्रवाहोदंतयोरपि॥५॥विठितिरंगरागेपिहावविठे
 दयोरपि॥संवित्तिःप्रतिपत्तौस्यादविमारेजनस्यच॥५॥प्रणनेदोषेवास
 तिसंगत्तानयो॥पर्याप्तिःस्यात्प्रकाशेपिप्राप्तौचपरिरुणे॥५॥सामाप्ति

श्वावसाने स्यात्समाप्तिश्च समर्थनै॥ वृहती तु द्वितीया कंठकायां चिवा वि
 रा॥ ६॥ सारिधान्यां महात्यां च षोडशो वसनने दयो॥ सा त्वती वती ने दे स्यात्तशि
 शुपालस्य मातरि॥ ६॥ रेवती हवीपन्यां स्यात्तरा ने दे पिमा च षु॥ जामा त्वती
 जति युवति स्यात्सुसरि दंतरे॥ ६॥ कामा चो विशल्या यो विप्रवर्ग्य मीयते॥
 नवति वा ए ने दे स्याद न्य वत्त्व सदर्थयो॥ ७॥ पावती राक्षकी उगा द्वौ दी जीवनी पु
 व॥ श्रवती च द्रवती च सरि दौ षधि ने दयो॥ ७॥ जीवती जीवनी रा म्यो गूड ची च
 दयोरपि॥ ८॥ संत्यं गार धान्यां च मधिका शकिनी निदो॥ ७॥ वासेती मा धवा पृथो
 पाटला यो क्रमे लके॥ वासेतं को किले पि स्याद्वा संता विहिते वटे॥ ७॥ तच॥ नवे दव
 सितं ज्ञाने गतौ रुद्रा वसानयो॥ अवदातः सिते पीते वि श्रुदे प्रवरे पि च॥ ७॥ अवगीते
 उनि वदि मुदु हृष्टे विगर्हिते॥ अंतर्गतं विस्मृते स्यात्त मध्य प्रादौ व कथ्यते॥ ७॥ अ
 गारि ति पलाशी प कली को म दग्धयो॥ अया वतः स्वतंत्रे स्यात्ति हि ते चाप्यपा वत॥ ७॥

॥४५॥

४

प्रतिवर्तित
 रुद्रयोः

अमिनी तो नवेत्य आं संसृता मर्षिणोरपि॥ अत्याहितं महा नी तो जा वाने पे रु कर्म
 लि॥ ७॥ उपाहितो नलो त्या त आरोपित उपाहितः॥ उपाहृतो धूर हत शुपुत यो म
 तः॥ ७॥ उदास्तितः प्रती हारे ध्य हे च प्रणि धौ वरे॥ अमिजा तं स्तु ता न्याये ऊली ने
 प्राप्त रूपयोः॥ ७॥ पारिजातः सुरप तो मंदारे पारि नदके॥ नवेत्य रिग तो ताने प्रिया
 ते वष्टि ते पि च॥ ७॥ रया तं प्रणिहिते ल ह्वे विन्य से च स माहिते॥ नवेत्य ति ह तो दिष्टे
 च समाहिते॥ ७॥ उल्लेखितं समुत्कीर्णं वा वै चै च त नू ल तो॥ विद्या उप चिते
 उभे समुदे च समाहिते॥ ७॥ समुद्र त समुद्रो र्ण य विनी ते समुद्र तः॥ अहरिते पि
 काला पे र टिते र न॥ ७॥ निःस्वने॥ ७॥ नवेत्य व्रितं ला तार के च प्र सवे त ते॥ उज्ज्वलि
 तं उ वेश्यां उ तु ह्वे च नि धेय त॥ ७॥ उद्गृही त मुप न्य से व द्वा हित योरपि॥
 निष्पुषितं निष्पुषि स्यात्त व र्जिते च ल षू ल ता॥ ७॥ ऐराव तो ज मा त ग ग नार
 ग ल लु चा हि ऐरा व तं म ह द्वा स्य रु दु दी र्घ श रा सने॥ ७॥ ऐरा व स्या त्ति तित

डिदेदेचलत्ततो॥ कलधौतंरुथहेमोः कलधौतं कलधनौ॥ ८॥ दीवा नीतं ऊं
 नाते स्यादुबुके उमुदार्के॥ पाशुपतो बकपुष्पपशुवत्पथिदेवतो॥ ८॥ निकासितो
 निर्गमितेथहितेधितेपिच॥ अतीपातोमहोत्पातेयोगजेदापमापहे॥ ८॥ स
 मायातोवधेयुदेपरिबातोस्त्रपातये॥ विनिपातोचपातेस्यादैवादिअसनेपि
 च॥ ८॥ समाहितप्रतिज्ञानेसमाधिसुपतमनि॥ वाच्यवत्त्रितेसिद्धेसमा
 धानेसमाहितः॥ ८॥ नद्यावर्तस्मृतोश्मप्रजेदेतकरदुमे॥ गीतप्रबधनेदेव
 स्वस्तिकेप्यनिधीयते॥ ८॥ परिवितोविनिमयेकर्मराजपलायने॥ अनियुक्त
 पररुद्धेतयास्यादितितत्यरे॥ ८॥ अनियुक्तसुवासंयांतिनिशिल्पिनिकेपिच॥
 उपरत्तसेहिकेयेतद्गहव्यसनाडरे॥ ८॥ सूर्यततोबंधुजीवेतथाजास्करजी
 वके॥ नदीकांतेसमुद्रेस्यावसिद्धुधुवारेपिहिनले॥ ८॥ नदीकांतामता
 जंबुकाकजवालतासुचानागदंतोदिपरदेगहाविगतदारुणि॥ ८॥ नाग

॥ ८॥

५

देतीउंजायांश्रीहस्तिन्यामपीष्यते॥ पुष्पदंतासुदिनामनागविद्याधरांतरे॥ ८॥
 एकवाकोनचंद्राकोपुष्पदंतावितिस्मृतौ॥ चंद्रकांतेषुश्मजेदेस्याचंद्रवत्
 केरे॥ ८॥ वैजयंतीगृहेशक्रपासादधजयोरपि॥ वैजयंतीयंपताकायांज
 यंतीवद्विमंथये॥ ८॥ पुरस्कृतंस्त्रितारिग्रस्तयोरनिधेयवत्॥ अनेहता
 न्यर्चितयोःसिक्तेचापिपुरस्कृतं॥ ८॥ अवद्वस्तंपरित्यक्तेनिदितेयवच
 णिते॥ धूमकेतुःस्मृतोवद्वावुत्पातग्रहजेदयो॥ ८॥ चित्रगुप्तंरुतांतेस्या
 तलेखकेचास्यसंमतं॥ पंचगुप्तंरुचावार्कशदिनेकमठेपिच॥ ८॥ अमि
 दितप्रतिप्रतिहतेतथानिर्गमितेपितैच॥ परिहितप्रतिहतेप्रोषितेच
 निराहते॥ ८॥ आयुष्मान्योगजेदेस्यादायुष्माश्चिरजिविनिविवस्वान्वि
 बुधेनानौनगवाक्रदृष्टोयो॥ ८॥ दीपवत्सिधुनदयोःदीपवत्पापगानुवा
 गरुत्मान्विहगेताह्यसंख्यावान्पंडितेमते॥ ८॥ अश्रुमान्जास्करेशाल

पर्याप्तं श्रुमता ॥ अथपतिः कवेरे स्यात् इह श्वरेयं पतिस्तथा ॥ ६ ॥ इह गृहपतिः
 गृहस्थे स्यादस्य धाने च सन्निधिः ॥ सेनापतिः कार्तिकेयेयं नीकाधित्तं ॥
 पित्रा ॥ लक्ष्मीपतिः वासुदेव लवंगदुवने रघो ॥ प्रजापतिविधौ च ये हि मा
 तिष्ठते न त्वा ॥ ८ ॥ वनस्थतिरुहमात्रे विना पुष्पं फलं दुमे ॥ सदा गतिरस्य
 वने निराचै लोचसदी श्वरे ॥ ९ ॥ दिवा कीर्तिचंद्रालेनापितो लूकयोरपि ॥ प्र
 त्ततिः प्रतिकारे प्रतिमायां च युजने ॥ १० ॥ निराकृतिप्रतिहेयेय स्वाध्यायेय नाहने ॥
 प्रतिपतिः परप्राप्तौ प्रवृत्तौ गौरवे पिचा ॥ ११ ॥ प्रोक्तं च प्रबोधे च प्रतिपत्तिः प्रयुज्यते ॥ उपतिस्तु
 युक्तौ स्यात्प्राप्तावुपगमे नौ ॥ १२ ॥ उपरुत्तिः संगमात्रे सेवायां प्रतिपादने ॥ अतिराति
 स्मृतौ लोकापदवेदे पार्थने पिचा ॥ १३ ॥ पारापतिस्तु जंगानां नगरीसत्तैरितो तरे ॥ गंध ॥ १४ ॥
 दत्तासुराभूयः पुरीयोजनगंधयो ॥ १५ ॥ हेमवत्यनया स्वर्णतार्थः श्वेतवचोमयो ॥
 धर्मवती नदी ते देवदत्तापादे पिचा ॥ १६ ॥ ऊमुदती सुदीन्या ऊशपत्ति ऊमुदती ॥

शुनदंता सुदीन्या स्यात्पुष्पदंतो न योषिति ॥ १७ ॥ नदे चरंगमाता उकुटिन्यां नरुत्त
 मद्यो ॥ प्रधूमितात्कृषितायां सुर्यगंतव्यदिश्यपि ॥ १८ ॥ प्रपजिनातपस्विन्यां मुडि
 न्यां मासिकोषधौ ॥ रुद्रप्रोक्ता शतावर्यं मूकशिब्या बलान्निदि ॥ १९ ॥ रुद्रवृताप
 दलायां माषपण्यं च नापिता ॥ समुद्रांतावुकापीसिस्सृक्का दूरालना सुसुचा ॥ २० ॥
 तया ॥ स्यादवलोकिते बुद्धे प्रहिते त्ववलोकिते ॥ उपधूपिते ॥ २१ ॥ स्यादपरानितो विलेख
 श्रीकंठे चापरानिता ॥ श्वेता उर्गतितीडगा स्यान्निर्जिते त्वनिधेयवत् ॥ २२ ॥ गणधिप
 तिरिच्यारव्याशंकरे पिगजानने ॥ यादसां पतिरंजो धौ प्रतीचादीक्यता ॥ २३ ॥ ५ वपि ॥ २४ ॥ स्या
 त्वपि वापतिर्तुयो ॥ रुद्रांकरे पिषाणारव्याषधे पिचा ॥ मुद्रानिपिक्तो नृपाले प्रधाने
 रुद्रिये पिचा ॥ २५ ॥ वसंतदूत श्रुते स्यापिकपं च मरागयो ॥ वसंतदूतीपालन्यां प्रती
 ता प्रतीमुक्तैः ॥ को ॥ २६ ॥ तषट् ॥ अहपारापतश्चित्रं कंठे तिष्ठिरिषहिलि ॥ समुद्रनं
 नीतारव्यापायूषा मुनरोचिषो ॥ २७ ॥ इति तातवर्गाद्यदि ॥ रथः स्यात्स्यंदने काये

चरते वेतसेपिचा॥ उग्रप्रवेणाकशयो॥ पायोर्धेयीयमंनसि॥ १॥ कोऽसु
 सटिकेनेत्ररुग्नेदेमदनेपिचा॥ पोयेधने श्रेयोणायांकटीस्त्रीगर्जयोरपि॥ २॥
 कायः स्यात्तद्वनिपाकेदुखव्यसनयोरपि॥ सिद्धनीत्यामधुष्ठेसिद्धर्जद
 नसंनवे॥ पृथुर्नुचेत्तुज्जरेत्तपयुमदत्यपि॥ दुःखः स्यादुगतिमूर्खेप्र
 कः शिखरमानयो॥ ३॥ तुष्टोमवेजनेउच्छातीलीसुहृत्तोलयोरपि॥ मथः स्या
 स्याद्रसंयानेनेत्रामयदिकाकरे॥ ४॥ ग्रंथोऽस्यधनेस्यासंदर्भेद्वित्रिनिमित्त
 ग्रंथिपैलिकोटिल्येग्रंथिपलेगदातैरे॥ ५॥ अथप्रकारेविषयेविककारण
 वस्तुषु॥ अत्रिधेयेपिष्टदोनांनिवृत्तौचप्रयोजने॥ ६॥ तीर्थशास्त्राधरेदेनोपा
 योपाध्यायमंत्रिषु॥ अवतारविजुष्टानः स्त्रीरजःस्त्रिविश्रुतां॥ सार्थवणि
 क्तसुहेस्यादपिसंघातमात्रके॥ पार्थस्तुकुक्कुनेलोगयावाग्नेदवत्तयो॥ ७॥
 कथारत्नयन्त्रितोस्यात्कथाप्रावरणंतरे॥ आस्त्रावसनायत्तापहासुकथयो॥ ८॥

॥ ४८ ॥

संस्थास्त्रितोचरेनाशक्ति सादनश्ययोरपि॥ बीघीगुहांगेपांतौनाद्यरूपक
 वत्सौ॥ ९॥ युयिथुप्रनेहेस्यान्नागंध्यांकचुरटने॥ पूयंतिर्यक्सुहेस्या
 हृदमात्रेपिनापितां॥ १०॥ यत्रिसमयः कामचितायांकपिबेकुसुतायुधो॥
 उमायकूटपत्रेस्यान्मारलोघाटकपिच॥ ११॥ प्रमथोपिगलोघोक्तपथ्य
 योप्रमथाप्रवेत्त॥ तिशांयस्यादृष्टात्रेविश्यायामेन्निमात्रके॥ १२॥ विदि
 योयोगिर्नतिमोरुदयः श्रुतिकुर्कुटे॥ शमयः सचिवेशौधमयोदमदंडयो॥ १३॥
 वरुयोरथगुप्तोस्यादरुघोचमदेश्मनो॥ अतिथिकशपुत्रेपिकोपेप्राधु
 लकेपिच॥ १४॥ वमधुर्वमनेपिस्थाजस्यकरसीकरे॥ वमधुः कथिताशा
 वैरिक्कामपिदृश्यते॥ १५॥ समुथोविहितेशकेसदाधेपिसमतः॥ सिधाय
 मुनिसिहेस्यासिद्धायः सितर्पेया॥ १६॥ कायस्तौपिचजतेस्यात्प्रचदेपर
 मातनि॥ लहस्तेखनावस्तेदेहस्तेवलाजिकेपिच॥ १७॥ कायस्तौचहरि

तक्वामामत्यां च प्रदर्शिता ॥ वयं स्थावाच्यवधतिवयं स्थावात्मनी दु मे ॥ खवा
 लीगुरुवीकाकोली शुहोला मलकी युवुवा ॥ अ अ ठोग ई नाडे स्यात पिय मे
 पुलि माति थौ ॥ ११ ॥ उय स्था मे ड उ संगे नुगे पाधौ च कथ्यते ॥ निययो न म
 के मि स्या निः स्वत्वा निरा योरपि ॥ १२ ॥ यो यि सु करी स्या को पूष्टे गो जि कि को
 षधौ ॥ चित्ररथः स्या हं धर्व रवी विद्या धरांतरे ॥ १३ ॥ वतु व्यथ अतु मास
 संग मे पि दि जे पि च ॥ वान प्रस्थो मधू के स्या किं शु के स्या चा अ मांतरे ॥ १४ ॥
 अथ यारवा हरित कपोपत्रगे नि व्यपे पि च ॥ षट् मया स्या ह वा सद्यो प्र
 म्यो पि प्र की पते ॥ श्री ॥ श्री ॥ य च ॥ चित्ररथः स्या हं धर्व रवी विद्या धरांतरे ॥
 वतु व्यथ अतु मास संग मे पि दि जे पि च ॥ वान प्रस्थो मधू के स्या किं शु के ॥ १४ ॥
 चा अ मांतरे ॥ १५ ॥ दश मि स्तु न धं वि जे स्तु वि रो पि प्र च रु ते ॥ अनिक स्तोरण
 स्वर्ण गशि हा वि च रु ते ॥ राज रथिः क वः इ प वी र मर्द ल के पि ॥ च ॥ न वे द ति

कथानष्टधर्मै पार्थ व च स्यति ॥ अ अ रे ये प्यु ररथि स मु द्रे च वि प न्त लौ ॥ इति य
 तवर्गः ॥ १६ ॥ दहि ॥ ग दो चा तरि वि लो स्या त आ म ये चा पु द्दे ग मा ॥ न दः स मु द्रे ति
 न रे न दी उ स ति स्त ता ॥ महो रे त सि क सूर्या ग र्वे द र्वे न दान यो ॥ मद्ये पि म र
 आ रव्या तो म दी तू ष क व स्तु नि ॥ प दं श ष्टे च वा को च व्य व सा या प देश यो ॥ १७ ॥
 र त ह्री क योः स्तान त्रा ण गोरं क व स्तु नि ॥ उ दः प ला प ला ग रु ति यं थि प ति
 मा ण यो ॥ र दो वि ले र व ने दं ते न दं क ल्या ण श म लो ॥ ने दो दै च वि शे षे स्या दु
 जा पे वि दार लो ॥ स्वे त स्तु वि दार लो स्वे त ने ध र्मे शा दः क र्द म श ष्य यो ॥ पा दो बु ध
 उ मां शे शे ल प्र त्यं त प र्व ते ॥ च र लो च म य स्वे दो र जा से ष लो ॥ सूर स्तु सु य व
 स्तु प कारे यं ज ने पि च ॥ स्वा दु र्म नो ते म ष्टे च म उ स्या व को म ले ख रे ॥ १८ ॥ अ
 सं व स रे मे वे गी रि ने दे पि मु स्त के ॥ वि दु स्तु दं त शै ले स्या त या वे दि च वि प्रु षो ॥ १९ ॥
 ऊ र अ क्र मे न मौ मा घ ति थि ने दे सुर दि षो ॥ के द स्तु सुर लो स स्य मू ले ज ल

धरेपिच॥१५॥मंदखलेमरवेमूर्खस्वैर्योरोगिले॥अनायेपिचमागि
 जजातिप्रतेरयो॥१६॥छंदोवशेषनिप्रायेहृदाख्याचिनवपतयो॥विदि
 रंगुलिमुद्रायोबुधेलेनननृतले॥१७॥अंडुस्याहंधनद्वयेप्रनेदेनूषण
 कस्यच॥नंदिरानंदधर्तेप्रतिहारेहरस्यच॥विदज्ञानेनबुद्धौवधीराक
 मनीषयो॥नितामवादेऊसायांनंरामलिकसंपदो॥१८॥दत्ति॥धनदोरा
 तरिश्चिरेजलदोमुस्तकेबुदे॥नंदस्यातपुष्यसमसीकोशीरयोरपि॥१९॥
 प्रमदसंमदेमतेकामिन्याप्रमदामता॥विशरपांडुरेव्यत्तेनीवदोवैद्यवि
 द्विषो॥२०॥अगरकपिनेदस्यातकेपरेगरमिष्यते॥अंगदायाम्पदिगंति
 हस्तिन्यासमुदाहृता॥२१॥वरदोपिप्रसनेस्याधरदशांघचेतसि॥वरदामि
 चकन्यायामामोदोनधहर्षयो॥२२॥नर्मदकेनिसचिवेनर्मदासरिदंनरे
 हृतादोगणकेरात्रौकृतादकृतादोतरे॥२३॥कपर्दीखंडपरशोनटाजूदेवश

॥५०॥

टके॥आस्यदंडपदेहृत्तेनिखादःखयचेखरे॥२४॥प्रसादोदुमहेकावगुणस्वा
 ख्यप्रसन्निषु॥प्रसादकथ्यतेदेवनरेदेवनिवासयो॥२५॥शारदपीतमुकेस्या
 ठालीनेप्रतिनेनवौ॥वषेयजलपिब्यभ्यासपणचिशारदि॥२६॥शारदोविय
 नेदेपिहिवुलेपारदेपिच॥तोयदंडघतेप्रोक्तंतोयदोमुस्तकाष्टयो॥२७॥निव
 दस्यावरिपादपरिनिष्ठितवादयो॥अर्बुदोमासलेस्यादशकोटिषुचार्बुदो॥२८॥
 शैलेर्बुदोर्थसंनेदस्युटितेसिंधुसंगमे॥कुसीदंजीवनेवृध्याकुशीदश्चकु
 रेशीके॥२९॥प्रणारस्तारशरेस्यात्प्रणारप्रवणमयो॥प्रणारप्रणदेरैत्य
 पादोतातिपुत्रयो॥३०॥मेनादकेकिमानारठागलेषुसमीरित॥गोविंदोका
 सुरेवस्यावगवाध्यहेबृहस्पतौ॥३१॥आक्रंदोदोदाहरणेमात्रेत्रीतरिरोदने॥
 माकदसदकारेस्यान्माकंन्यामलकीफले॥३२॥अदेडुअप्रशकलेगन
 हस्तखांकयो॥अंडुस्यादतिप्रौढस्त्रीगुह्यागुनियोजने॥३३॥कर्णांडुरुहिवि

कार्याकरणपाश्यामपि स्मृतं ॥ स्यात्कौमदः कार्तिकिके चंद्रिकायां च कौ
 मुदी ॥ १६ ॥ मुकुटं कैरवरं कपेकजे कुमुदकपौ ॥ १७ ॥ त्र्यंतरे चरिमानाग
 योरपि किर्तितं कुमुदा कुनिगं नायोः स्यात्कुमुदस्तु पाण्यवतः ॥ कुमुदेपि
 कुमुत्प्रोक्तं केव्यात्मा सादरुको ॥ १८ ॥ ककुदककुदं श्रेष्ठेषां केराजने
 स्मृति ॥ मुकुदपुंडरीकाक्षरत्नेनेदेपि पारदे ॥ १९ ॥ रेऋतौ ॥ दृष्टयेषां पदे स्या
 त्दृष्टया पाण्यमात्रके ॥ संपदुतौ गुणोत्कर्षे हारनेदेपि दृश्यते ॥ २० ॥ नौ
 स्वतंत्रास्वतंत्रास्वरे मांसेतरं करं वेद्यवे ॥ संवित्ताने प्रतिज्ञायां संकेता
 चारनामसु ॥ २१ ॥ संनाषणे च तोषणे च क्रियाकारे च संगरे ॥ कामदाधुनु
 कायां स्याद्वाच्यं वत कामदो गंधरि ॥ २२ ॥ सुनदारी च नाना यो मया दासी म
 नास्ति तौ ॥ २३ ॥ एकपदं न वेत्ता त्वेपदव्यामेकमेकपदपि ॥ चतुष्पदं स्त्री
 करणगवाश्चादिषु श्रुत्यपि ॥ न वेत्ति पदं निरव्याप्तिरोगे गजनेषु च ॥

॥ ५१ ॥

प्रोक्ता विष्णुपदी गंगा संक्रांतिहारका पुत्र ॥ न वेत्ति न पदोददेशे जने न पदोपि
 च ॥ प्रियंवदः प्रियं वाचिषु वाच्यवतः ॥ अनवादस्तु निदायामासा विश्रं न
 योपि च ॥ परिवादः कलं के स्यात् वीणा वादनवस्तुनि ॥ समर्थः समी
 पे स्यान्मर्थादा सहितेपि च ॥ पुटने दो नदी वक्त्रे पत्तना तोद्ययोरपि ॥ अ
 षा पदं स्यात्कसारिणं फलकेपि च ॥ अष्टा पदं शररने चंद्रमायां च मर्क
 टे ॥ मेघनास्तु वरुणो रावणस्य सुतेपि च ॥ माहानादः कुजरे स्यात्तव
 र्धुकाष्टेशयानके ॥ २४ ॥ न वेत्ति कनदं रक्तपेकजे कुमुदेपि च ॥ विश
 रदो बुधे धृष्टेऽग्निमदीरणमंथयोः ॥ २५ ॥ विमर्दो तिष्ठे स्यात्ताद्यो
 न्मार्गं यकप्रियो ॥ मुचुकुंदो दुमुदे स्यात्तमुनिदैत्यविशेषयोः ॥ २६ ॥
 कुरुवंदंस्तु मुस्तायां कल्पापबीहिजे दयो ॥ दिगुलेषु क्षरागे च मुकु
 रेपि समीरितः ॥ २७ ॥ अतिस्थं दो तिष्ठे स्यादा श्रवणिगदेपि च ॥ कडुक

देविंदु सिन्धौ शृंगवेर सौ नयो ॥ ४१ ॥ तमो दुग्धि केषु प्रतिपत्तिपि संविदे ॥
 शतहृदा न वेद जे सो सिन्धौ च कर्तिता ॥ ४२ ॥ दपं सदस्रपादः करु डे मा तं डेय
 जपुरुषो न वेदु पतिषध मे वेदी ते पिरु स्येपि ॥ ४३ ॥ इति दान्तः ॥ धदि। गधो
 वै शाख मा सिन्धौ दाधा गो यां च विष्कता ॥ विष्कु को ता ल लो को अचि व
 ने दे व ध नि ना ॥ ४४ ॥ गाध छागे च लि सा यां वा धो मृग यु द्यो ॥ मे ध के ते
 धि यां मे धा मे धिः स्या च ल दारुणि ॥ ४५ ॥ बुधः क वो रौ हि गो ये मि ध मा ल स्य नि ध
 यो ॥ तथा चि ता नि स ते पे ॥ न ध मु ध न द्योः धा सि धो वा द्या दि सु ख्या तः सि धा
 स्यु र्दे व यो नि षु ॥ नि न्ये प्र सि द्धे नि त्यं थ ने पा द मान म दी प मू त योः धा ॥ रु दं त्व ति
 समु द्रे स्या सं प नं जे वा स्य व त ॥ रु दं च शै ल ते स रि जि न रू देषु ने ध व त ॥ ४६ ॥ ॥ ५२ ॥
 वि दं स्या द्धे धि ते हि ते सा दृ श्ये पि नि ग द्य ते ॥ बु द्धे जि ने परे च सौ म्ये पि बु धि ते
 पि च ॥ ४७ ॥ अर्द्ध र वं डे स मा रौ र्द्ध ल धो मृ ग यु को ति रो ॥ अ धं स्या ति मि रे

दृष्टि ही ने ध समु द्रा ह तः ॥ ४८ ॥ गा गे धो गंध क आ मो र ले रो स बंधि ग र्व यो ॥ स्कं धः प्र
 कां डे का ये च बा डु मूल यो ॥ ४९ ॥ समी ह ने प या आ पि बंध स्त्रा ध्ये च बंध ने ॥
 दग्धं क वे षे न्य व डु ग्ध स्ति तार्क दि शि र्दि र्ति ता ॥ ५० ॥ दि ग्धं वि ष के बा रो स्या
 त स्ति ग्धे लि से गि र त्पि ॥ दु ग्ध प्र पू रि ते ही रे उ ग्धः सुं द र मू ट ये ॥ ५१ ॥ म धु रौ
 द्वे ज ते ही रे म द्ये पु ष्य र से म धु ॥ दै न्ये चै द्रे व सं ते च ॥ जी वा शा के म धु द्रु मे ॥
 ५२ ॥ वि धुः श शां के र्क पू रे ह शी के शे पि रा क्त से ॥ सा धु र्वा डु धि के वा रौ स ज
 ने चा नि चे य व त ॥ ५३ ॥ सिं धुः समु द्रे न द्या च दे श ने दे त दान यो ॥ बंधु र्बंध क
 पृ ष्ये स्या त बंधु ना त रि बां ध वे ॥ ५४ ॥ आ धि र्मान स पी डा यां प्र त्थ शा यां च ब
 ध ने ॥ य स न व्या प्य धि ष्ठा ने व्या धि रा म य वा च्यो ॥ ५५ ॥ द धि ही रो त रा व रू
 ना वे श्री वा स वा स यो ॥ वि धि र्बि धा ने नि य तौ वि धि का ले वि धा त रि ॥ ५६ ॥
 आ धिः समा धि ते रे स्या त बो धि पि ष ल पा द यो ॥ संधि ने रे सु रंगा यां त रो

घटनेपि च ॥१६॥ अक्षि सामुद्र सरसी सिधिरि निधितियोगये ॥ वदिरानदने वदे
 वदनेपि कलांतरे ॥१७॥ दोग्धाघोपालके वसे कवर्थापि जविनि ॥ विधागजा
 ये बुधौ च प्रकारे चेतने विधौ ॥ गंधाशालनिहाकायां श्रद्धाश्रद्धाप्रकां रुयो ॥
 अस्यार्द्धा संवर्षण साम्ये स्यद्भि क्रमसमसन्वितौ ॥ वधूः स्तुभान वोठास्त्री ना
 यस्मि क्रां गना पुत्रा ॥ सद्यां च सारिकायां च स्पृहः बुधगुदोपि च ॥१८॥ धनि विव
 धो निवधश्चापि यथा हा वार्यना सयो ॥ विबुधपंडिते देवे संवाधः संकरे न गो ॥
 निवधः कठिने देरो तद्राजे पि नगांतरे ॥ संरोधो रो रने होये जिरो धनारये ॥ उ
 सेधश्चो ह्यये काये उर्विधो उर्गे ते खले ॥ विश्वो नुद्धे त्वर्चेशांत विश्वस्तयोऽपि
 न्यग्रधो न्यासवदयो न्यग्रोधश्च मि तरो ॥ न्यग्रधी च सत्रदौ वर्मित कठयोरपि ॥१९॥
 आनंदं बद्धमात्रे स्यादानंदं मरुजादिके ॥ आविधो शौर्या च विज्ञेयः कुटे च य
 राहते ॥ कबंधं सलिले प्रोक्ते अपमूर्द्धकये वरे ॥ कबंधं स्तररेर हो विशेषे

विधोऽस्मत् ॥ सुगंधि स्यादिरुगंधे सुगंधि हरिषालुके ॥ उपाधिधमचितायां कै तनेपि वि
 चविधुं उदे ॥ आवंधो दृढबंधे स्यात्प्रमालं करयोरपि ॥ निबंधो ग्रंथविधुं तो साम
 दामविशेषणे ॥ कुटे बंधा एतेपि स्यादुपाधिर्यजक्रयो ॥ अरिधियति यतरो ॥
 शाखायामुपसूर्यके ॥ अवधिस्रसाने स्यात्सीम्ली काले बलेपि च ॥ समाधिनिध
 मे स्ताने नी वा कोचममर्चने ॥ सन्निधिः सन्निधानेपि तवेदिंद्रियगोचरे ॥ संसधिः
 सरजे सिधौ महो ग्रायमतिस्मृता ॥२०॥ प्रणधि श्रेया म्यायां वीरुधि पटशाख
 ये ॥ मागधि धिपिष्यली यूप्यामगिधो मगधो युवे ॥२१॥ वैश्यजः क्षत्रिया पुत्रे
 शुक्लजीरकबंधिने ॥ धचा ॥ अवरोधस्तिरोधने शुद्धांते राजवे श्मनि ॥२२॥
 मद्येषधंशं शृंगवेरे विशायां ल शुजेपि च ॥ पिरि व्याधौ वेतसे स्या ॥ पारि व्या
 धो दु मो त्यलो ॥२३॥ अवचबं मयूरे स्यादा क्रांते च वैर्वधितो ॥ समुद्रः सद्रूपोपि
 डितमन्यदृष्टयो ॥२४॥ अनिरुद्ध उखानाये चरे वान्यगले न्य व त ॥ अनुब
 धं प्रतत्या देर्दोषो त्या देवि न स्वरे ॥२५॥ मुख्या नुयायि निशि शौ प्रवृत्तस्यानु

तने॥ अनुबंधी च वहिष्कायां रक्षाया मपि कथ्यते॥ ३८॥ कालस्कंधस्तमा लया
 त्तिंडके जीवकद्रुमे॥ आशाबंधः समाश्वासितया मकटकवासके॥ ३९॥
 सवंधुरदिहेयो निर्देशे च द्विजमनां॥ उग्रगंधाजमोदायां बाबाळिकिकौ
 षधौ॥ ४०॥ निरुगंधावायां च शिशुराजिकयोरपि॥ ४१॥ रुगंधाकोकीला
 ख्ये क्रौञ्चाकासे च गोक्षुरे॥ ४२॥ रुगंधाचित्रकोले रुकात्येकलासे च
 लरुते॥ उपलब्धिर्मतो प्रोक्ताज्ञाने वापि प्रयुज्यते॥ ४३॥ धयो॥ ४४॥ योजन
 गंधाकस्त्यासीतायां व्यासमातरि॥ ४५॥ इति धातवर्गः॥ नदि॥ ४६॥ नः यूयं न
 पपत्यौ धनं गोधनवित्तयो॥ ४७॥ जिनस्यादधि वृद्धे च बुद्धे वा ह जित्विरोजने मो
 के महर्षौ काव्यरलोके च पामरे॥ जनीसीमंतिनिधोरुत्पत्तौ च जनिमता॥ ४८॥
 धनं स्यात्कास्यता॥ वादिवाद्यमध्यमवचयो॥ धनं सोऽदे दे दार्थं विस्वा॥ ४९॥
 रलोहमुहरे॥ ५०॥ मेघमुखकपोश्चापिवनकाननतीरयो॥ प्रवासे

निलये वापि वनं प्रश्रवणे पि च॥ ५१॥ वानं शुकपशुकैकटके सेवनकर्मणि
 जलसंघववातोर्मिसूरगागति सौरजे॥ ५२॥ दानं गजमरे न्याये पालन स्तेर
 श्रुद्धिषु॥ मानं प्रमाप्रस्थादौ मानश्चित्तो न ते सहे॥ ५३॥ यानं गतौ वाहने पि
 यानपित्तौ चरुणे॥ स्थानं स्निग्धे प्रतिधाने घनसालस्ययोरपि॥ ५४॥ स्थानं
 स्थितौ च सादृश्ये सनिशा वस्तुकारा यो॥ ५५॥ युक्तार्थे कर्मार्थे च स्थाने स्था
 दव्यये पुनः॥ ५६॥ श्रूयं वाच्यवडुद्धते सूत्रं प्रसवपुष्ययो॥ सूत्रा पुत्रां व
 धस्यां ने गलश्रुडिकयोरपि॥ ५७॥ ऊनं हिने रणे चोरे सूत्रं किरणसूर्ययो॥
 मीने राशये तरे मशैशी नोजसूर्ययो॥ ५८॥ चीनो मृगांतरे न वृद्धिरे
 शांश्रुको तरे॥ हिनो गृह्यो न यो न्यूनयोरपि किर्तितं॥ ५९॥ सुखं श्रुतौ
 समस्ते शुरस्तश्चक्रकचंडयो॥ वेस्तस्यादेतने मूल्ये वसनद्रव्ययोरपि
 ॥ ६०॥ स्वप्नः सुप्तः स्य विज्ञाने स्वप्नः स्वापे च दर्शने॥ बुधु शिफायां रुद्धे च रत्ने

॥ १३ ॥ न ग्रावंदिनिरुपणे विवस्नेवनिधेयवत् ॥ लमराशुदये
 लमसक्तलजितयो ल ॥ १४ ॥ वनरहकादितयो स्यादन्ननक्ततुक्तयो ॥
 निममन्यार्थवचने संगदेदारिते स्फुटे ॥ १५ ॥ विनस्ताने स्थिते लवेष्टि नंति
 नेच वाच्यवत् ॥ १६ ॥ विनामृतायापु श्रव्या न नंति नेच सूरणे ॥ १७ ॥ चिद्वेधं
 पताकायां धर्मविते पराक्रमे ॥ धनुसं रापियात्वा देराशिते देरासने ॥ १८ ॥
 तनुकाये रुशे चाल्ये विरले पिच वाच्यवत् ॥ १९ ॥ प्रदरणे मल्लौ कपालाव
 यवे यवे गदे ॥ २० ॥ हनु रुह विना सिन्या सनु यत्रे तुजे रवौ ॥ सानु श्रगे उमा
 र्ज्या मोप ध्ववे वने ॥ २१ ॥ दाउ दारि विक्राते नातु किरुण सूर्ये ॥ धनु स
 मुदे नद्यां च धुनी श्येन सिते स्वगे ॥ २२ ॥ मुनी यती गुदी धवि चाला गस्तिकि ॥ २३ ॥
 श्रुके ॥ ज्यानिर्हानौ प्रवत्तां च योनिस्यादरणे नगे ॥ २४ ॥ ज्योस्तापदे लियं
 स्याज्योस्ता श्रुकविना वसौ ॥ ज्योस्ता सवद्रन रत्नरात्रौ च द्रताप पिचा ॥ २५ ॥

शस्त्रा मृता तु जगज्ज्वा मेलापण्यो च कथ्यते ॥ मस्त्रा तु वरिकायां स्यान्मस्त्रा
 यामहश्येते ॥ दीना मुषिकयोषायां दुर्गते कातरे न्यवत् ॥ धाना न्नष्टयवे प्रो
 ताधम्या के लिन बोद्धि दि ॥ २६ ॥ न त्रि ॥ अवने र हणे प्रातौ जवनं नावये म
 नौ ॥ नुवनं विष्टपे लो के सलिले पि विष व्यापि ॥ २७ ॥ व्यसनं य-ऊने स्थाने
 सोमनिर्हने पिब ॥ अयनं यथि नातो स्यादुरक्षिण नो गतो ॥ २८ ॥ जयने स्या
 नुरंगादिसन्नाहे विषे पिब ॥ शयनं सुरते निद्रा शय्ये र पित्रा भितं ॥ २९ ॥
 शयनं शांतिवधयो ॥ शमनं प्राद्वैवते ॥ रशनं कवचे रते दशनं शिर
 र पिच ॥ ३० ॥ जघनं नस्त्रिया श्रोणि पुरो नागे कटी रके ॥ तपनं स्तरणे
 तापे न ध्याते नर कातरे ॥ ३१ ॥ रसनं खदने स्थाने रसना को ति जिह्वये ॥
 रसनं चापिरास्त्रायां वसनं स्त्रादने श्रुके ॥ ३२ ॥ हसनं उस्मते हासे गार
 धान्यां हसं त्यपि ॥ स्वस्तना मारुते श्वासे श्वसतो मदन दुमे ॥ ३३ ॥ क

रनेमदनेपापेसनंमदिजले॥मदनस्मरवृत्तेरेवसंदुमसिद्धके॥३१॥दह
 नःश्चित्रकेवक्षोभधोतेदुष्टचेष्टिते॥गहगहरेचदुखेचिपेनेकसितेपि॥
 ३३॥स्तननंधनिमात्रेस्यात्कैदनेधनगर्जिते॥निधनंस्यात्कुलेनारोप्र
 धनंदारलोरणे॥३४॥पवनारव्याकुलालस्यपाकस्थानेपिमारुते॥निपा
 पापायवपनंबीजधानेपिमुंडने॥३५॥मदनःकुसुमेवीरेवमनवदने
 दने॥स्यादाहृतौचपनंनंबंधेचोपरनोमये॥३६॥कमनःकासुकेकामे
 निरुपेशोकपादये॥धनमदोयनलेतास्त्राधापककूरयोस्मृतः॥३७॥
 धमनीउरुहिरायांकंधराशिरयोरपि॥मलनःपटःवासेस्यात्तमले
 मलनंमते॥३८॥चलनंकपनेकमेलेनकपतौ॥चलनीवस्त्रवच्च
 पाचारिते॥देपिकपि॥सेवसदरणेसेकेनोकासेवनजनाजने॥सेव
 नरुरणेसेकेनोकासेवनजनासने॥सेवनसीवनीपयोसव्यातकुवेषु
 के॥४०॥समानोससमेकेषुसमानोनातिमारुते॥शोभनोग्रहनेद

॥५६॥

१५

२१२

योगेस्यात्शोभनंसुदरेन्यवत॥४१॥शासनंराजदतोव्यालेखतोशास्त्रस्तिषु॥वा
 सनंवसनेज्ञानेचधूपने॥४२॥आसनंदिरदस्कंधेपिडेयात्रानिवर्तते॥आसनीय
 एववीथ्यास्यादासनेजीवकद्रु॥४३॥स्पर्शनोमारुतेस्पर्शदनयोस्पर्शनंमते॥द
 र्शनंनयनंस्वप्नबुद्धिधर्मोपलब्धिषु॥४४॥शास्त्रदर्पणयोश्चापिदर्शनंराम
 णि॥पिशुनंकुंजमेरेश्वरेवकेत्यनिधेयवत॥४५॥मिथुकनःपिवस्त्रेचस्यका
 पापिनामकाशकुंनंचश्रुताशानिमित्तेराकुनःखगे॥४६॥मिथुनोरशि
 नेरेस्यात्मिथुनंदपतीयुगे॥तवूनपंचलेयूनिस्त्रियाचतलुनीविडु॥४७॥
 तलीनंविरेलेश्लोकेस्वप्नेपितलंमते॥मलिनंदूषितलेलेरुतुमन्यामलिन्यापि॥४८॥
 कठिनंनिदरेस्त्राव्याशकशयांगुडस्यपिउ॥वटिनाखडिकायांकठीनिउप्र
 युज्यते॥४९॥पीतनेहरितालेस्यात्कुंजमेवितदारुणि॥आम्नातकेपित
 नश्चमैथुनंसंगमेतरे॥५०॥केतनंलोभनेकायेगेदेचोपनिमंत्रिणे॥वर्दनंलेले

केनालंछनं च मने मतं ॥ ५१ ॥ छेदं न छेदं केनेनेदे छेदं न पक्षयो ॥ तोदनं व्ययने तो
 त्रोदनं क्रंदने श्रुति ॥ ५२ ॥ अपनं उगुदे प्रोक्तं अपानं स्तेस्य पिरुते ॥ निदानं
 दोहपात्रे स्यादाहवे पात्रे स्यादाहवे पात्रे कर्मणि ॥ ५३ ॥ संतानं संततौ गो
 त्रे स्यादपत्ये सूरदुमे ॥ वितानो यज्ञविस्तारे नौ चेषु क्रुड कर्मणि ॥ ५४ ॥ व
 तने दावसरयो वितानं उच्छमदयो ॥ उत्तानं स्यादगं निरतया सुप्तो मुखे
 न्यवत ॥ ५५ ॥ आदानं ग्रहणे विधातु अलंकारे च वाचि नो ॥ निदानं का
 रणे रोगनिर्णये वसदामनि ॥ ५६ ॥ उद्यानं वनने दे स्यात्त्रिस्तने पिप्रयोज
 ने ॥ अस्त्रानोरुटिको जे दे वाच्यं वनिमले स्मृता ॥ ५७ ॥ व्युत्थानं स्त्रैरक
 रणे विरोधाचरणे पिचा उत्थानमुद्यमेतत्र व्युत्थानं पौरुषे रणे ॥ ५८ ॥ अना ॥ ५९ ॥
 द्यमहर्षे छमजवेगे पि किर्त्तिते ॥ सस्त्रानमान्तौ मत्तौ संनिवेशे च उप
 ये ॥ ६० ॥ भावनं प्रगमे श्रुदौ प्रसिपण्या धाननी ॥ भावनं उजले रुद्धे याचका
 ध्यास्यो विदुः ॥ ६१ ॥ भावनं सिद्धि के वदौ प्रापश्चि च भावनं ॥ वाच्यं वत्यापि

के?

१६

पितरि हरितकां च पावनी ॥ ६२ ॥ वामनोऽकोष्ठवैकुण्ठखर्वे रक्षिणदिगाजे ॥ स्थाप
 नं स्यात्सु सवने समाधौ रोषणे पि च ॥ ६३ ॥ आपनं वर्त्तते काले लये निरसने पि च ॥
 युजानः सारथौ प्रिविबुधानः पंडिते गुरौ ॥ ६४ ॥ दशानं ज्योतिषिप्रोक्तं दशानं
 विरोचने ॥ जवनो देशने दे स्याद्देगवेगाधिका श्रयोः ॥ ६५ ॥ जवनो मधिने दे स्या
 दाच्यवदे गिनि स्मृतः ॥ जीवनं वर्त्तते नारे पुत्रजीवे च जीवने ॥ जीवनी जीवना
 चेति जीवती मोदयो क्रमात् ॥ दैव नं व्यवहारे स्यात्त जीगिषा क्रीडयोरपि ॥
 अक्षेषु देवनः प्रोक्तो मेहनं मूत्रशि श्रयोः ॥ तैमनं व्यजने केदे ते मनि बुद्धि का
 तरे ॥ सावनो यज्ञ कर्म यज्ञमानप्रयो तसो ॥ वितानं कारणे तानं प्रज्ञानं लो
 छने धियो ॥ हायनोर्धिषिवर्षे च ब्रीहिने दे च हायनः ॥ फाल्गुनस्तु तपस्ये स्या
 त्पूणि मायां उफाल्गुनी ॥ फाल्गुनः कथितः पार्थे नदी जे ककु जे पि च ॥ वेष्टनं
 कर्णकुल्यां उउम्भीषे परिचारणे ॥ गोस्तनो हरिने दे स्यात्तु हायां गोस्तनी

तिच॥ कर्त्तनं कल्पते कस्तौ सज्जनं यांच कल्पने॥११॥ कर्त्तनं छेदने प्राहु नारि नाव
 लसेवने॥ लंबनं तलवासे स्यात्क्रमणे पवने पिच॥१३॥ मंडनं स्यादलंकारे
 ॥ लंकारिस्तु निवाच्य वत्॥ नंडनं कवचने युद्धे खरिती कारे पिचर्त्तते॥१४॥ मुंडनं
 पवने त्राणे हि उ नं लेखने तरे॥ अंगनं प्रांगणे पाते कामि व्यामंग नाम ता॥१५॥
 गंधनं सूचने साहे सिंसने च प्रकाशने॥ नंदनं वासवोद्याने नंदनो हर्षके सु
 तो॥१६॥ स्पर्दनं स्तौस्तु तो निरे स्पर्दनं स्तिरिसेरये॥ क्रंदनं रोदने काने चंदनं मलयो
 द्वे॥१७॥ चंदनं कपिने दे स्यात्वनरी ने दे पिचंदनी॥ वदंनं छेदने वद्धो वारिधा
 न्या च वदंनी॥१८॥ व्यंजनं ने मने चिह्नं रम श्रुण्वये वे पिचा॥ रंजनं नो राजनने रंजनं र
 क्तचंदने॥१९॥ गुडारो च नि कानि लिपं जिष्णु सुरंजनी॥ अंजनं कर्त्तुं लेप्रोक्तं सेवे
 चरसोजने॥२०॥ अंजनो दिपा जे ज्येष्ठं मंजनं नाप्यतिस्त्रिंशं॥ अंजनी लेपना
 या स्यात्तं गंजनं सुरसौ न के॥२१॥ विषदिग्धे पचो मांसे गृचने च प्रकीर्त्तितं॥

॥५८॥

लेखने छेदने सूर्ये विपिज्ञा सेव सेवने॥२२॥ योजनं उचुः क्रौश्या योगे च परमा
 त्मनि॥ गजनं विचनं कोपे वजनं यागदिसयो॥२३॥ मार्जनं कथितं श्रुद्धौ मार्ज
 नो लोदशोखिनि॥ सज्जनो वाच्य वसाधौ सज्जनं घटगुलके॥२४॥ सज्जना कल्प
 ना यो उजाजनं योग्य पात्रयो॥ अजुनः कर्त्तुं जे पार्थका क्तिवीर्य मयूरयो॥२५॥
 माजरे कसुरे च स्यादजुनो धवले न्यवत्॥ अजुनः च नृणे ने त्रगदे वा यजुनी ग
 वि॥२६॥ उषायां करतो नद्यो उदित्या मपि च क्वचित्॥ वजिनं कल्पस्वे के रोव
 जिनः कटिले न्यवत्॥२७॥ लोसनं लहिलोता मिबंधनं वधवधयो॥ जगदुरमे
 जातौ च वचे ऊं ऊं वा ऊं विप्रयो॥२८॥ प्रसूनं वाच्य वजाते प्रसूनं फलपु
 ष्ययो॥ कानी कः कन्यका जातानमेव्या सकल्पयो॥२९॥ काननं विपिनं हजे
 परमेष्ठिमुखे पिचा॥ काचनं हेमि किं जत्के हरिद्रायां उकाचनी॥३०॥ ऊ
 चं काचना जने गोलके चायशः कनि॥ सौबले करणे रंगो॥ रोचनोरक्तकः क्लारे

होचनो कदशात्मकौ ॥ ८॥ मांगल्ये पिच गोपितौ जापितौ रोचनौ वि ॥ रस्त्रिय स
 नस्तु श्रुते ॥ राक्षसौ पानस्त्रिययादिषु ॥ देवादिष्ट फले पापे विपत्तौ निष्कलोषमे ॥
 उदनाथरावर्ते मरुसमविशेषयो ॥ ९॥ उदानः सुकमे बुद्ध्या विलमा मध्यम
 यो ॥ संधानं स्यादनिषवेन या संघट्टने पिच ॥ १०॥ राधनं साधने प्रोक्षो राधा
 नंतोषणे पिचा राधनिर्वर्तौ मे हंसैस्ते सिधौ वधे गतो ॥ ११॥ उपाये म न संस्का
 रे दीपने पग मे धने ॥ प्राधानं स्यात्तमाहा माये प्रकृतौ परमात्मनि ॥ १२॥ प्रजा
 यो च प्रधानं स्यात्तमाहा माये प्रकृतौ परमात्मनि ॥ १३॥ प्रजा
 सवे ॥ १४॥ कौयिकविहंगारिपश्रुता संगरे पिचा ॥ कौपीनं दकार्ये च गुह्ये कवी
 रयः प्रदेशयो ॥ १५॥ विक्किनो जया जीर्णेशो चाद्रो च वाच्यवरा ॥ नमो ब्रह्मसूय ॥ १६॥
 वक्रिदुबुद्धरां करविष्णु ॥ विस्ववाराख्य शिखिरे स्यान्निवृत्ता मउतयो रपि ॥ शिखिव
 क्रौवृषे केकिशकेरे उग्रदे दुमे ॥ १७॥ केचित्तु उटयो आपिशिखिचूडा चिते

न्यवरा ॥ आपन्नसविपन्नौ स्यात्प्राप्तौ वाच्यवरा रितः ॥ १८॥ विपन्नकथिते
 नष्टे विपन्ने श्रुतु जंगमे ॥ विविन्नं समालोच्य विनक्तु कटिते न्यवरा ॥ १९॥ सं
 पन्नं साधिते प्रोक्तं पत्ति सहिते न्यवरा ॥ शाखी स्यादपदे देउरु स्कारख्य
 ने पिचा ॥ २०॥ खड्गी खड्गा युधे गडे श्रुतिना गदुमादिषु ॥ सारितुरंगमात
 गरथारोहेषु कथ्यते ॥ २१॥ पत्रिश्ये न्ये रथे कंडे खगदुरथिका दुषु ॥ वज्री
 शशैरा क्रौवा जिबाणा श्रयत्तिषु ॥ २२॥ चक्रि कुवा लवे ऊठ को कहिग
 मजालिषु ॥ धचिधनुर्दरे पार्थविधग्ने ऊने दुमे ॥ २३॥ सति स्यात्तु हिते यो
 ज्ये पाशिया शधरे समौ ॥ नरिनिहर प्रतीहारे गर्दना देव जडुमे ॥ २४॥ नरि
 नीनु न तो हायं धे सुरसरित्यपि ॥ छेद नो लंबधे निविष्ठ दन वमने मने ॥ २५॥
 छेदने कर्त्तृ नैरे छेदने पत्रपक्षयो ॥ तोरने व्ययने तोत्रो रोदने दने क्रुदने
 श्रुति ॥ २६॥ आपन्नं तु गुरे प्रोक्तं आपन्नस्तस्य मारुते ॥ सवानः स तो गोत्रे

स्मारयत्येसुरदुमो॥१२॥वितानोयसविस्तारोक्षोचेषुक्रनुकमणि॥वृत्तनेदा
 वसयोवितानेष्ठमंदमो॥१३॥उत्तानेस्मारगतिरेतथासुसुखेन्यवव
 आदानेग्रहणेविद्यादत्तंकरेववाजिनो॥१४॥निदानंकारणोरागतिरूपे
 वसरासनि॥उद्यानंवननेदे॥स्मानिस्तपेपिप्रयोजने॥१५॥हलिवनेषाकेस्य
 तअलीवअकनृगयो॥वणीस्याल्लेखकेचित्रकरेपिब्रह्मचारिणि॥१६॥
 शिल्पिउवाचवक्तारौनखिजायांचशिष्यिनि॥१७॥कामांस्यान्कामुकेचन
 वाकेयारापिचंतेच॥गौमिनुपासकेकेरौवाचस्मतिप्रदौ॥वमफलकपालौ
 स्मादमंतेगुरीवावपि॥१८॥अथीस्याद्याचकेपदेसेवकेचविवादिनि॥
 स्वाभिप्रनोविशारेव॥रागीरक्तरिंदसुके॥१९॥धजिरोत्तरयेविप्रेनुजंग
 मउरंगयो॥नोगिनुजंगमेरासियामण्योनपितेपिच॥२०॥विदियमहिमि
 वाच्यराजयोषितिजोगिति॥द्युवाचविचेगमेनातौप्रेन्याकृतिसारसे॥२१॥

राजाप्रनौष्टेयेचंद्रेयहेरुत्रीयवैश्ययो॥अधावर्त्मनिसंस्थानेसास्त्रव
 स्कंधकालयो॥२२॥धन्यजांगलेदेरोस्याहधनुश्चापेस्तलेपिच॥आत्मा
 देहेमनोब्रह्मस्वनावधतिबुद्धिषु॥प्रसन्नैवाययोयावाप्रस्तरेजवरेगिरौ॥
 ब्रह्माविरचिद्विजयोःरुत्वद्राध्वयोयो॥ब्रह्मोक्तं॥तयोध्यात्मवेदज्ञानेषु
 सुरिनि॥उक्तंस्मितेवादिब्रह्माकर्ममहेद्रयो॥साराणोक्तेअष्टेनिसगबव
 शास्त्रिनि॥पवस्यामंथोप्रस्तापिलवृणांतरे॥दर्शप्रतिषेदासंघोविषुवत्त
 नृनिषपि॥नर्मस्वर्णेनारेचर्मस्यात्फलकजचयो॥कर्मव्याप्यक्रियाचवजनेत्र
 वदेधुनि॥वृष्टदेहेप्रमाणेतिस्तुंदराकारयोरपि॥ममस्यामंदिरोनीरेष्ठदस्या
 याजदशयो॥धामदेहेगदेरमोस्थानेजन्मप्रनावयो॥२६॥प्रिनमणिनेचसे
 हेव्योमहारिविवाहायसे॥पत्नसूत्रादिसस्त्रांशेकिंनकेनेत्रलोमनि॥
 लसचिद्रेप्रधानेस्मारदशनिविधतो॥अरनिःकफरोहस्तेसप्रकोष्ठत

तागुली॥ सेनानिकात्तिकैये स्यात्तथा सेनापतावपि॥ आदिनीयज्जतडीते
 कामिनिचावंदयो॥ बाहिनिस्यात्तरंगिण्यां सेनासैन्यप्रनेदयो॥ वत्तनि
 तर्कपिडे स्यात्तवर्तनीमालनेपथि॥ बाधिनि बोधिमिष्यत्यो बाधनंगधा
 जने॥ बाणिनी नत्तकी मत्ता विदग्धवनितासूच॥ रजनीलीकाका हाकि
 द्वायांतीनासुच॥ नवीनीपननीपनयो मसिंधु सरोवर॥ नादि का
 यानलिनी नविनं कमलेजले॥ मालिनिवृत्तनेदे स्यान्मालाकारस्त्रिया
 मपि॥ पंचानार्थगौर्याचमंदाकि न्याचमालिनि॥ शंखिनी श्वेसुना
 केचोरपुष्पावधुतिदि॥ ३७॥ पद्मिनिस्त्री विशेषेपिसरस्याम्बुजपि॥
 हस्तिनिगजयोषायां नारिनेदेपिहस्तिनि॥ संधिनी उ वृषा क्रीता ६१॥
 कालदुग्धगवो स्मृताः॥ नदिनिद्विज नार्थार्थानाद्यो क्त्वा राजयोषि
 ति॥ ३८॥ रेचनंतिवृदंतिगुजाराजनीकासुच॥ अशीधितालम

न्या च्यादघ्नः सुरेपिचा॥ ४०॥ राक्षी रासनेदेचवृश्चिकी स्यांकरंर॥ अ
 सिक्की स्यादवधातः पुरमेष्पस्त्रियां धनौ॥ सनायधनेदष्टौ गंधनो
 निनयेपिच॥ नावनालेमनेभ्यानेवेदने सानरवयो॥ ४१॥ कुहनादे
 नवर्षायामीष्यालौ कुहनायुधन॥ पुतनाराक्षसीनेदेहरितक्याच
 पुतना॥ वत्तनानीकीनी सेनाचमूसेन्या तरेषुच॥ चेतनासंविदिप्रो
 क्ता वाच्यवत्प्राणिनिस्मृता॥ प्रसन्नामदिरायांचप्रसादसहितेन्य
 वत्॥ लवनाडीनेदे स्यात्तजिकायांवरयोषिति॥ श्लेषध्वाकथिताम
 न्यां कं पिष्टकफजयो॥ ॥ नच॥ महाधनं महामूले सुवस्त्रे सिद्धी के
 पिच॥ तपोधनं विषेचगडुके प्रयोपिच॥ प्रणिधानं प्रयनेचप्रवेशे
 वसमाहितौ॥ आयोधनं वधेयुदेतमेमाध्याययो॥ अग्निजनकुलेख्या
 तौ जमनुया ऊधजे॥ स्नापसे स्या मुडीयांचतपोधना॥ आराधनं तौ

षण्णस्यात्प्राप्तौ चपनेपि च॥ नवेत्युपजनो यहेरा ससे स जनेपि च॥ वि
 सर्जनपरित्यागे दाने संप्रेषणे पि च॥ वैरोचनसु सुगतै बलिदै त्या कपुत्र
 यो॥ विलोचनोऽर्कं दहने चंद्रे प्रज्ञा दनं दने॥ अत चने प्रतिचापयवनाया
 येनेषु च॥ अतिपन्नो धिरो नित्यि निद्रुते ग्रसे विपद्रुते॥ प्रतिपन्नः स्मृतो धि
 रविज्ञाते गी रूते पि च॥ समापन्नं समाप्ते स्यात्प्राप्ति क्लिष्टे वधे पि च॥ न
 वेत्स जननं योनौ जन्म विप्रजने पि च॥ अलनं विबधे स्यादा कां क्षापरि संख
 यो॥ संमूर्धन प्रव्याप्तौ संमूर्धने दयोरपि॥ निर्यात न वै रश्रुदौ दाने सा सा
 पणे मतं॥ कथितं गद नां डशिषां म्ना त कपु च॥ अश्च छे च समुत्थानं उय मे
 चौर निरुपे॥ आका दनं संनिधाने स्मृतं वस्त्रे पवारणे॥ राजानं सीरी का ६२॥
 •यायापे ले कि श्रुके पि च॥ कौचा दनं श्रुदै सुकि कि ल्या चि चो टक मल
 यो॥ उसा दनं समुद्धे खोडा हनो दत्तनेषु॥ वसा दनं शूल दल मधु छत्र

कुण्डरयो॥ वृक्षा दनी स्मृता वंद विदारि गंध योरपि॥ सदा दानो न्नमा
 तं गेहे रवे गंध दस्ति नि॥ अवदान मति वृत्त कर्म मंड यो र्मतं॥ अचंद
 नं चपत्रा मे दु मे दे रत्त चंदने॥ आस्कंदनं तिरस्कारेणि संप्रेषणे पि च॥
 सवेदनं समा लोचै वशी कारे प्रकिर्त्तितं॥ विहडनं सु हिंसायां मदने विह
 बने॥ जलाटनो लोह दृष्टे जलो कायां जलाटनी॥ प्रस्फोटनं नवेत्स र्पे ताट
 ने च प्रकाशने॥ उत्थातनं समुत्पन्नो रयो धज मने स्मृतं॥ उद्धनं चोत्पतने
 प्या वा वृत्तौ विलेपने॥ समादानं समिचिते ग्रहणे निवृत्त कर्मणि॥ संय
 मने व्रति पूर्या संय मनीय मस्य च॥ निशामनं श्रुतौ दष्टौ दृष्ट्या लोचि
 निशामनं॥ प्रतिमानं प्रतिष्ठायां गज दंता त रा लयो॥ अतिमानं स्मृतो
 र्ज्ञाने गर्वे प्रणवसियो॥ अधिष्ठानं पुरे चक्रे प्रज्ञा वेध्या सने पि च॥
 नवेदुदय नो व सरा जे गस्त्व मुना वपि॥ वधमानं प्रश्ने देश रा

वैरंडुविष्णु॥ मात्मा धनश्चित्रसर्पे मातुधा नीले तांतरे॥ प्रति यवस्तु
 संस्कारे निःसायाग्रहोपि न॥३॥ विहननविघाते स्यात्पि नने उज
 धूलजे॥ संवाहनं वाहने पि नारादे रगमर्दने॥ उदाहनं वसिते स्याद्भुक्ता
 मुद्वाहना मता॥ महासे नो विशारवे स्यात्तुहा से न्यय तावपि॥ रसाय
 नविडंगे पिराज व्याधि जिहोषधे॥ रासादानं रजविषयि॥ मयने॥ कात्याय
 नो वररु बौगो यो कात्यायनि मता॥७॥ काषायवस्त्रविधवादनरत्या माप्यति॥
 सुदर्शनो हरे श्चक्रमरावत्या सुदर्शने॥ आजायामौषधिने दे मेरु हृथा सुदर्शने॥
 निर्जसने खला कारे लतके वस मायने॥ परिडे दे समाप्तौ च समाधाने प्रया
 पणे॥ अन्वासने स्नेहवस्त्रानुपास्तानुरोचने॥ उपासने रा रा न्या से शु
 श्रूषायां च हि सने॥ निरसने निरासे स्यात्त व धे निष्ठा वने पि च॥ नि
 र्वासने हि सने च नगरादेर्बहिः क्तौ॥ आवेशने शिष्टिग्रहे भूतावे

५३॥

शप्रवेशयो॥ सारसने मेखलायां उरस्त्रिचतुत्रिप्रहसने च वेदंगे प्रहासा
 हे पयोरपि॥ वरासने वासने श्रूला पारपारयो॥ ब्रनाद्यनोघातक म मक्त
 दतिनोतिरेतरे॥ वासबंध काष्ठयो॥ यो नातनः शात के स वैरिणे॥॥ शिवे
 पिच्छण मति यौ सुनिश्चले॥ सुवासनौ बसरा जे प्रासदे म तरे च्छने॥ वि
 स्मापनाख्या ऊह के गंधर्वनगरे स्मरे॥ सुकर्मग्रह योगे स्यात्सुकर्मदेव
 शिल्पिनि॥ पुत्रा माख्यातिगुदजरीर्बको शिक योरपि॥ द्विजमा दशने वि
 प्रेक्षु तात्मा युगले विधौ॥ अर्थमास्य न क्ता नां सूर्ये च पिच्छदेवते॥ सुदाता
 मुधमेवे वि श्वाघातन चंद्रयो॥ सुधवा श्रौठधा तुक्क सुधवा विश्वकर्मणि॥८॥
 वनश्चागंधमाज्जरि बं कर्षा प्रयोरपि॥ परिश्वा क्तु कर्मज्ञ याज्ञिके परि
 वारके॥९॥ अथवा ब्रह्मणे वेदे लथ परि कीर्त्तितं॥ सुयवा त्रिदशे वरो
 सरे सये पि पर्वणि॥१०॥ लला म च लल म च लो च न च न वा जिषु॥ श्र

गेप्रधनेनुषाकारमेवालधिपुद्रयो॥८॥अनावेस्यातकलापीउल्लहणव
 हणयोरथा॥प्रत्यायकप्रितरात्रौप्रत्ययप्रतिवारिनि॥८॥केसउरगेसि
 हंपुनागेनागकेसरे॥शिरवरिपादयोशेलेतथापामार्गगामये॥८॥अ
 गारिनुसुषेवेस्यातुक्रमुकेचमतंगजे॥विलासिनोगिनिआलेपनासिव
 लरुसो॥८॥शिरवंडितमपुरेस्यातबाणहृत्त्रियनेदमो॥कलापेचार्थयु
 नायायुधिकायांशिरवंडिनि॥८॥विषयंत्विद्विषेख्यातवाच्यवतद्विषया
 न्विते॥व्यानुकामुरेद्व्यविरोधेपिसमेसि॥८॥तपस्वितापसेचानु
 कंपासेचतपस्विनि॥मांसिकाकडुरोहिएयाप्योवरस्त्रीमूरवेगिनो॥८॥
 लागलीबलनैद्वेस्यातनालिकेरेचलांगलि॥कुंडलीवरुणेकेकिनोगिनो
 सकुंडलो॥८॥योधकीतुकरिस्यातनारंगेकिष्कुपवणि॥फलकिस्माद्विस
 येफलकपाणिको॥८॥कुचुकीनुजगेरिमहस्तेयोगकडुमे॥सामयोनिस्तु

५४॥

समीलेसामयोनि॥गजिविधौ॥कंनयोनिरगस्त्वस्यादजुनस्यगुरावपि॥
 आमयोनिविधौकामेचित्रनानुरवगेनले॥महामुनिरगस्त्वस्याद्वन्याका
 गयोरपि॥लधनिःकोकिलेस्यातपारापतयमपुरयो॥मदयिस्मृतःकामेका
 लोकासुकेपिच॥मदयिउन्नवेसिंधौमध्यस्यामदयिउच॥रुषयलुसुने
 हेमिद्योषयितुःपिकेदिजे॥स्तनयितुःपयोवाहेतद्वनौमृत्युरोगयो॥२०॥वि
 धरकेनाफलिनास्याद्विषधेनोन्नतार्दने॥देवसेनेद्रुकन्यायांसेनायांचपि
 वोकसो॥नोगाचनानायगयिष्ठीकरिमुदुरीकातयोश्चे॥धनामद्विकायां
 केतव्यामपिकथ्यवे॥प्रसाधिनिकंकतिकसिंधोर्वेषसाधिनि॥सामि
 धेनिरुचिप्रोक्तासामिधेनिसामिधाया॥सरेजिनिस्यात्कासारपनिनि
 पन्नयोस्तथा॥विलेपनिस्मातलासुवेरानायोरपि॥माउलानिकलायेस्यागं
 गायांमाउलस्त्रियां॥पयस्विनिउरोधेचांविनावयंपयस्वीनि॥गवारि

निद्रवारुण्यागवांसदनाश्रमे॥सौरामिन्यसरोजदेतडित्तद्देदयोरपि॥
 नय॥पीतचंदनमयेतत्कलिकरुरिद्रयो॥स्यादपवर्जनमोहेपति
 तागेविहाचिते॥वरचंदनमात्मातकालीयेदेवदारुणि॥रुरिचंदनमा
 रव्यातगोशिषिसुरपादये॥यस्यापांऊंऊंमेवातिसर्जनचधयतयो॥म
 धुसुदनश्चसंज्ञाचन्नमरेवनमालिनि॥स्यान्मत्तुवंचनःशंभुःश्रीफवे
 रोहोकाकयो॥स्यादपवर्जनमोहेपतितागेविहायिते॥अपवर्जनमात्मा
 नपरिवर्जनदानयो॥महारजनसुदिष्टंरातऊंऊंऊंनयो॥स्यान्म
 तिपादनंरानेप्रतिपत्तौचधोधने॥गंधमादनइत्याऊंगंधकेमानतरे॥
 अद्रिजेदेचनंतेचसुरायांगंधमादि॥स्यादनुवासनंस्नेहकमधूपनयो
 रपि॥श्वेतवाहनइत्याख्यासुधामिधनंनयो॥रुरिवाहनइत्यक्ताराचि
 पतिविवस्वतो॥अग्निनिष्ठा नरादोयविसर्जनियाहरेमतः॥धूमके

६५॥

तनमिच्छेतिदुताशनग्रहजेदयो॥स्याउपस्पर्शनंस्पर्शस्नाचमनेनयोपि॥
 शिकीर्तनामापिशृंगरिंदेसुरदिपि॥शालकायनशस्त्रस्यादपिजेदेपिम
 त्रिणि॥स्यात्यन्तलोभनाजिरव्याविधौलोकेश्वरार्कयो॥धनदेतसरस्व
 त्मातारावस्योरपिस्मता॥स्यात्वष्टिहायनोभान्यविषेपिमंतगजे॥जानि
 याउपसंपन्ननिहितेचसुसंस्तुते॥विश्वकर्मादिवशिल्यजेरोल्लरश्मिषु॥
 हस्तावर्ताकुताशेस्यात्॥दुराचारेविधुंउदे॥अग्नजन्मादिजेष्टेचन्ना
 तरिब्रह्मणिस्मृतः॥श्वेतधामाकलायेवनसाराब्धिफेनयो॥तिक्तपवा
 उयष्टाकगडचीहोमोचिषु॥किंऊंपर्वजवेदिहोवेणोपेदेगलेपि
 च॥वृषपवाहरेदेत्येगारिणिकसेरुणि॥व्योमचारिखगेदेवेचि
 जीवाधिकानयो॥१॥कारवनीकास्याकारेधनुवादरतेपिच॥वनमा
 लीउगोविंदेवाराह्यावनमालिनि॥प्रवालकीचुजंतेस्याच्चित्रमेखव

केपिच॥संप्रयोगकलाकेलौकासुकेसंप्रयोजके॥२४॥अंतेवासिनेष्टि
 धिचंडालेप्रांतगेपीच॥विघ्नकारिस्मृतोद्योरदर्शनेधिविधातिनि॥कामवा
 रीउकमनेस्वठेकलकियो॥वृषशृंगीनवेदेशीरीरोठेवकोदरे॥उ
 शलादन्यनिरव्याउमासिधिवुलिकाकयो॥कुटुकाजलयेलोःकथ्यतेरा
 उलादनि॥स्याहर्लिनीलाहाहुरिशरोचनासुच॥स्त्रिरतोचफलिन्या
 चदश्यतेवरवर्त्तिनी॥२५॥नषट्॥॥अन्यावस्यायाश्चपचेमुनिनेदेच
 नायिते॥जायानुजीविनदेउर्गतोतयोतके॥सरस्ववेधीस्यादल्लवेतसे
 रामेठेपिच॥कलानादरोलेवेकलविकपिजले॥२६॥॥इतिनांतवर्गः॥
 ॥॥॥॥श्रीसरस्वत्ये॥॥श्री॥॥॥॥॥श्री॥॥॥॥॥श्री॥॥॥॥॥
 ॥अविसर्गतिपूर्वदिस्तवर्गतरपचम॥स्तुतिलिङ्गजितःश्लोकःराकुनेशु
 शुजावह॥२७॥॥शुभमस्तु॥॥॥॥॥शिवायनमः॥॥॥॥॥

६३॥

अतिनाहोनौराष्ट्रवालनृलोपिच॥शिष्यंशुवेक्रियायोगेस्वयःक्रोधेबला
 ततौ॥२८॥रुपादयायांआनेर्षेत्तपोनातरुष॥त्रयालज्जाकुलठयोवर्षा
 विवरमेदसा॥२९॥पत्रि॥अपायोनिर्जलेदेशीनिपापेपिस्मृतोबुधैः॥उ
 तपःस्याऊरोवाद्येतपनेछागकेबले॥उत्तपोनागिनेयेस्यादष्टमोसेदिन
 स्पच॥३०॥कुतपोमाननेदेस्याकुटपोनिष्कुटेमुनौ॥विदपःपक्षवेरिवे
 विस्तारेस्तंवरारवयो॥३१॥उलपःस्तुराजेदेस्याजुलिन्यामुलपमतं॥उहु
 पस्तुल्लवेचंद्रेप्रतापःस्वितेजसौ॥३२॥रक्तपोरहसिप्रोक्तोजलौकायांउ
 रतपा॥जिह्वापशुनिमाजारेआध्रचित्रकयोरपि॥३३॥कार्यपःस्यामुनौ
 मीननेदेनूमौउकार्यपीपादपःपादपीठेदोपाडुकायांचपादपा॥३४॥अ
 नूपमहिषेविद्याज्जलप्रापेउवाच्यवृत्त॥आवापोनांडवपनेपरिहेपाल
 बालयो॥३५॥आहेपोनसंनोत्कष्टिकायालेस्तुतिषुस्मृतः॥ऐकोक्या

६४॥

पंढि॥ रूप स्वजावे सौंदर्ये ना एके पशु संवयो॥ जं याव तौ ना कारो आ का
 र श्लोक योरपि॥ ६॥ रिय स्यान्निदिते क्रूर रोपो रोप एवा एयो॥ सौम्य जन
 नेरि स्यात्सुपकारे न कीर्तित॥ ७॥ बुधः सुपस्पर्शन यो स्फुपवनपुद्गयो॥ के
 पकुपकगक्तधु मन्मागुणवसुयो॥ ८॥ तापोनितायेदवयोतापितु चरि
 तरे॥ रापः रापय आ क्रोरोत्रपुसिस करंगयो॥ ९॥ स्थापः स्पर्शानु तानिद्रा
 शयनाज्ञातमात्रके॥ नीपोधूली कंदेवे स्यात्तनीला शोके नधनिनि॥ १०॥
 गोपो यामौ धगो राधिसुतयो बध्वे नये॥ गोपी गोपाल महिला सारिवा
 रसिका सुचा॥ ११॥ हेपो विलंबे निदा यादं लाघे रणले बने॥ गर्वपिले यस्तु सु
 धाजे मना लेपने पुच॥ १२॥ तल्यं च रायनीये स्यात्तल्यमदृ कलत्रयो॥ कल्यः स्या
 त्रलपे न्याये रास्त्रे ब्राह्म्यदिने विचौ॥ १३॥ दपो हंश कारकसूर्यो वा षोर्न
 नजलोष्मणो॥ पुष्पविकारो ऊस्रमे स्त्रीणां च रजनी स्मृतं॥ १४॥ राधं स्या

कशिपुर्नक्त्या ठारने च पृथग् यो॥ १५॥ आ कल्यः कल्यने वेरो वि कल्यो न्ना
 तियरुयो॥ कठपिवल्लकी नेरे दुलो रुद्रगदांतरे॥ १६॥ मध्वबंध विषे रोड कठ
 पऊ रणी पुनः॥ विट सारिका यां ऊणयः पूतिगंधे रावे पिच॥ १७॥ कलापः सह
 वै बहै नृणीरे नृषणे हरे॥ पंच॥ प्राप्त रूपो बुधेर म्येय निरुपः स्वरुपवत॥ १८॥
 बडुरुपः शिव विष्णो धूण के सरटे स्मरे वृकधूपस्त सरलद्रव रुत्रिमधुप
 यो॥ परिवापस्तु पयु सौजल स्थाने परिछेद॥ १९॥ उपतापः स्वरयां स्यात्तु
 पगदयोरपि॥ अवलेपस्तु गर्व स्याद्देपने उषणे पिच॥ २०॥ विप्रलापो विरो
 धो क्ता वपार्य वचने पिच॥ वृषा कपिः शिवे रुहे ज्वलने च या कपि॥ २१॥ जग
 दीपाशशं के च सहस्रो शो प्र कीर्तित॥ परिके यो नये कंये पलापः त्रैलोक्य
 वे॥ २२॥ बीजपुष्पं मरुबके तथा मदन के पिच॥ हेमपुष्पं जपा पुष्पे चंमका
 शोकयोरपि॥ २३॥ नागपुत्रपुत्राग नाग के सरचंमके॥ पिडपुष्पं मशो के बीज

पायांचकुशे राये ॥ ६५ ॥ मघपुष्पचपिडामे नारेयजलयेरपि ॥ नलकुपिकपगर्त
 पुष्करियाचकप्यते ॥ ७॥ पया ॥ ७॥ ६६ ॥ नवेचा वामपुष्पस्कृतकेतककाराये ॥
 ॥ इति पातवर्गः ॥ फदिः ॥ रेफोरवरवर्णकथितकुपिते वाच्यवत्युनः ॥ शिफे मू
 लेतरुणां स्यादुवादिनां खुरेपिचा ॥ ६७ ॥ गुंफः स्याजुंफले बाहोरले कारचकी
 च्यते ॥ शिफाजटायां सरिति मासिकायांच मातरि ॥ पातवर्गः ॥ ॥ मंथः ॥ शिव
 दि ॥ पूर्वास्युः पूर्वजे सुस्यारमे प्राचि च वाच्यवतः ॥ विवेफले विवि कायाः प्रति
 विवेचमंडले ॥ ६८ ॥ डिबः स्यादि ॥ झीक्रा व्रीलौरेरंड पुष्पसे न नयो ॥ स्तंबो गुल्फे
 एादिना मप्रकांड दुमेपिचा ॥ १०० ॥ रां बः स्यात्सुरालाग्रस्तलोरकुंडलकक्षवौ ॥ ना
 विने चरवर्बस्तु रुस्वे संख्यातरेपिचा ॥ ११ ॥ के बूरां बूकगतयो ग्रीवामल कशंखयो ॥ १२ ॥
 जंबुसुमेरु सति घीपदुमविशेषयो ॥ १३ ॥ कंबिरं च रं खस्य खजकायामपि यते ॥
 रकी नवे स्रंजा काया फणाया मुरगस्य चा ॥ १४ ॥ रं की दारु हरिद्रायां देवदारु

हरिद्रयो ॥ वाबी उरो न नां बुधो लावा श्रीति क्तुं वयो ॥ १५ ॥ बत्रि ॥ कदंबमाऊ रुद्रा
 वनीपेपिनि कुरं बके ॥ कादंबः कलहिसर्पिर्दिजिबो जुजगे खले ॥ १६ ॥ गजा बा करि
 पिष्यत्यां गजा कंदस्ति नापुरे ॥ निव बोरोधसिस्केधे शिषरेपिकटीरके ॥ १७ ॥ हेर
 बोविधराजे स्यात्कासारे सूर्यगर्विते ॥ कनकः सायके नीपे नालिशा के कलं यति ॥
 प्रलं बोदैत्यनेरे स्यात्तासां पूरकरा खयो ॥ प्रालं बोहारनेरे त्रिपुषेपिपयोधयो ॥ १८ ॥
 गधर्बो मगनेरे स्यात्तुं स्को किल उरंगयो ॥ अतरा न वस्तुत्वे वजायनेरे वरेपिचा ॥ १९ ॥
 शोडबशीर्षवृत्ते स्यादुवादिन्या फलेपिचा ॥ नू जं बूररपि गोधूमविकंत फलेपिचा ॥ २० ॥
 रोवं बोन्नमरे प्रोक्तौ वाजिनां कलेपिचा ॥ ७॥ उरुस्ते क्रमे मेल कशुनोरपि ॥ रावदु
 पर्व चडवायो नागवस्य स्त्रियामपि ॥ राजजं बुस्तु जं बुनित्ये उरुर्जुरयो स्रता ॥
 वयो ॥ धूली कदंबो निपे स्यात्तिलिशे वरुणा दुमे ॥ २१ ॥ गोर रुजं बूर्गे धूमे त गो
 ररुवं दुले ॥ म्रं गार जं बूर्गे दुं वे कापि बा य फलेपिचा ॥ २२ ॥ इति पातवर्गः ॥ मेक ॥

नः स्यात्तयूषे श्रुके च न न रुत्रे च नातिविः॥ नृः पयि व्यास्तान मात्रे स्व नृर्वे धसि
 राङ्गिणि॥१४॥ श्रुयोगे श्रुनं हेमे नि नौ व्यान सह रुयोः॥ विनु शिवे प्र नो निवे
 शं नु ब्रह्मा ह तो हरे॥१५॥ देन सु कैतवे कल्ये डि नो बालि शपो तयोः॥ शं नो त्वां दे३
 तरे दते जं बीरे न रुणे पि च॥१६॥ कुं नः स्यात् कुं न कर्णे स्प सु ते वै रया पतौ व
 टा॥ राशि ते दे द्वि पां गे च कुं नं त्रि वृति गुणु लो॥१७॥ कुं नी उ पा ट्वा वारि पण पि
 ठर कर फले॥ ग र्जो नृ लो न के कुं हौ संधौ पर त सक ट के॥१८॥ जं नो ह न्वा वि का
 से च स्तं नः स्फु र्णा ज ट ल्व यो॥ रं ना क र ल्य रार सौरं नो वै ए व दंड के॥१९॥ स न सा
 माजिके घूते गो॥ ए म दि र यो र पि॥ रो ना का ति छ यो रु क्ता ह सूप न ग व न्द्र यो॥२०॥
 ना ति प्रा ण ग के रुत्रे च क्रो त श्रु क व र्त्ति नो॥ च क्रो त ना गे च क्र व र्त्ति नि जि मि ५६॥
 षो च॥ ना ति प्र धा ने क स्तु री म दे च क ति री तः॥२१॥ न त्रि॥ कर नो मणि बंधा दि
 क निष्टो ते त योष्टु को॥ कर नः सर ने चा षा प दे प्रो क्तो म गं तरे॥२२॥ रुप नः स्वर

ने दे स्यात्तरा का हृष्ट व नौ षधे वृषे॥ श्रेष्ठार्थे च वरा ह स्य पुठे रं ध्रे च क रा यो॥२३॥ स प जि
 श्रु क र म्या न कार स्त्रिया म पि वी द चा॥ या शि रा ना यो वृष न पु ग वे वृषे॥२४॥ व ह्न द पि
 ते ध्य नो के कु लि ना श्रे पि व ह्न न॥ उ लं नः क हुरे रु यो उ प्रा पि व ह्न ने पि च॥२५॥ नि कुं नः क
 पि तो दे त्वा कुं न क रा सु ते पि च॥ कुं सु नो हे म नि म रार ज ने च क मं ड लो॥२६॥ विष्टे नः प्र ति
 बंधे च वे द ने च प्र यु ज्य ते॥ वि श्रं नः के लि क ल रे वि श्रा से प्र ण ये व धे॥२७॥ विष्टे नो यो ग
 ने दे स्यात् वि स्तार प्र ति प न्न यो॥ रुप कां ग प्र ने दे च बंध ने दे च यो गि ना॥२८॥ क कुं नो रा
 ग ने दे पि वि णो गे र्जु न पा द यो॥ आ रं न सु त्व रा यो स्मा ड्य मे ध र ष्य यो॥२९॥ सुर नि श्रु प
 के ना ति फ ल व स त यो॥ गं धौ प ले सौर ने व्या ना ज्ज की मा न ने द यो॥३०॥ सु गं धो च म तो
 रु च वा च न सुर नि स्म तं॥ स ना ति स ह रो ज्ञा ता वा त्म नृर्वे ध सि स्म र॥ व र्मा नु पु न र
 वा यो पू वो किं चु के पि च डुं जि दि जे ने र्या अ रु विं डु त्रि के ध यो॥३१॥ वि द नो वा च य न
 त्वे वै र्ज न च यो तरे॥ ग र्द नो गं ड ध ने दे स्या ऊ र्ज न के र वे ख रे॥३२॥ ग र्द नो ग र्द नी तु ड रे
 ग जं ड वि शे ष यो॥ क ऊ प शो ना दि शो शा स्त्र प्र वे णा च प क स्तु जि॥३३॥ न च॥ अ व

षं न सुवर्णे च सं न प्रारं न योरपि ॥ रातुं न सुवर्णे स्यात् रातुं नो श्रमार्क ॥ ३५ ॥
 नोतवर्गा ॥ मे कविकं ॥ मरि वे मार माया च ॥ मानिषे धे व्यय मता ॥ किं वि तर्क परिप्र
 श्रे हे पे नि रा प्र कार यो ॥ ३५ ॥ द म सु द म पे दे डे कर मे द म ने पि च ग मो धू त प्र ने दे स्या द य य
 लो चिते ध नि ॥ ३६ ॥ क म स्त रौ पारि जा ते क्र म ॥ किं युरु पे श्व रे ॥ न मो बु नि ग ती नो तो ऊं दा
 स्य शि ल्यि यं न के ॥ ३७ ॥ हि मं सु ते उ व रै च च द ने पि हि मं वि ड ॥ र म कां ते र मा ल स्य र का
 शो क क मे स्म रे ॥ ३८ ॥ य मो दं उ धां हे सं य मे य म ने पि च ॥ श शी र सा ध ना पे हे नि त्य क र्म पि
 चो ध च्य ते ॥ ३९ ॥ क म श नो परि पा द्यो क म श्र ल न श्र क प यो ॥ हौ म म द ड कु ले स्या द त यो
 व स ने पि च ॥ ४० ॥ हे मं स्या न्म गे ल द्य र क र्म च करे पि च ॥ हो मा ध न ह री गौ के क म र्म स्या त
 र्म मा नि ते ॥ ४१ ॥ हि ति कां त्यो रु मा प्रो को हि ने श के च धा च्य व त ॥ ४२ ॥ आ मो रो गे त दि रो पे
 मो प के उ वा च्य व त ॥ ४३ ॥ का म स्म रे सि ला वे का म रे तो नि का म यो ॥ अ य यं त्व न्य तु ता
 या या सु प्र ह रे व्र ते ॥ ४४ ॥ य म स्या त्मे त के व द दार के हरि ते व ने ॥ प ठ दु मे प्र या ग स्य स्या म
 स्या म च वा सु लो ॥ ४५ ॥ अ न्न सू नो ग ना यो च त या सौ ल तौ ष थो ॥ नि वृ ता सा रि वा

७०॥

१९

इति शान्ता प्रिय गुण ॥ ४५ ॥ श्या मा नी त्या पि के श्या म म रि चे ल व र्णा ॥ त र ॥ व्या मो
 द म र के गं धे र्ग र यो मे नि धे य व त ॥ ४६ ॥ गु ल्मः स्त वे ली किं व द सै न्य यो सै न्य
 र रु गो ॥ गु ल्मः स्या दा म ल को ल व नि का व स्त्र वे र म सु ॥ ४७ ॥ जी ल्मः स्या त्या म रे क
 रे जा लो स मी रु का रिणि ॥ आ म स्त्र रे सं व स र्थे व दे रा श दि पू र्व कः ॥ ४८ ॥ जी
 मो ल्म वे त से रा नो दो रे वा पि ॥ व को र रे ॥ नौ म स्या न्न र के गारे आ मो मे ड प का
 ल यो ॥ ४९ ॥ नी म क्रो धे र वौ दा सौ धू मो न ग र ने द यो ॥ य धा स आ म ध नु यो रि
 धा का म व सं न यो ॥ ५० ॥ तो क्त व ले तो क्तो हरि ते च ॥ हरि यो के ॥ रु क्त उ का च ने वा
 दे र्व मे हो मे च यो रु पे ॥ ५१ ॥ ध र्म पु ल्ये य मे न्या ये रु ना वा धार यो रु गो ॥ उ य मा प्र
 म हि सा या चो पे चो म ति ष य पि ॥ ५२ ॥ ध र्म स्या दा त ये न्ना मे उ रु खे दा न स्य रि ॥ नि
 स रु क्त उ टि ले म दे जि ह्म त ग र या द यो ॥ ५३ ॥ सु स्त स्या त्के त के ध्या त्मे प्य लो सु लो
 ल्य के न्य व त ॥ नी ल्म स्त नी प ले रु द्रे गा गे चो नि रा च रे ॥ ५४ ॥ सु स्त ने जो ध यो न
 कं सु म ही रे न न स्य पि ॥ द स्त स्तु य ज मा ने स्या त दं नि चो र दु ता रा ने ॥ ५५ ॥

रामय मुविरोषे स्यात्कामदग्ने हलायुधे ॥ राघवे चासित श्वेतमनोकेषु उ
 वाच्यवत ॥ ५६ ॥ रामागनादिगुलिनोरामवास्तुकुष्टयो ॥ वामसवे
 प्रतिपे च द्विविधे चातिसुदरे ॥ ५७ ॥ पयोधरे हरे कामे विद्या दामा मुनि
 स्त्रिया वा मिश्रणी वडवोरामेनी करनीषु च ॥ ५८ ॥ निधिसंख्यातरे बुजये
 न के विउ जाले पिय ना नागो श्रयोरपि ॥ ५९ ॥ सोम ऊवरे पितृदेवतायां
 वस्तु प्रजे देव सुधा करे च ॥ दिव्योषधिरयामलतामसी वकपूरनीरे पुत्र
 वानरे च ॥ ६० ॥ नृमी स्त्रितो स्नानमात्रे वमिर्वा तो ऊताराने ॥ रश्मिरसो
 प्रग्रह च जामिस्वस्तु ऊलस्त्रियो ॥ ६१ ॥ नेमिस्त्रिकाया कृपस्य च क्रोवेति
 निरादुमे ॥ नेमः काले वयोगे तत्राकारे केतवे पि च ॥ ६२ ॥ कुमिलारगे पि
 डया वेगे न गप्रकाशयो ॥ ऊकटा वस्तु संकोचने खयोरपि किं किं ता ॥ ६३ ॥
 लक्ष्मी आरिव सपत्तिपत्तारो नाप्रियं गुणु ॥ कामी पलाशरा लया लोहमुखा
 मुदा दुता ॥ ६४ ॥ रामा शकु फलाया च शवायामपि वापि वा गुणौ ॥ बालोड

११॥

१२

नारतिसोमवहरी ब्रह्मरातिषु ॥ ६६ ॥ फंकंजिकापंकगडिका कंशा कनेदे
 पुचस्मता ॥ समावर्षे समउत्थे साधौ च सदरो न्यवत ॥ ६७ ॥ सीमाद्या वरि
 तो जेने मया हावे लयोरपि ॥ सुमातसी नाले काये निमाना निपरकतो ॥ ६८ ॥
 मातसी हेमवती हरिं कोर्त्तिकांतिषु ॥ रुमा सुग्रीवदारेषु विशिष्टलवणाकरे ॥ ६९ ॥
 मत्रिउत्तमो दुग्धिकाया स्याउ हृष्टे चोत्तमो न्यवत ॥ मध्यमः स्यात्स्वरे मध्ये मध्यदे
 शे च मध्यजे ॥ ७० ॥ व्याच्यवन्मध्यमात्तराका दृष्टरजः स्त्रियो ॥ कलिका अहर
 हंकर मध्यगुलीषु च ॥ ७१ ॥ अधमः ऊसिने न्यने प्रामो वसरे क्रमो विक्रमः क्रान्ति
 तिमात्रे स्याद्विक्रमः शक्तिसंपदि ॥ ७२ ॥ सैक्रमः क्रमले मय्यगारि च संचार
 यंत्रके ॥ निःक्रमो बुद्धिसंपत्तो निगमिष्टा ऊले पि च ॥ ७३ ॥ आगमः शास्त्र आ
 पाने विप्रमो त्रीतिहावयो ॥ संचरमः प्राधमेपि स्यात्सैवेगादरयोरपि ॥ ७४ ॥
 विक्रमोरत्नवृक्षे पि प्रवाले पत्रवेषि च ॥ आश्रमो ब्रह्मचायादि चैकेपि स
 रपि च ॥ ७५ ॥ मत्तमश्चान्यवन्त्ये श्रेष्ठसाधो यमोरपि ॥ नियमार्थं त्रणाय
 च प्रतिज्ञायौ च मयमे ॥ ७६ ॥ निगमो वाणिजे पर्यं किं देवदेवलि कथे नि

गमः स्यादपनिषदणिजोनापितेपिच। ७७ कलमोलेखनीयोरशालिकाहार
 केषुचातलिमं ऊहितल्येचं इदासेवितानके। ७८ परमस्यातुज्ञानेथय्यप
 रमपरं। ७९ नौ मस्तु दिनागसर्वष्टापतावपि। ८० पराक्रमो विक्रमेसासा
 मध्येद्योगयोरपि। उपक्रमः स्यादुपधाचिकिसारंनविक्रमे। ८१ जलगुल्मे
 जलावर्तनश्चो जलचतरे। मस्यपूः स्मृतोनागनिधिसंख्यांतरेषुचा। ८२ मयश्चक्रपगम
 स्तीकारसमीपागमनेपिच। नक्षत्रनेमिंजितांशोरवृत्ताचक्रवेद्येचिच। ८३ इतिम
 त्वर्णः। ग्रंथपयः। यः सर्वनानानिलयोऽज्यामौवी। मातृभूमिषु। धारक्रिदि
 विज्ञौदिवसेद्यौ स्वगसुरवसनोः। ८४ यद्विजयोजयतेविजयजयादुर्ग
 त्रिमंथयोः। जयंतितिधिनैदोमासस्वीपथ्यासुचस्मृता। ८५ चयः सप्त
 शोकारे मूलबंधेसमाहृतौ। नयोनीतौ द्धतनेदेशयः शय्यादिपाणिषु। ८६
 लयंत्रतिनयेद्योरेप्रसाम्ये तोयत्रिकस्यचामयः शित्पिनिदेत्यानाकर
 श्वनितरेपिच। ८७ लयोविलासेसस्येपेसाम्ये तोयत्रिकस्यचसंयोगवर्द्ध
 दिगायेगातयेगायनेपिच। ८८ कायः सदेवतेमृतौमिंधेलक्ष्यचवयोः।

७२

परमस्याप्रधानाद्योरेरेकोपितथोचते। ७९ उक्तुमंपुष्पफलयेस्त्रीरजोनेत्ररोगयोः। ज
 तिमंराचितेप्रोक्ते सिक्तकेलवणांतरे। ८० सुषमचारुसमयोसुषमापरमं कृतौ। सुषमः शि
 शिरेचारोसुषमपत्रगांतरे। ८१ पंचमोरागजेदेस्यात्पंचानामपिपूरणे। पंचमश्चतु
 रेद्वयेपंचमीपांडवस्त्रिया। ८२ गौतमः सावसिंदेचमुनिज्ञदेचगौतमी। रात्रिन्या
 मंबिकायांचदाडिमः करकैलयोः। ८३ गोधूमोनागरंगेस्याज्ञेषजब्रीदिज्ञेदयोः। व्याय
 मोदुर्गसंचारेयाथामेपौरुषेयमे। ८४ विशालोमस्तुप्रतीपेस्माद्धृतं गेवरुणेश्रुनि। आम
 लकां विलोमीच विलोमंचारद्वद्वे। ८५ गोलोमीश्वेतद्वयिंषड्वाचारयोषितोः।
 प्रतिमादंतैवकेस्याजजस्यानुज्ञतावपि। ८६ मयः। जदंगमः कपोनेकेनुपमः सुं
 दरेन्यवतः। सुप्रतीकस्ययोपायाजवेदनुपमापिच। ८७ अभ्यागमोतिक्वेधातेवि
 रोधाभ्युदमादिश्रुयातयामस्तुलीलेस्यात्परिचक्रो जितेपिच। ८८ दंडयाम
 स्तुकीनाशेदिवसेकंनसंनवे। सार्वजौमस्तुदिनागसर्वष्टापतावपि। ८९
 पराक्रमो विक्रमेसासामध्येद्योगयोरपि। उपक्रमः स्यादुपधाचिकिसारं

विरा

नक्षत्रे

जि

तथा

नविक्रमे ॥ ५॥ जलगुल्मे जलावर्ते कृपे जलवचरे । महापन्नः स्मृतो नागनि
 धिसंख्यां नरेषु च ॥ ६॥ नपं ॥ प्रत्युपगमः स्वीकारे समीपागमनेपि च ॥ नह
 वने निःशीतां शौरेवत्यां बध्वे क्वचित् ॥ ७॥ इति मांतवर्गः ॥ ग्रंथः ॥ यः
 सर्वनामनि नयोः ज्यामौर्वी मारुत्तु निबु । दुरक्ति विवर्ते नो दिवसेद्योः स्व
 र्गसुरवर्त्मनो ॥ ८॥ अदि ॥ जयोजयंते विजये जया दुर्गाग्निमंथयोः ॥ ज
 यंति तिथिदने देमासखी पथ्या सुवस्मता ॥ ९॥ अयः समूहे प्राकारे मल
 बंधे समाकृतौ ॥ नयो नीतौ दूतने देशयः शय्यादिपाणिषु ॥ १०॥ नयं प्रति
 जये घोरे प्रसूने कुल्लकस्य च । मयः शिल्पिनिदैत्यानां करने श्वनितरेपि
 च ॥ ११॥ लयो विलासे संक्षेपे साम्ये तौर्यत्रिकस्य च ॥ स्मयोगवैकृते गयेग
 तव्ये गायनेपि च ॥ १२॥ कायः सदैव ते मूर्तौ संघे लक्षस्वनावयोः ॥ कायो मनु
 व्ये तीर्थे पिसायः कागपराक्तयोः ॥ १३॥ दायो दाने यौतकादिधने सोलुठनाधि

७३॥

उव

ते । विचित्रव्यपि रद्वेदाय मादुर्मनीषिणः ॥ १४०॥ प्रायश्चानशाने मृत्योर्नुत्य बाहुत्ययोरपि
 पियं पात व्यपयसो पेयाश्चाणा सख मडयो ॥ १४१॥ स्वेयो विवादस्य पदेति ते तदिपुरोहिते । पीयुः कालेव
 वौद्य केषुः न तु दयेदयो ॥ १४२॥ मयुसुरंग वदने मृगेपि मयुरिष्यते । मसूको धेठतौ दैत्ये मृत्यु
 मरणदेवयोः ॥ १४३॥ दस्फस्तेने च शत्रौ च जनुप्राणाग्नि धाटु । च न्यं वन च वेव न्यावनवादि
 समुदयो ॥ १४४॥ जयं ददे परिवादे संयुगेपि च । ज न्यः स्याज्जनेना सामन्योत्तिना समानयोः ॥ १४५॥
 पाण्यपानीयके निघे प्रज्यः स्वसुरवंधयोः । दायो बितीत कतरौ दत्त व्येदाय मन्यवत् ॥ १४६॥
 वीर्यं शुक्रे प्रज्ञावे च तेजः सामर्थ्ययोरपि । अयं स्वा मिनिवैश्ये च कार्यहेतौ प्रयोजने ॥ १४७॥
 स्वरः स्तरे तन्मियायां स्यस्या दोषधनपि । शौर्यं चार नरीशत्यो वयः सरवरे लययो ॥ १४८॥
 शुद्धं रदस्फपस्ते च गुह्यः कमरुदं नयोः । सेधं शैलानां तरागेय सोठव्येषु प्रचकते ॥ १४९॥
 शुद्धं पुरीषमागेपि न वेदस्वैरपहयोः । गृध्रा उशाखा नगरेय च स्वेक फदीरितः ॥ १५०॥
 योग्यं प्रवीणो योगादुपिरशक्तेः फुवा च वता योगमृदाख्य नेष्ये योग्या चासाक्ष्ये पिताः ॥ १५१॥
 ॥ १५२॥ नाग्यं शुजासकविधौ स्यात् शुजाशुन कर्मणि । नयं सैलै पाकं बिडाख्य ल
 वरोयवद्वारेपि दृश्यते ॥ १५३॥ पथ्यं पजे वने ये च ज उरुमविकारयोः नयं मये

भवपनेद्यवद्योग्यनाविनोः॥१४॥ कर्मरंगतरौ नव्योनव्याककार्योः॥ रिक
 रणो मयोः॥ सैव दिव्यं नवगके दिव्यं वल्लो दिवि नवेन्यवत्॥१५॥ अमल
 क्यो मता दिव्या मव्यवाम प्रतापदायाः॥ मेव प्रोक्तुशारे च से वा हे पुनरन्य
 वत्॥१६॥ गोपोदा मासुते गोपोरक्षणीये निधेयवत्॥ रूपस्या दादुत स्वर्णरजते पिब
 ॥१७॥ रूपं प्रशस्त रूपे उवाच्यवसमुदीरित॥ इत्यत्राढो करेण वा उ नवेदे त्यावत्
 रो कौ॥३१॥ नन्यं युक्ते चल बवे चाध्यमि द्वादि योग्ययोः॥ चिच्छं सतक चै ये स्यान्नि
 त्या सतक चिता वपि॥३२॥ चैयमायतने युद्धे विवेचोद्देशपादपे॥ देयो सुरे सुरायां उदेया चंदोष
 धावपि॥३३॥ च्यो हामे नृतो नृया स्यादं नान नवे धमे॥ नच्यं चरपथे तथ्ये कते तदति
 चान्यवत्॥३४॥ तपो लोका चरे सस्यो निचं उ मर ते ध्रुवे॥ नृत्य उ वेतने वयो मा
 ल्यं माला प्रसूनयोः॥३५॥ वल्यं प्रधानं च तो स्या वल्यं बज करे पिब॥ कल्यं संके
 प्रनाते च कल्यो नीरोग दशयोः॥३६॥ कल्या कल्या वाचिस्या क्का के ये चोष्टे शोभा स्थान
 दंबय निपिस्मृता शाल्यं शं कोशरे वंश कं बिकायां च तो मरे॥३७॥ शलश्च कथितः श्वा
 विमदन क्का मयोरपि कल्यः॥ कलो रुवे माये कल स्याति हि ते पिब॥३८॥ कल्य

१४॥

स्यात्का कसे चाष्टशोणी स्तथा मिषेषु चापयः प्रणाली सरितोः॥ कल्या जा वैति कौषधौ
 ॥३९॥ वेश्यं वेश्या गृहे वेश्या गणिका यामुदीरिता॥ आस्यं बक्रे वक्र मध्ये स्थितो वा
 म्या च विष्कृता॥४०॥ ताम्रं तौर्यत्रिके नाद्यु मस्य शस्ते फले गुणो॥ कस्य मध्ये उरंगा
 णां कस्य मध्ये कस्या दयोः॥४१॥ कास्यं उ तेज स इवो वाद्य निद्या नपात्रयोः॥ मी स्या
 मी नांतरे मी ने विराटा निरव्यया दवे॥४२॥ तिष्ठ पुष्ये कलौ धात्र्यां तिष्या पुष्य व
 दिष्ये ते॥ दूष्यं उ दूषणीये स्यात् दूष्यं वस्त्रे वतुद्दे॥४३॥ वीक्ष्यं उ विस्मये दश्ये वी
 द्यो लासक वाजिनोः॥ ताक्ष्यः स्याद श्व कणख्य वृक्षे रथ उरंगयोः॥४४॥ ताक्ष्यं रिमांज
 ने ताक्ष्ये गिरुडे गरुडाग्रजे॥ लक्ष्यं शरव्ये संख्यायां लक्ष्यं शुभ निमं मतः॥४५॥ या
 म्या वाच्यां नरण्यां च वा म्योगस्ये च चंदने॥ इज्या दाने धरे चायं सिंगे चैवो गुरो म
 तः॥४६॥ ब्रह्म पयदिने प्रोक्ता वगमि स्तान योरपि॥ शय्या तल्ये शरुं फे स्यान्ता याशं
 वरीधियोः॥४७॥ कन्या ऊमारिकानाये रौषधी राशि ने दयोः॥ कक्ष्या बृहतिका
 यां स्यात्कां च्यां मध्ये न बंधने॥४८॥ इम्यादीनां प्रकोष्टे च कृत्यं विदिष्ट कार्ययोः॥

तस्यापि देवता ने देह्यास्तया दिष्टुस्मृताः ॥४९॥ वंध्या उरौ लवल्यां च विंधो व्याधादिने-
 दयोः । संध्या पितृ प्रसूना घोश्चिंता मयदियोरपि ॥५०॥ प्रतिज्ञायां च संध्या ने संध्या च-
 ऊसुमांतरे । छाया स्यादा तपा नावे प्रतिबिंबार्कयोषितोः ॥५१॥ पालनोक्तो च योः-
 कांतिसहो नापंक्तिषु स्मृताः ॥५२॥ क्रिया कर्मणि चेषु वा संकरणे संप्रधरणे ॥ आरं-
 भोपाया शिद्धा वाचिकि सा निष्कृतिषु पि । माया दं ने न पायां च मायः पीतां वरे कुरे
 ॥५३॥ त्रया त्रिवेद्यां त्रितये पुर ध्या सुमता वपि य त्रिविजयो स्यात्तये पाये जीयां
 त्रिविजया तिथौ ॥५४॥ विजयं प्रणतौ प्राक्कुः शिद्धायां विनया पुनः । सत्यः शपथा
 चार काले सिधांत संविदोः ॥५५॥ विषयः स्यादिदिया येदि शे जनपदे पि च । गोच-
 रे च प्रबंधो यस्य ज्ञाता स तस्य च ॥५६॥ अनयो व्यसने देवे चाशु ने चापदि स्मृ-
 तः । सत्रं स्रमवाये स्यात्सृष्ट्या विबले पि च ॥५७॥ प्रणयः प्रेम्नि विश्रं ने यात्रा प्रसर-
 यो रपि । लवलयां कंठरो जे स्यात्तल यं कंठरो पि च ॥५८॥ मलयो देश आरा मे शौ-
 लांशे पवतिंतरे । तलया त्रिवृतायां स्याद्विस्मयो हुतवे गयोः ॥५९॥ प्रलयो मरु-

यः ३

१५॥

कल्यांत मूर्ध्निषु प्रयुज्यते । अजयं स्यादुशीरे च पथ्याया मत्तया नयां ॥६०॥ निर्जये वा स-
 वत्सोक्तं हृदयं मानसोरसोः । जडयो मुदयः पूर्वपवर्ते चोन्नता वपि ॥६१॥ प्रत्ययः शपथे रधे
 विश्वासा चारहे तुष्टु । प्रथितत्वे सत्तादौ चापधीतज्ञानयोरपि ॥६२॥ अत्ययो तिक्त-
 मे दंडे विनाशे दोषत्रययोः । आशयः स्यादति प्राये पन साधारयोरपि ॥६३॥ निका-
 यो नितये लेखे सदेता नो मुच्यते । एकार्थता जिनि वदे । परमात्मनि चेष्यते ॥६४॥
 हे त्रियं हे त्रजट्टे परदाररते पि च । अन्यदेह चिकित्सा र्दे साध्ययोगे च जानते ॥६५॥
 कषायोरसत्ते दे स्यादगरागे विलेपने । निर्यासे च कषायोपि सुरतौ लोहिते न्यवत-
 ॥६६॥ आम्नायः संप्रदाये स्याद्वेदोऽस्यासे च संयतौ । कुलायः पट्टि नितयस्त्वनयोर्नी-
 टवत्तनः ॥६७॥ उपायसा मने दादौ उपायः स्यादुपागतौ । पर्यायस्तु प्रकारे स्यान्निर्मा-
 णे वसरे क्रमे ॥६८॥ संज्ञायः संनिवशे च संस्थाने विस्तृतौ गणे । व्यवायः सुरतं तर्धैव

स्त्या

बायं तेजसि स्मृतं ॥ ९२ ॥ शालेयं शतपुष्पायामाहुः शास्त्रं चोचितं शैलेयं सिंधुत
 वलेतालपण्यं च शैलजे ॥ ९० ॥ चंचरी केतुशैलेयोगांगे योजाकवी सुते ॥ कसेरुस्व
 एमुस्तेषु गंगेयमिति कथ्यते ॥ चांपेयश्च पकेस्वर्णे किंजल्के नागकेसरे ॥ ९१ ॥ का
 लेयोदैयं नेदे स्यात्कालेयं कालखंडके ॥ ९२ ॥ बालेयो गारवक्ष्यं खिरे बालहिते मृ
 दौ ॥ आत्रेयो मुनि नेदे स्यादात्रेया सरिदंतरे ॥ ९३ ॥ आत्रेयी पुष्पवत्यां च पानीयं
 पेयवारिणे ॥ ऐलोयमेणी च मद्ये रतबंधांतरे स्त्रियाः ॥ ९४ ॥ अश्वीयमश्व
 संघाते श्वीयमश्वहिते न्यवत् ॥ इन्द्रियं च रुषी के स्यादिन्द्रियं रेतसि स्मृतं ॥ ९५ ॥
 जवन्मंचरमेति श्रेष्ठं जवन्मंगदित न्यवत् ॥ वदान्यो दानशौडे स्याद्वदान्यश्च
 रु ॥ ९६ ॥ नाषिणि पंजनी मेघशष्टे पिधनं दंबुदशक्रयोः ॥ ब्रज एव ब्रजसाधौ स्यात्तद्वृद्धे ॥ ९७ ॥
 शनैश्चरो ॥ ९८ ॥ ब्राह्मण्यं ब्राह्मणवस्या समुदेपि विजन्तनी ॥ क्षीय एवमाहुर्विशिदे केशश

७६॥

र्षकयोरपि ॥ ९९ ॥ हिरण्यमरुयेद्रवे वराटे स्वरितसोः ॥ सौकर्यं स्यादनायासे त्रिया
 यांश्च करस्य च ॥ १०० ॥ स्वश्रुये दिवरे स्यात्तेषु दार्यः स्थिरशैल्योः ॥ प्रकीर्यः श्रुति करजे वि
 तिकीर्येति वाच्यवत् ॥ १०१ ॥ सौरन्यमाहुः सौगंध्ये चारुत्वे गुणगौरवे ॥ नेपथ्यं रंगक्षमौ स्या
 त्नेपथ्यं च प्रसाधने ॥ १०२ ॥ आतिथ्यमातिथेये स्यादातिथ्यश्चातिथावपि ॥ सामर्थ्यं योग्यता
 शक्त्योरप्यं पुत्रयोर्मते ॥ १०३ ॥ कोलच्यमनुतापे स्यादयुक्तकरणेपि च ॥ लौहित्यः साग
 रे व्रीहौ ॥ आदित्यस्त्रिदशैरवौ ॥ १०४ ॥ पौलस्त्यो रावतो श्रीदेवो चिच्यं सत्ययोग्ययोः ॥ प्रसा
 व्यमनुकूले स्यात्प्रतिकूले च वाच्यवत् ॥ १०५ ॥ अवध्यमधर्मे स्यादनर्थक्यं च न स्यपि ॥
 एण्यो संमते प्रोक्तो ह्यनिनाषविवर्जिते ॥ १०६ ॥ शांडिल्यो मुनि नेदे स्यात्सात्तरे पावकां
 तरे ॥ मांगल्यं स्त्रीयमानस्यात्तद्विले ॥ १०७ ॥ स्वमस्तुरके ॥ १०८ ॥ मांगल्यं दक्षिणं मनो ज्ञेयं
 धेयवत् ॥ मांगल्यं रोचनायां च प्रियं गुणतपुष्पयोः ॥ १०९ ॥ अधः पुष्पी शमी सुतैरुत्त
 रं शमी सुतैरुत्तं वचा सुतं ॥ अधः पुष्पं प्रगजं स्यादधः पुष्पा निम्नगादिनि ॥ ११० ॥ पारुष्यं परुष

वे स्यादनेनैकैः सगीः पतौ। पारुषोपपुजिष्यः स्यात्सहायेदस्तस्त्रके। ८२। स्व
 तन्त्रे तु जुजिष्यात्तु दासी गणिकयोर्मता। चरुष्य के त के पुंडरी कवृद्धे रसोजने
 १२०। कुलस्त्रिका सुन गयोश्चरुष्याद्विदिते न्यवत्। जटायुगुण्डुलतरो जटा
 युर्विहगांतरे। १२१। ऊर्णयुः कृणन्तं जे स्यान्मेषकं वन मेषयोः। देवयुर्दार्मिके रव्या
 तो देवयुर्लोक्या त्रिके। १२२। मृगयु ब्रह्मणि प्रोक्तो गोमायु व्याधयोरपि। सुवर्ण
 र्ज्वलनो नातु सुवर्णः शशलाक्ष नो। १२३। शरणा वारिदे वा ते हि पण्यः सुरते तनो
 । तपस्या ब्रत चर्यायां तपस्यो मासि फाल्गुने। १२४। हरस्या निम्नगान्ते दे गोपनीये तु वा
 च्यवत्। परस्याक्षीरका कोत्यां पयोदित न वे न्यवत्। १२५। पयस्यादुधिकायां तु स्व
 र्णाक्षीर्या च कथ्यते। स्यादहित्या मरो जे दे गो तमस्य च योषिति। १२६। शिवत्यां तं
 गलीदं तीगुडुचित्रिपुटासु च। अतिष्ठा का त्रिंशसोरतिरव्या नामशो तयोः १२७।
 १२७। द्वितीयातिथि निपत्योः पूरण्यामपि च द्वयोः। नादेयी नागरं जे स्यात्तु पायां

१२७।

जलवेतसे। १२८। नृतिजम्बां जयायां च कांयुष्टे पिम मायते। यच॥ तवे दनुशयो द्वेषे पश्चा
 ता पातुबंधयोः॥ १२९। विदंस्तु पशयंधीरा वस्त्राने त्रं त के पिच॥ स्मृतः स मुदयो वंदे संयु
 जे स मुप क्रमे॥ १३०॥ प्रतिश्रयः सन्नायां स्यादाश्रये पि प्रतिश्रयः॥ १३१। स मुध्रयः स्यादुये
 धे विरोधे च स मुश्रु यः॥ १३२। दुरणमयो लो क धातौ स्यात्सुवर्णमये न्यवत्। त्र वश्यायो
 दिते गव्ये स मुदायो गणे युधि॥ १३३। परिव्रायो जले स्त्राने परिहृद नि तं वयोः। संपरायं समा
 के स्यादापदुत्तरका लयोः। अनिरामयो न्यवत्कल्ये स्यात्तडिक्के निरामयः। समाह्वय स्यात्संग्रा
 मे द्यूते च पशुपक्षिनिः। १३४। माह्वनयो स्याद्विहारे स्यात्तीर्थेषु परमात्मनि रौहिणे यो जवे
 द्धमेरे वतीरमणे बुधे। १३५। पौरुषेयो विकारे स्यात्पुरुषस्य पदांतरे। पुंससमूह वधयोः
 पुरुषेण हते पि च। १३६। नागधेयं स्मृतं नाग्ये नागप्रत्याययोरपि। बिलेशयो मृषिके
 स्यात्तु जं गे पि बिलेशयोः। १३७। जलाशय मुशीरे च जलाधारे जलाशयः। चंद्रोदयो
 वितानो स्यात्तथा चंद्रोदयो षधौ। १३८। फलोदयो स्यात्त्रिदिवे लो जे पि च फलो

दयः॥५॥महोदयःकन्यकुञ्जेष्याधिपत्यापवर्गयोः॥स्वलोच्चयस्तुसाक
 ल्येगंउपनवरंडयोः॥१०॥गजानांमध्यमगतेस्तुलोच्चयउदादतः॥धनंजयोर्जुनव
 द्भौकञ्जतेदेहमारुते॥११॥नागंतरेचापमयंदक्षिणप्रतिकूलयोः॥माजातीयःस्म
 तःशुरेविहातेकायशोचने॥१२॥तंडलीयःशाकतेदेविडंजनरुताययोः॥वृणशुन्यम
 द्भिकार्यकेतक्याश्वफजेमती॥१३॥महामृत्युमहावैस्यासजरागमणावपि॥इतिप्रि
 यारारेवसोतीपवृद्धेइतिप्रियः॥१४॥अंतरायास्तौअमिशयायीपिनकानकैतौ
 उपकाय्यरिजमज्जन्कपकारोचितेन्यवत्॥१५॥यथा॥उधकाजियमितेतत्तुडधाने
 दुधफेनके॥तैवेमवच॥नीयारव्याप्रवाचेचप्रवक्तरी॥१६॥कालातुसार्यकाले
 येशैजेयेशिशिपाडमे॥वृषाकपायीश्रीगौयेर्जिर्वंसांचशतावरौ॥१७॥यपद्म
 कडमनीयमुपस्तेयेधौतांशुकद्ये॥विष्कक्सेतप्रियालक्ष्मात्रायमातेषध
 वपि॥१८॥इतियांतवर्गः॥अधः१२३॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥२४॥२५॥२६॥२७॥२८॥२९॥३०॥३१॥३२॥३३॥३४॥३५॥३६॥३७॥३८॥३९॥४०॥४१॥४२॥४३॥४४॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥५६॥५७॥५८॥५९॥६०॥६१॥६२॥६३॥६४॥६५॥६६॥६७॥६८॥६९॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥७६॥७७॥७८॥७९॥८०॥८१॥८२॥८३॥८४॥८५॥८६॥८७॥८८॥८९॥९०॥९१॥९२॥९३॥९४॥९५॥९६॥९७॥९८॥९९॥१००॥

१८॥

५१

तयोः॥स्वःसुवेनिर्जराचापिः॥स्वर्णेकामरूपिणि॥१२॥श्रीवैषरचनाशोनाचारीतीसरत्न
 वौलक्ष्म्योत्रिवर्गसंपन्नौवेषोपकरत्नमते॥२०॥प्रपशरीरेनगरेधर्मानुखनारयोः॥२०॥रदि
 अरंशीघ्रेचचक्रांगेशीधगेपुरंनेयवताकरोवर्षपलेपालौश्रुडाप्रमथरस्मिपु॥२१॥स्वरंस्याज
 र्दत्तेदेववाडेतीक्ष्णाग्रकेपिचागरोव्याधायुपविषेविषेचकरवणेगरं॥२२॥चरोदूतप्रजेदेस्या
 ग ५ रेजंमयोश्चनेनरंरुमकपूरेनरोजेमानवेर्जुने॥२३॥परस्यादुवमानात्मवैरिदूरेषुकेवले॥प
 रमव्ययमिच्छंतितरोतिशयनारयोः॥२४॥वर्षीष्टेदेववैतेदेर्वरोजामातृसिंजयोः॥श्रेष्ठेन्यव
 त्पशवृत्तौवरंकडमीरजेमती॥२५॥वरेतीष्टेदेवनात्मवैरिदूरेषुकेवले॥परमव्ययमिच्छंतित
 रोतिरीत्रिफलायावरप्रौक्ताशतावर्यावरीवरं॥अव्ययंनुमनागिष्टेत्तरोदध्यग्रवालयोः॥२६॥
 स्वरोकारादिमात्रासुमध्यमादिपुचधनोउदात्तादिषुप्रिप्रोक्तस्वरोनासासमीरणे॥
 २७॥शरंनारेशरकांडेशरस्तेजनकेपिच॥धरस्तुशैलेकपासैस्तुलकेमठाधिपेपिच॥२८॥
 धारामेदसित्तुयांचस्त्रीणांगनशियेपिच॥हंनारेहरोमेवेदरःसाधुसगर्तयोः॥२९॥

१९॥

२०॥

२१॥

२२॥

२३॥

तलोपने

कंदरे उदरी मांडरी पदपेदि राबयं ॥ सुरः स्यादेद नख्ये को किलारये च गोक्षुरे ॥ ३१ ॥ पुरं पा
रलि पुत्रे स्यात्त गहो परिगृहे पुंरं ॥ पुरं पुरी शरीरे च युगुलौ कपितः पुरः ॥ ३२ ॥ पुरा वयं
रव किले रुरः को तन दने शफे ॥ सुरोद वे सु राम ये च पके पिसुरा क्वचित् ॥ ३३ ॥ का
रो वधे निश्वये च तालो यत्ने यता वपि ॥ कारस्तु पारशौ ले च कार हस्तो मने वके
॥ ३४ ॥ बंधने बंधनागारे हे मकारिक योपि चार प्रिया लवृहे स्यात्त गतौ बंधाप सपथो
॥ पारं पर तटे प्रांते पारी पात्री परा गयो ॥ ककरी पूरयो पारी पादस्वां च दंतिनः ॥ वारः
स्तुर्या दि दिवसे दारे वसर वंदयो ॥ कुबज वृहे हरे वारो सीधु वारस्य नाड्यो ॥ तारो
मुक्ता दिसं शुद्धौ तरणे शुभौ किके ॥ तारं च रजने सुचस्वरे ण न्यत दी रितं ॥ रुद्रा हि
मध्ययो स्तारा सुग्री वगुरु योपितो ॥ बुधदे व्यो मता तारा शारः शबलयां तयो ॥ त
रस्तु वी वधे स्वर्णे पलाना मयुत द्वयो ॥ मारो मृतौ वषे मं गेमारी चं यो जन ह्ये ॥ स्पा
रु स्याद्विकरे स्मारः कका हे शु बुद्धे ॥ शरोर सां तरे धूर्तै लवलोका च तस्मिन् ॥ हा

ने ७

॥ ७५ ॥

धे ७

रो मुक्ता वलौ दे द्यो प्यारः हितिसु ते र्क जे ॥ आरा चर्म प्र ने दि न्यां तर स्तर्ण क
नीरयो ॥ मारो बले मज्ज नि च स्थिरां शे स्याये च नीरे च धने च सारं ॥ चरे न्या वसा
रमुदाहर ति दारं पुन निर्गमने न्युपाये ॥ पुरो जल प्रवा हे स्या ब्रण सं शुद्धि वा
द्ययो ॥ कूरस्तु कठि ने घोरं नृशं से व नि धेय वत् ॥ शूर शार तटे स्तये चो चो
रस्तु गंधयो ॥ वीरी कछा टिका शिख्यो ॥ खैर स्व छंद मंदयो ॥ तीरं तरे त्रपौ तीरः सी
रस्तिकरे ह ले ॥ चीरं तु गोस्त ने वस्त्रे चू डायां सी स के पि च ॥ जीरु खडे वणि कू प्र
ये नीरस्तो य विवौ लयो ॥ हीरं दुग्धे च नीरे च कीरो ज न पदे शु के ॥ गौर पिते स
ले श्वे ते वि शुद्धे चा न्ति य वत् ॥ गौरं तु विशदे पद्म के सरे सित स र्ष पे ॥ गौर शशि
नि गौरी तु नमिका क न्ययो स्मृ ता ॥ रो च नीर ज नी पिं गा प्रियं गु वस्तु धा सु च
॥ नदी ने दे च गौरी स्यात्त वरुणस्य यु योपिति ॥ पौरं तु कर्तृ ले पौरः स्मृत पुर त वे म
वत् ॥ वरं शरीरे का स्मीरे वे रं वा त गणे पि च ॥ घोरं नी मे हरे चो मै रस्तारो लघु पुंरं

गयोः॥ दोरा लमे चरात्रये र्दशास्त्रे र्वातिदोरपि॥ दीरापि यत्निका लक्ष्मो दीरः शंकरवर्च
 सोः॥ गोत्रं नाम्नि कुले हेतु कानने चित्तवर्त्तनोः॥ संतावनीये बोधे पि गोत्रः शोणीधरे मतः॥
 गोसमदुत्तवोर्गोत्रागात्रमंगे कले वरे॥ स्तंबेरमा गजिं द्वादिवि तागे पच समी रितं॥ पत्रं स्या
 द्वाहुने पले पद्मे च शरपक्षिणं॥ पात्रं उजाजने योग्ये पात्रं नीरदयो तरे॥ पात्रं नाद्यादो
 पले च राजमंत्रिणि चेष्यते॥ योत्रं वस्त्रे लुखाग्रे च श्चकरस्य हस्तस्य च॥ चित्रं स्यादकु
 तात्वे र्व्यतित्तकेषु विहाय सि॥ चित्रेषु पणिगो दुवास न वा दंतिका सुच॥ सहासरे
 दिने दे च कर्बुरचा निधेयवत्॥ चैत्रं मत क चैत्रे स्यात्तु चैत्रो तासा डिने दयोः॥ वृ
 त्तोरि पौ वने धांते शैले शक्रे च दावै नैवे॥ सत्रमा छादने यज्ञे सदा दाने च कानने॥ सूत्रं
 उस्त चना मंथे स्त्रं तं उच्च वस्तयोः॥ मित्रं सु रुदि मित्रो के शास्त्रं ग्रंथ निदेशयोः॥
 मात्रं वा वधुतौ कार्त्त्ये मात्रा कर्त्तु विस्तपणे॥ अक्षरा वयवे वृत्त माने स्मे च परि
 छेदे॥ शस्त्रं तोडास्त्रयोः शस्त्रा बुरिकायां च विश्रुता॥ अस्त्रं प्रहरणे चापे वक्रं

॥८०॥

छंदो तरे मुखे नेत्रं मंथ गुणे वस्त्रे तरु मूले च लोचने॥ नेत्रं रथे च नाद्यां च नेत्रो नेतरि
 चेद्यवत्ता हेत्रं शरीरे केदारे सिद्ध स्थान कलत्रयोः॥ शुक्रोरेतसि पीयूषे पटवासे पिस्तु च के
 मंत्रो वेद प्रज्ञे दे स्यादेवादीनां प्रसाधने॥ शुभ्र वादे च तोत्रं तु प्राजने वैष्णवे पि चातंत्रं कु
 दुंब हत्ये स्यात्कारणे च परिछेदे॥ शास्त्रे प्रधाने सिद्धांते तंतु वाये परिछेदे गदोत्रमे तथा
 हि साधनोपाये श्रुति शास्त्रां तरे पि च॥ इति कर्त्तव्यतायां च तंत्री वीणा गुणे तनोः॥ शिरा
 ममृतायां च छत्रमातपवारणे॥ अत्रामधुरिकायां स्यात्कुसुम वरुणिलिघयोः॥ चक्रोगणे
 चक्रवाके चक्रं सैन्य रथांगयोः॥ ग्रामजाले कुलारनस्प नांडे राक्षस्योरपि॥ अंतस्तामपि
 चावत्ते चक्रस्य म्लेच्छ वेतसे॥ चुक्री चांगेरिकायां स्यात्तदृक्षा म्लेच्छ मिषते॥ शुक्रः का
 येन ले ज्येष्ठे शुक्रं रेतो हिरोगयोः॥ छत्रं शक्रो महेद्रे स्यात्कुटजार्जुन रुद्रोः॥ न
 क्रः कुं नीरके नक्रं नासाया मग्रदारुणि॥ वक्रः स्यात्कुटिले क्रूरे पुटे नेदेशे नैश्वरो
 अत्रमालंबने प्रांते परिमाणे पलस्य च॥ प्रांते पुरस्तादधिके प्रधाने प्रथमार्दयोः॥ उग्रः
 श्चक्रा सुते ह्यत्रा तश्री कंठे चो कटे न्यवत्॥ उग्रावचा छिक्कि कयो र्वग्रो व्यासक्त आकु

ले। नम्रं स्पामंगले हे निमुक्त के करणांतरे ॥ नशेरुवेषरामचरे मेरुके देव के ॥ इति जा
 संतरे नशे वाचव छे साधु नो ॥ नशमंदा किनी रास्ना चत्तानं तासुक धर फले ॥ हुरु
 स्यादधम कर रक्षण लेषु वाचवत ॥ हुरु वेश्या नरी के रकारिका सरदासु च ॥ चौ
 गरी बृहती हिंसा मक्षिका मात्र के पुच ॥ दौरे मधु निषानी ये वध्रत्र पुचरत्रयो ॥
 यध्रः स्वर्गो तरे यधो वाच च्चाथ लुब्ध के ॥ रोध्रः सांबर के रोध्रम परा धेपि किंचि
 वे ॥ नीबू निंबे वली के धोवती नेपि कानने ॥ राध्रमुदिष्टमुच्या ते तथा स्यादुप
 वत्तने ॥ लक्ष्मणारव्या तमा नीले पापमौ तपनादि नो ॥ चंद्रसुधांशुक रिकै पि
 ध्रस्वर्णवारिषु ॥ इद्रः राची पतावंतरात्तन्यादित्ययोगयो ॥ इद्राफलिज के मी
 इवन काननयो मदी ॥ गुद्रस्ते जन के गुंरा प्रियंगो नद्रमुक्त के ॥ केवत्ती मुस्त
 के चापि रोरे नाघर सांतरे ॥ रोरोति नीषणे ताब्रे रोरी तिस्कंद मातरि ॥ उरोज बेज
 वावृ छे उरोजन पदी तरे ॥ पुद्रो दैत्य विशेषे नु नेदयोरति मुक्त के ॥ चित्रे नमो पुं ॥ ११॥
 डरी के पुद्रा स्या नीबू वं तरे ॥ वद्रो रिकंदं नोति बाल कामल के पुच ॥ वज्रागु

इचिकायां स्यातां मंशुलो रुणे न्यवत ॥ तीव्रमत्स्य कदुक नितां ते धन्यवन्त ॥ त
 वाच कदुरो हिण्यो आसुरी गंधर्वयो ॥ अन्नः कोले शिरसि जे चास्त्रमश्रुलिशो लिते ॥ द
 स्नः स्वरे चाश्विनयोर्धस्त्रो दिवस हिंस्त्रयो ॥ वास्त्रोपि दिवसे वास्त्रं मंदिरं च चतुपथे ॥ शी
 ध्रुं नग तौ प्रादुश्चक्रांगो शिरयोरपि ॥ व्याघ्रो द्विपि निविस्त्रा तोरकैरंड करंडयो ॥ व्याघ्री
 निदिग्धिकायां च श्रेष्ठे स्यादुत्तरस्थितः ॥ अन्नं नजः स्वर्गं बलाहकेषु शुभ्रं प्रदीपे धवले
 न केच ॥ बभ्रुर्विशाले नकुले हशाना वजे मुनौ मूलिनिपिं गले च ॥ शिगुः शोभा जनेशा
 के सरुजलिश कोपयो ॥ स्वरुर्वजे धरे चाले पूषे रवद्वेपि चत्वरु ॥ चरु नौडे च हव्या ने न
 स्वरुर्देते हरे दर्पे हयेशे ते तु वाचवत ॥ चरु नौडे च हव्या ने नरुर्न करिकां चने ॥ गुरुर्नि
 पेकादिकरे पित्रादौ सुरमन्त्रिणि ॥ दुर्जालघुनो प्रोक्तो गुरु महति वाचवत ॥ रुरुर्मर्गदेव
 ते दे कारु कारुक शिलिनो ॥ विश्वकर्माणि शिले च कुरुश्री कंठजांगलो ॥ उदने नृपते
 देच पुरुप्राज्यरोपे जयो ॥ पुरुः स्वर्लो क नृपयो मुरु नृधर धन्यो ॥ आरुस्त रु विशेषे स्याद
 रुः कर्म कटी दंष्ट्रिणो ॥ कद्रु मातरि नागानां कद्रुः कनकपिले गे ॥ हरिर्वातार्क चंद्रं यमो

पेंद्रमरीचिषु॥सिंहश्वकपिनेकादिभुक्तोकांतपुच॥हरिवाच्यवदाख्यातोहरिकपिलव
 र्णयोः॥हरिर्ब्रह्माच्यतेशेषुहरिप्राज्यसुवर्णयोः॥गिरिगीर्णो गिरिचक्रेकीडागुडकाशै
 लयोः॥५०॥नेत्रायमविषैषेपिपुजेनुगिरिरंनवत॥वारिःस्तसासरस्वत्यावारिकीवे
 रनीरयोः॥वारीघटीजबंधनोरंकिःस्मात्पादनुध्रयोः॥शारीरहोपकरणेतथाशकुनि
 कांतरे॥युगार्धजजपर्यागेव्यवहारेपिचक्रवित॥कारिःत्रियायामाख्यातानापिता
 दिकशिनिनि॥अद्रिःशैलद्रुमोर्वेषुरेद्रिकाकजयंतयोः॥शदिरंतोधरविस्तोतंद्रो
 निद्राप्रमीलयोः॥धात्रीजनन्यामलकीवसुमत्पपमातृषु॥उष्ट्रीगोलविकीकायां
 स्माकरनस्यतुयोषिति॥क्रोष्टीशृगालिकाक्षीरविदारीलोगलीषुच॥तरिनीविश
 दशायांचवस्त्रादीनांचपटके॥जारीस्यादोषधातेदेजारस्तपपतावपि॥इरावारिसु
 रास्तमिनारतीषुप्रयुज्यते॥स्त्रिराक्षमौशालपल्यंस्त्रिरोनिश्चलमोक्षयोः॥धारा
 सैन्याग्निमसंधसंतत्योःपतनांतरे॥प्रवद्रचेमपातेपितुरंगतिपंचके॥खजादीनां
 चनिशितमुखेधारापिकीर्त्यते॥धारकचिद्वनासारवर्षणेस्मादलेपिच॥वीराचा

॥८२॥

धिरकाकोलीनामलोक्षेनवातुषु॥पतिपुत्रवतारंनार्गनारिमदिरासुचा॥गोष्टोडं ब
 रिका॥क्षीरविदारिडग्धिकासुच॥वीरस्तुस्तुनदेष्टेष्टेविद्वंश्यांनतेपिच॥अग्नि
 नक्षत्रनेदेस्यादृष्टिक्लिबेतिधेयवत्॥मात्रातुयापनोपायेगतौदेवार्चतोस्म
 वे॥उत्सागद्युपचित्रायांउत्सस्तुकिरणेस्ततः॥हिंसाकाकादनिमांस्योर्हिंसःस्या
 स्माद्वाउकेन्यवत्॥रत्रि॥अमरस्त्रिदशेषस्त्रिसंहारेकुलितोक्रमे॥इवमिराव
 तीस्तुणागुदुचिषमरास्तितः॥अपरंचधुनार्थस्यात्पश्चाजानेचचंदने॥अर्वा
 वानेपरंप्राकुज्जरायोचापरामपि॥अधरोदंतवसनंतधौदितेधरोन्यवत्॥
 अधरोवस्तुनेदेस्याभावधानेकृतावपि॥अंतरंडपरीधानेनेदेरीधानकाश
 योः॥आत्मांतर्दिर्विनास्मीयवदिर्मेध्यावधिषपि॥तादयेविमरेप्रोक्तमवरंचरने
 न्यवत्॥गजांचजंवादेशेचनवान्यामवरातता॥उत्तमप्रतिवाक्येस्यादृष्टोदी
 चोत्तमेन्यवत्॥उत्तरस्तुविरादस्यातनयोदिशिचोत्तरा॥इतरःपातदेन्यस्मि
 त्तदरं ब्रह्मवलयोः॥रुद्धरंवारिधारायामृद्धरोकजिलिस्ततः॥प्रवरंस्ततो

गोत्रे श्रेष्ठे तु प्रवरो न्यवत् ॥ शंबरो वारि चोडो लात्ते दयो शंकरे पिचा अंबरं वांससि यो मिका
 र्पासे च सुगंधके ॥ शंबरं सलिले वित्रे बौद्ध वन विशेषयो ॥ शंबरो दैत्य हरिण मय्य शैल नांत
 रे ॥ उषधौ शंबरी मातुः ॥ प्रखरो श्वतरे मुनि ॥ तुरंगाणां च संना हे प्रखरो तिष्ठ शंखरे ॥ शिख
 रं शैल वहाय कन्या कुलक कोटि सु ॥ पद्म दाडिम बीजां न माणि क्य शक ले पिचा शि
 खर स्तु शिवा ने देख जांगे वारि कालु के ॥ शिखी गवत् बद्ध त्वे च विष्ठर सु मही रुहे ॥ अ
 ऊ शम शौच वरः शठ वधुयो ॥ क क वटे वाय पिठं मुस्त मं धान दंड यो ॥ पिठर स्या
 उषायां च ऊठरः कठिने न्यवत् ॥ ऊहौ बद्धे च ऊठरं वंठर स्ताल वध्व वे ॥ कहीर कोशे
 षरं कपाटे छटने पिचा ॥ कररः क क चे दीने क पीरे दौख मां तरे ॥ कदर सै तख दिरे
 सुद्रुणे गे पिचा पितः ॥ बदरः कोलिक पास्योः कले स्या हृदरी तयो ॥ एला पण्यां उ बद्ध
 री उल्ला कां तौष धाव पि ॥ प्रदरो रोग ने दे स्यात् प्रदरः शर चंग यो ॥ म करो या द पिठे यो
 निधिरा शिष्ट ने दयो ॥ निकरो नि वद्धे सारे न्याय देय धनां तरे ॥ शिकरं श बले वात
 मृतां बु कर्ण यो विडु ॥ प्रकर श्चो प चारे स्यात् वि किर्णं कुमु मा दिडु ॥ मं दतौ चो पल

८३

त्याथां यथा संख्य मवस्थितौ ॥ जांग के प्रकरं चोक्तं प्रकरी च खरा वनौ ॥ विस्तर सु प्रपे चे स्या
 द्विस्तारे प्रण मे पिचा ॥ संस्तर प्रस्तरा चेतौ प्रसरा धर योर पि ॥ मलि पाषाण यो श्चा पि मथा क्र
 म मुदी रितौ ॥ दगर टं कल हारे दे ला विज नम गो चरे ॥ वाच्य वक्त्र चरा के च मुद्रं म धिवा
 निदि ॥ लाष्टा दि ने द ने पि स्या दुदरे जग रे युधि ॥ प्रसरः प्रण ये चे गे संगरे चाथ मसरः ॥ अ
 ह्या पर संपा तो मा मर्ये त्र पले कुधि ॥ मसर मद्धि कायां च विसरः प्रसरे ब्रजे ॥ ऊरुं को ट
 र छिद्रे नागरा ग विशेष यो ॥ दहरो म्भु कायां च स्वल्प त्रारि चाल के ॥ चमरं चामरे
 प्रौढु मं जरी म्भु ने दयो ॥ चमरी नमरे श्च गे कामु के पि मधु द्रवत् ॥ रुधिरं गार के प्रोक्तो
 रुधिरं कुमु मा म्भु जे ॥ बचिरो ने कपे चंद्रे मुदिरः कामु के बुदे ॥ मिही रो ना स्करे वद्धे म
 हिर का म्भु र्वयोः चिवरं दूषणे गते रुधिरं छिद्रं ध्रुवत् ॥ खपूरः क्रमु के नद्र मुस्त के
 लस के पिचा ॥ गोपुरं तु पुर दारी द्वार मा त्रे च मुस्त के ॥ चिकुर श्च चले के शे गट द बलु त
 जंग यो ॥ पद्धि दु ने दयो शैले चो कुरो रथ वृ ह्यो ॥ अंकुरो रुधिर रो म्भु पानी ये नि नयो
 दिदि ॥ कुकुरो वक्त्र पुष्पे स्यां ग्रंथि पले तु कुकुरां मुकरो मद्धि का पुष्पे दर्पणे वक्त्र लडु मे ॥

कुलालदडे मुकुरो मुकुरो पेषु विश्रुतः॥ अजिरं प्रागणे वा ते विषये दर्दरे तनौ॥ अशिर
 राक्षसे वक्रावशिस्तपने पिच॥ शिशिरस्याद तो जेदे तुषारे शीतलन्यवव॥ विशिरं कणसि
 धुलवले न कणा सुच॥ अशिरं विवरे वाद्ये सरंध्रे अशिरं नि लौ॥ अशिरं चोचति मिरं
 धांते नेत्रामये पिच॥ छिदिरं कपावकेशो करवाले परश्वधे॥ दंतुरं वाच्यव न्येयं
 विषमोन्नत दंतयोः॥ विदुरो नागरे धीरे कौरवाणां च मन्त्रिणि॥ विधुरं स्यात्प्रचिक्षेपवि
 धुरो विकले न्यवत॥ विधुरा पिरसा लायां मधुरस्तुरसे विषे॥ मधुरं रसवत्स्वादु प्रियेषु
 मधुरो न्यवत॥ मधुरा शतपुष्पायां निश्चया तगरीक्षिदोः॥ मधुकुट्टिका मे दामधुली
 यष्टिका पिच॥ मधुरा बहुरां रमे न मे दं सेतु वंधुनरः॥ बंधू केच विदं गे च मधुरा पण्य
 योषिति॥ बर्बरः पामरे केशविन्यासे नीरुदंतरे॥ बर्बरा कंडिडकायां तु बर्बरा शाक
 पुष्पयोः॥ बर्बरं सलिले हेमनिकर्बुरा पापरुयोः॥ कर्बुरा रुक्मं तायां किमीरे क
 र्बुरो न्यवत॥ कर्परं स्यात्कपाले च शस्त्रे द कपाटयोः॥ कर्परं नातु निप्रोक्तं कफ
 णावपि कर्परं॥ स्वपरं तस्करे धूर्त्तं निष्पापात्र कपालयोः॥ गगरो मीनने देस्या तमं

८४

यन्या मपि गगरी॥ बर्बरं वलद्वारिध्या नेव केन दांतरे॥ निर्जस्तु सहस्राशतुरंगतुष
 षावके॥ मूर्धुरस्तुषवक्रौ स्यात्तमन्यथे रचि वाजिनि॥ जर्जरो वाच्यवजीर्णैर्जर्ज
 रं वासवधजे॥ निर्जरस्तुजरा त्यक्ते वाच्यवनिर्जरस्तुरे॥ निर्जरा तु गुडूचां स्यात्ता
 लपण्या मपि कचित्॥ दुर्दुरंतोय देते के वाद्यत्तां डाद्रि जेदयो दुर्दुरा चंडी कायां च
 ग्रामजाले च दुर्दुरं॥ बादुरं दक्षिणावर्तं शंखे रुमिज नीरयोः॥ काकचिंचाश्च बीजे
 पिचाचिबादरमिष्यते॥ दुर्दुरं वाच्यवतुदुरवधये दृष नौषधौधे॥ दुर्दुरो निदुरे सा
 रे निर्जरे कठीनेत्रयि॥ कुंजरो नेकपे केशे धातु कामपि कुंजरा॥ पिजरं कनके वा
 जि जेदेपि तेच पिजरं॥ मंदरो मंथशैले स्यात्तुर्वर्ग मंदारयोरपि॥ मंदरो बहुले मंदे
 कदरो विचरे कुरे मंदिरं नगरे गारे मंदिरं मकरालये॥ बर्बरस्तुरणे मेपे कदुरोदप
 ले दडे॥ कंधरो वारिवादे स्यात्तु ग्रीवासा मपि कंधरा॥ वक्षरं शादले प्रोक्तं निर्जरं
 नकुब्जयोः॥ बिच्ये त्रेच मंजरी वक्षरीति च प्रकृतो॥ मंथरः सूचके काशे मंथाने चा
 मंथरा॥ कुसुन्यां मंथरो मंदे पृष्ठौ चक्रे च वाच्यवत॥ कबुरं कुसिते हने च वरस्त्रिं डिले ग

लो॥ छिन्नरंछेदनद्वये छिन्नरोधर्तवैरिलो॥ इवरोधुर्विलेनिचेपथिककुरकर्मलो॥
 पुष्करं कजेयोमिपयः करिकराग्रयो॥ अषधदीपविहगतीर्थरागोरगतरे
 पुष्करं तूर्यवक्त्रेचकांडेरवडेफलेपिच॥ डिंगोडिगोरहपेसंगरंगीकृतेयुधि
 विषापदोः क्रियाकालेसंगरंतुशमीफले॥ गकरस्तुगुहदंननिर्कुजगहनेषुपि॥
 बकरः कथितोव्याघ्रेत्रिवायामपि कर्बरा॥ चातुरश्चातुरकवदक्त्रगीगैनिधे
 तरि॥ एतौस्यामुजौनेत्रेगोचरेचादुकारिणि॥ ईश्वरोचित्तवैराग्येनौस्वामिनिम
 न्मथे॥ पावत्यामीश्वरीमादुर्घापरुसंयुगे॥ आकरोतिवहोत्यत्रि॥ स्नानश्रेष्ठेषुप
 श्यते॥ नास्करस्तपनेवक्षौप्रजाकरसमः स्मृतः॥ कर्परोत्तमस्त्रिकोस्यातकीनाशे
 राजयस्त्रिणि॥ जराटेपिकर्बुदेष्टकेसेरपिचक्षस्मनि॥ शावरं वंघतमसेशवरोधा
 दुकेन्यवत्॥ प्रातरं विपिनेदूरं स्नान्यवत्तनिकोटे॥ शाकरोदुग्धफेनेपिशर्कराधि
 तदेशवत्॥ शाकरोदुग्धफेनेपिशर्कराधि
 नागरोन्यवत्॥ शंसंतिनगरोद्धतेरतिबंधेपिनागरं॥ वामरोवाकैरेशालेतिनरेवा

शये ७

८५

उकेवृषे॥ विशारदेमुमुहोचगतातंकेचवागर॥ आनरं ग्रावमधुनोपा
 मरस्वस्वनीचयो॥ वासरोदिवसेयागेप्रजेदेपिचवासर॥ कांतारमुप
 सर्गादौवनेदुर्गमवर्तनि॥ इरुप्रजेदेकांतारुपादारुपादधूलिषु॥ पादालि
 देचमंदारु॥ पारिजत्राकर्णयोः॥ सुरदुमेपिमंदारसंदूरेनागदेशयोः॥ आधा
 रश्चाधिकरणेत्यालवालेबुधारणे॥ आसारः स्यात्प्रसरणेवेगवर्षेमुद्व
 ले॥ केदारः पर्वतेशंनोहेत्रजेदालचालयोः॥ उदारोदाटमहतोदहिले
 प्यक्षिधेयवत्॥ मदिरोदिरदेधूर्तेविदारोदारणेरले॥ विदारिशालपण्यं
 चरोगजेदेरुगंधयोः॥ विकारोवित्ततौरोगेव्यापारसंस्त्रितींगयोः॥ नि
 कारस्यात्यरिहावेधान्यस्योक्तिरणेपिच॥ आसारः सदृशेजेदेटंकारः सिं
 जिनीधनौविस्मयेचप्रसिद्धोचंडारुशारयंत्रके॥ कालचक्रेवहत
 पिडिडारोमत्रवारणे॥ पिंडारुः रूपेणैपेमहीपीरुकेद्रुमे॥ उषारोदि
 मत्तेदेस्यातशीकरेपिहिमेपिच॥ श्वनारस्तुशुनीस्तन्येसर्पाडकलवि

कयोः कुमारी बाल के स्कंदेषु चराजे चार के ॥ शुके पि वरुणा प्रोच
 कुमारे जात्य को चने ॥ कुमारी रा मतरुणी नव मध्यो न दीक्षिदि ॥ कन्या
 परा जिता गौरी जंबू दीपेषु वस्मता ॥ आहोरो जोजने हारे न वेदा हरणे पिच
 विहारो न मले स्कंदे लीलायां सुगता लये ॥ कुटारं मैथुने विद्या कुटारं क
 बले पिच ॥ कोटारो नागरे कूपे पुष्करिण्यां च पाव के ॥ कटारः पिंगले दा
 से संतारः संत तौ गणे ॥ केतारः कुत्तितर के शिरः कापाल संधिषु ॥ संका
 रो ग्नि तडि कारे सं मार्जना वगुठि ते ॥ नर दूषित कन्यायां संकारी तपि द
 श्यते ॥ पंकारः शैवले सो तौ सो पाने जल कुब्ज के ॥ संकारः प्रतियत्ने स्या तसं
 कले नुश्रु जे पिच ॥ सासरं स्या त बस्तिन रे सो पाने पक्षि पंजरे ॥ कंजारे
 जते स्स ये विरं चो वारणे मुनौ ॥ माजार उतौ खट्वांगे शृंगारः कनकालुके ॥
 चंगारी जिह्विकायां स्या त अंगारो ला त नौ दयो ॥ शृंगारः सुरते नायुर से
 पिंगज मंडले ॥ शृंगारं दूर्वा सिंदूरं लवंग कुसुमेषु च ॥ विस्तारो विस्तृतौ

॥८६॥

स्तंबे उदारश्चोदु तौरणे ॥ मावरो दिज जे दे स्या त व्यासे र्क पारिपाश्र्वके ॥ शा
 बरः पशु तैरो ध्रे मथा पापापराधयोः ॥ शबरि वृष शिवां च शरीरं दे दृजे वृषे
 करिः कलशे वृद्ध से दे वंशं कुरे पिच ॥ करीरी चीरिकायां च दंत मूले च
 दत्तिनां ॥ शरीरं शोण मध्यस्थ पुत्रिने दुदुरी तटे ॥ जबीरं प्रस्थ पुष्पा रश्मि
 के दत शठे पिच ॥ अशीर माहुश्च मर दंडे च शय नासने ॥ सो वीर बंदरे शो
 तौ जने देशे च काजिके ॥ किमरिः कबुरे दैत्य राक्षसां तरयोरपि ॥ कास्मीरं
 कुंकुमे प्रोक्तं वपुष्पर मूलयोः ॥ पाटिरो वातिके वंशे मूल के तितय न्यपि ॥
 धाराधरोपि के दारे रेणु चारे पि चेष्टते ॥ अंडीरः पुरुषे शक्ने डिंडीरः पुरुषे स्मृ
 तः ॥ फेने वाते गणे चापि च सरः पांडु वेश्वरे ॥ कूवरः कुब्ज के चारौ कूवरः सुयु
 गंधरे ॥ कूवरः शमश्रु पुरुषे प्रौढा शृंग वृषे पिच ॥ स्यान्नी वरो वालिज के वास्त
 ये पिच नी वरः ॥ पी वरः कछपे स्खले धी वरो लुब्ध के बुधौ ॥ केसरे दिं गुनि प्रो
 क्तं केसरो नाग केसरे ॥ सिंदूर रायां पुंनाग किंज वकु लेष्वपि ॥ केशास्तुरणे

मछे मागे चूडी वाससि ॥ शिले ध्रं कदलिपुष्पे कचकत्रिपुराख्ययोः ॥ किशोर
 तरुणाचखोद्यशावकसूर्ययोः ॥ तैलपण्णं कुरस्तु नदीवृद्धे धनाधिपो ॥ क
 णेरुस्याद्यशावेश्या कर्णिकारे गणे नवेत ॥ कौटिरुः शक्रगोपे च शत्रे च नकु
 लेपिच ॥ अंगरुस्यावशिशियायां पेगकेपिलन्यपि ॥ किशोरसम्यक्केपिवि
 शिखेकं कपडिणी ॥ नार्योरुः शैले देपिमृगने देचतत्रच ॥ क्रीडायां परना
 र्यायां पुत्रोये तोपपादितः ॥ कुशारपादेपे किशोकटकुस्यान्मिमीलिक ॥ विद्य
 केरुसिच कटपूररुदेवने ॥ दासेरोदासिकापुत्रे दासेरस्यातक्रमेलेके
 ॥ मयूरो बर्हि चूडायां अपा मागे शिखंडिनि ॥ खर्जरं रजते विद्यादृष्टिकत्रु
 मने दयोः ॥ खर्जरं श्वाथकचरिं सटीकां च नयोर्मतां ॥ सिंदूरस्तु न देस्या सिंदू
 रं रक्तचूदेनेर्ण के सिंदूरीये च नीरक्तवेलिका धातुकी पुत्रा ॥ वक्षरं स्याद्वन
 के त्रे वा रुनो खरयोरपि ॥ वक्षरमादुः संशुद्धमांसकरमांसयोः ॥ एका
 ग्रमेकताते स्यादेकाग्रं चाप्यनाकुले ॥ नारं प्रोवात्रिकेरादि विषवैद्येपि

वेर

॥७॥

कथ्यते ॥ महेंद्रः पर्वतेशक्रैजले प्रोवरुणे बुधौ ॥ जंतके च गले प्रस्यासामुद्रं
 देहलहणे ॥ सामुद्रं च समुद्रीयलवणादिषु जेधवत ॥ खडाक्तमजले शेष्यास्त्री
 णांदंतहृत्तांतरे ॥ कष्टिं च रसनायां च मार्गे च टि वाससि ॥ शिलिंध्रं कदलिपुष्पे
 कचकत्रिपुराख्ययोः ॥ शिलीध्रः कथितो धीरैस्सरुमीनप्रजे दयोः ॥ गंडपदी दिवि
 प्रोक्ता शिलीध्री विदगी तिदि ॥ तमिस्त्रंतिमिरं कोपेतमिस्त्राचतमस्ततौ ॥ क
 ष्टकविनिशायां च कृकात्रंतु वरांगके ॥ तकात्री निचकारध्याकलत्रं श्रोणि
 नाययोः ॥ दुर्गस्थाने नृपादीनां पवित्रं धर्षणे कुशे ॥ पवित्रं ताम्रपयसो धर्म
 चापितदं न्यवत ॥ सावित्रः शंकरे प्रोक्तः सावित्री देवतांतरे ॥ दैत्यारिस्त्रिदेशे
 विष्णोति तिरि विहगे मुनौ ॥ शंकरी विघ्नपेक्षं देगुसुरिपावके पवौ ॥ मंदुराव
 जिशालायां शमी पार्थे कवस्तुनि ॥ उवरा सर्वसस्याद्युक्तमौ स्यात्तमिमात्र
 के ॥ आसुरारजनी वास्योरसुरोदा नवेरवौ ॥ वासुरा वासितायां स्यात्तवासि
 तेय्यां मता नुवि ॥ मस्र-मस्ररात्री हि प्रजे देपण्ययोपिति ॥ मस्रसु रौ च दवेता

वपेतयोर्मतौ॥शर्कराखंडविकृतावुपलाकर्परांशयोः॥शर्करांचितदेशेच
 रुज्जेदेशकलेपिच॥कक्षराक्षकसयांचशटीदुःस्पर्शयोरपि॥कक्षरंवाचवमा
 दुरोमलेपुंश्चालपिच॥मर्मराचमरीतांडमुरानिःकुलासुच॥गायत्रीकथि
 ताछंदःप्रजेदेखदिरपिच॥सैरंध्रीपमेशमस्थशित्यत्रस्वशस्त्रियां॥वर्णासंकर
 संस्तस्त्रीमहीध्रकयोरपि॥खदिशाकजेदेस्याखदिरोदंतथाचने॥सुंदरि
 स्त्रीतरोर्जेदेशवरीरात्रियोषितोः॥हरिद्रायांचकबरीकेशशाषविशेषयोः॥क
 बरंलेखलेस्तेचतुंबरीसरमार्द्रयोः॥मंजरीवक्षरीस्त्वलमुक्तातिलकशादिषु॥
 मर्मरीपीतदारौस्यादस्तजेदेचमर्मरः॥मर्मरीस्यान्मृषावाचलेपापट्टवाद्य
 योः॥शर्करामेखलाकयोःछंदोत्तेदेपिशक्ती॥जक्षरीजिह्वरीवाद्योदुबुकेवाल
 चक्रले॥कावेरीस्यासरितेदेपणनारीहरिद्रयोः॥रवा॥श्री॥परीकरोत्तवेद्रातेप
 र्यंकपरिवारयोः॥प्रगाढजानिकाबंधविवेकारंजयोरपि॥व्यतिकरसमाख्या
 तोव्यसनव्यतिसंजयोः॥विताकरोऽग्रोत्तपनेवस्करोग्रघण्टहयोः॥कर्मका

॥प्र॥

रसुकीनाशेनत्वेवेतनजीविति॥कर्मकरीतुमर्वायांबिंबिकायाप्तपिक्वचि
 त्॥अरुःकरोव्रणकृतिज्जातेचाणरुःकरौ॥जवेत्सहचरोशित्यांवयस्येप्र
 तिबंधके॥निशाचश्चेचकादियातुधानेषुपरवे॥निशाचरीपांशुलायांच
 वेत्यहचरोविधौयुष्मत्तष्टृष्टृगवारिवारणेचप्रकीर्तितः॥चराचरंस्याज्ज
 गतिवाचवज्जंगमंगयोः॥विदुर्दशपुरंदेशेस्तुस्त्यायांपत्रनेपिच॥अग्निमरो
 वद्येयुदेतथासबलसध्वसे॥आहुःप्रतिसरंदस्तस्त्रेमात्येपिमंडले॥व्रण
 शुद्धौचमृष्टेनियोज्यारक्तकं कले॥मंत्रजेदेवसरोवर्षप्रस्तावयोरपि॥स्मृत
 परिसरोमृष्टादेवापान्प्रदेययोः॥दिगांबरस्यात्तूरूपेणनेमेतमसिंहेरे॥पीतांब
 रपद्मनाचेचवेपीतांबरोनटे॥कादंबरमुदध्यमेमध्वजेदेवसीधुनि॥कादंबरी
 परन्तुताजारतीसारिकासुच॥उदंबरस्तुदह्यांचक्रजातोचपंडुके॥उदंबरंस्मृ
 तंस्मृततामेकुष्टजेदेयुदंबरं॥अदंबरःप्राज्ञदेवरोगजेदेचचक्षते॥नीला
 वरःप्रलंबध्वकोपणकुरलोचने॥आउंबरःसमारंजेगजगर्जिततर्ययोः॥

निषधरस्तुजं बाले निषयां च निषधरी ॥ उपकरं समीपे स्थापितं देकांते वाप्युपकरं ॥ इंदिवरं
 अवलये वायमिदिवरी मता ॥ कालं ज्वरो योगं चक्रमे लके नैरवे गिरौ ॥ विम्वनरोऽस्यु
 ते नानेन वेद्विभं नरास्तु विादुरोदरोधुतकारे पणधते दुरोदरां लबो धरस्यातदुध्या
 नगणनामधिपे पिचा ॥ अनुत्तरो मतं श्रेष्ठे प्रतिजल्य विवर्जिते ॥ तुलाधारस्तुलारा
 शो नो ज्ञानि जके पिचा ॥ तोयधारो न वेने धेसु निषलेषधे पिचा ॥ धुरधरो धवतरो धुर
 वदिपि धुरधर ॥ चक्रधरो हरो सर्वे वाचवत्या मजा जिनि ॥ अश्वतरो वेगसार साना
 गराजांतरे पिचा ॥ विबुवीरं तरं श्रेष्ठे शरविरण्योरपि ॥ नक्षत्रो घने वा ते विद्याधर वि
 दं गेयो ॥ उदं तैस्या दुत्तं गेकरा लो कट दंतयो ॥ दैमातुरो जरा संधे वारणा नतयो
 र्मतश परंपरः प्रपौत्रादौ नृगजे दे परंपरः ॥ परंपरा परी पाद्यां संताते पि वधे कचि
 त् ॥ धरा धरा स्ना नृति चक्र पाणो धरा धरस्तो यधरे कृपाणो ॥ पयो धरः स्यात्तकुच
 कोश कारक सेरुकां तो धरना लिके सरे ॥ कलिकार करं जे स्याद्दृम्या दे पीतमस्त
 के ॥ अलंकार स्तूपमादो हारके पुंका दिषु ॥ कर्णिकारश्च संन्या के कर्णिकारो

॥८६॥

दुमे तले ॥ रथकारस्तु मादिषा करणीये च तहणी ॥ चर्मकारः स्मृतः पादू हति
 चर्मक पौषधे ॥ चर्मकारी च कथिता प्रतिकारः समे जेटे ॥ घनसारस्तु कर्पूर
 दक्षिणा च त्रपारदे ॥ कृकसारस्तु ही वृकेशिंश पा नृगजे दयो ॥ गिरिसारो न
 वेला दे लिगे मलय पर्वते ॥ पीतसारो मलय जे ॥ गोमेद कमणा वपि ॥ शाल
 सारो मुमे दिंगो स्तत्रधारः शची पतौ ॥ प्रतीहारः प्रती हार्यो द्वा स्ते दारे प्यनंतरं
 अतिहारो न्नियोगे च ॥ चौर्ये संनृहने पिचा ॥ व्यवहारो दुत्तं दे स्यादि वा दे चप
 णे स्ति तौ ॥ अवहारः स्मृतः चोरे दूतयुद्धा दि विज्जमे ॥ निमंत्रणो पने तव्य प्रवे
 ग्राहारव्यादक्षि ॥ परिवारः परिजने खद्ग कोशे परिछदे ॥ पारा वारः समुद्रे चपा
 रा वारं तट दये ॥ अवतारो च तरणे पुष्करिण्या दि तीर्थयो ॥ अकूपारः समुद्रे पि
 कूर्म वा जे पि कीर्तितः ॥ शिशुमारो विसे नृत्त जंतौ तारात्मा कारा सुते ॥ सुकुमा
 रश्च पुं दे दौ को मले त्यति धेयवत् ॥ धुंधु मा रश्च गोपे गृह मे पदात्म के
 कर्णपूरो वतं से स्यान्नीलोत्पल शिरीषयो ॥ करवीरः कृपाणे स्यादैत्य जे दाश्च

मारयोः॥ श्रेष्ठे गवां पुत्रवत्यां मदी तौ करवीर्यपि॥ मदा कीरपश्चै ता र्क्षे श्रेष्ठे सि
 दे च को वले मखा त ले च कर्के च मदा वीरो जरा टके॥ आत्मवीरप्रण व तीशा ल
 पुत्रे विदूषके॥ पार्वटी वस्त्रपा वा म्ना स्त्रां कुरे गणि का सु ते॥ चित्रा टी रो विधो ना
 ल मंति कं ये न तत्र च॥ घंटा कर्षी पदारा यदु तठा गा स्त्र बिंदु निः॥ पात्र टी रो बुधे
 सक्तौ भुक्त व्यापार मंत्री नि॥ लोह को स्ये जरा त्या ने पिं गा पो पा व के पि च॥ धारां कुर
 लु ना शी रेशी करे पि व नो त्य ले॥ सनु द्रा रु स्म तो ग्रा दे से तु बंधे ति तिं गि ले॥ वि
 श्व क द्रु र व ले धां ते स्या दा खि ट क कु कु दे॥ असि पत्रो न वे को श कारे पि तर कां
 वरे॥ शव पत्रो राज कारे दा वां घा ट मयुर योः॥ राजिवेश त पत्रं तु ना यु पु त्रो द नू त
 ति॥ मदा ध्व त्वे च ती ने च ल क्षी पुत्र स्मरे द्यो॥ पूर्ण पा त्रं सुवर्ण लु र्ण पा त्रे पि
 के पि च॥ मदा पा त्रः स म्भे द्य ता त्ये द स्ति प का धि पे॥ बिंदु तं त्रं बिंदुः शारी फल
 के चतुरंज के॥ राग स्त्र त्रं तु ला स्त्र ने पद स्त्र त्रे पि दृश्य ते॥ ताल पत्रं च ता टं के रं डा
 यां ताल पत्र पि॥ अग्नी रो त्रो जि ह विषो वी त हो त्रो न ला र्क योः॥ वीर न प्रो श्व मे

॥ २० ॥

धां श्व वीर श्रेष्ठे च वीरणे॥ पारि न प्रस्तु मं दारै नि व पा द पयो र्म तः॥ बल न प्रो रो
 दि ले ये त्रा य मा णे ष धा व पि॥ बल न प्रो कु मा र्यं स्या द र्द चं प्रस्तु चं द्र के॥ गल ह स्ते
 बा ण ने दे अ र्ध चं द्रा दृ द्धि दि॥ धा र्ता रा णो सि ता स्यां दि दं स कौ र व नो गि पु॥ घ त
 रा ष्ट्र सु रा डि स्या त्य किं कृ त्री य य ने द योः॥ घ त रा ष्ट्री दं स पा द्यां स्त्रि र दं द्रो नु जं ग
 मे॥ वरा हा कृ ति वि क्षौ च च कृ न के श्व के र व रे॥ क रं न रा प्र सा रं ण्यो रो दि ण्यं
 ग ज यो षि ति॥ क रं बि का यां गो ला यां वर्ण न्म र्त्त व यो र पि॥ मणि छि द्रा तु मे दा
 या म्भ नार व्यो ष धे पि च॥ तुं ग न द्रा न दी ने दे तुं ग न प्रो न दो क टे॥ दं ड या त्रा दि
 वि ज ये सं या न त या त्र योः॥ द ह या त्रा नो ज ने स्या त कृ तां त ग म्ने ते पि च॥ वी ता व
 री द द्रा यां र ज न्यां च वि ता व री॥ वि वा द व स्त्र लुं व्यां च कु द न्यां च त्र यो षि ति॥
 कुं त का री कु ल धां च कु त का र कु ला ल के॥ तुं डि के री तु क र्पा स्यां बिं बि का या
 म पी ष ते॥ श्रीः रा पं॥ पां शु चा म र द्य तु क्तो द र्वां चि त त टी नु वि॥ व र्ध प के प्र शं सा
 यां पु रो ठौ धृ लि गु ष के॥ स्या पा द च व र ण यां गै से क ने पि ष ले पि च॥ क र के पर दो षे

कजापिपुरुषकेपिच॥विप्रतीसारनिष्ठतिक्कौरुतेनुषयेरुषि॥समन्निहारो
 शार्थेपौनःपुण्येपिकथ्यते॥पीतकावेरनिष्ठतिपित्तलेकुंकुमेपिच॥तालिसपत्रं
 तालीसेतामलकामपिस्मृतं॥तवेदुत्पलपत्रंनुतदलेस्त्रिनखद्वते॥तमालप
 त्रंतापिष्ठेतिलकेपत्रकेपिच॥सर्वतोत्तप्रदुक्तःकाव्यचित्रेण्यंतरे॥निबेपि
 सर्वतोत्तमगां॥त्रीरीनटयोषितोः॥वस्त्रौकसारशक्रस्यश्रीदस्यनलिनीपुरे॥
 नवेकपिलधाराख्यास्वर्नदीतीर्थान्नदयोः॥श्री॥॥इतिरांतवर्गः॥॥लदि॥॥बलं
 गंधरसेरूपेच्छामनिष्ठैत्यसैन्ययोः॥बलोहालायुधेदेत्यनेदेबलित्तिवासये
 ॥वाद्यालकेबलाप्रौक्तापलंचोन्मानमांसयोः॥फलंहेतुसमुच्छेस्यात्फलकेयु
 ष्टिलोत्तयोः॥जातिफलेपिकंकोलेससबाणाग्रयोरपि॥फलन्यांतुफलीप्रादुस्ती
 फलायांफलंक्वचित्॥जलंगोकललेतिरेहीवेरचजडेन्यवत्॥स्वलंक्वस्थान
 कजेष्पुत्ररेतिचेधमेखलः॥गलःसर्जरसेकंठेचलःकंपेचलाश्रयि॥दलंशस्त्रि
 छदोसेधावद्रव्येखंडपर्णयोः॥नलःपोटगलेरादिपिट्टदेवेकापीश्वरे॥नलीन

॥२१॥

नशीलायांतुनलितेतुनलंमतं॥तलंस्वरूपाधरयोखड्गमुष्टिचपेटयोः॥जा
 घातवारणेपिस्यान्नलस्तालतरावपि॥मलंकेहेपुरीषेचपापेचक्षपणेमलः॥श
 लुंतुशकीखेलालोमिशलोत्तंगीगणेविद्योः॥खिलंप्रतवेदप्रदत्तसारसहि
 मवेधयोः॥बिलंछिद्रेगुहायांचबलिउच्चैःश्रावद्वये॥छलंतुस्वलितेव्या
 व्याजेपुलंतुपुलिनेत्यवत्॥पुलःस्यात्पुलकेचापिकुलंजनपदेष्टदे॥सज
 तीयगणोगोत्रेदेदेपिकलितंकुलं॥कालोमत्तौमहाकालेसमयेयमक
 लयोः॥क्वचुदृष्टिकालितुनीलीमंजिष्टयोरपि॥कालीगौर्याद्वारकीटेका
 लिक्कामादृष्टेदयोः॥नवांबुवादृष्टेचपरीवादेपिचक्वचित्॥नलंलला
 टमदसोर्गलस्वंधमदीरुहोः॥शालःशालनूपेमस्यप्रदेनैसर्जपादपे॥शाला
 गृहेतरुस्वंधशाखागारैकदेशयोः॥मालंहेत्रेजनेमालोमालापुष्पादिदाम
 ति॥शालःपादपमात्रेस्यात्प्राकारेशंकुकुमे॥तालःकरतलेडंगुष्टमध्यमाया
 चसंमिते॥गीतकालक्रियामानेतालखड्गगादिमुष्टिषु॥द्रुमनेदेकरास्फालेता

लंठुहरितालके॥ वाद्य नांडेनुकां स्पस्य चालिदिपिक्पने॥ अलंगवाक आना
येकोरकेदंनदंयोजालोनीपुनेजालीकोशातकामुदाहता॥ व्यालोनुजंगमे
रिश्वापदेदुष्टदंतिनि॥ नाखंदं सरोजस्यनालीशाककदंबकेस्थलं नाजननेदेपि
स्थालीस्यात्ताटलोषयो॥ अलंशीलोपकरणे कार्यासादिकावाससि॥ बालक
चेशिशो नखर्वदीवेरेश्चेत्तपुष्टयो॥ अलंकासां तरेनेधौवालिवालात्रुटीस्त्रि
यो॥ चेलोनीचेयन्यवचेलमंशुकेगर्हितेन्यवत॥ नेलप्रवेनीलुकेचनिर्बुद्धि
तुनिनेदयो॥ का लोकापालावुसंभोजनेलकेपोत्रिचित्रयो॥ कोलाकणायां च
येचकोलंचबदरीफले॥ शैलो न्नाच्छतिशैलंतुशैलेयेताक्षशैलके॥ शीलंस्व
नावेसहनेनीलः तस्तेनगांतरे॥ नीलः कपीश्चरेनीलीरुक्ताछननेदयो॥ क
लंस्तेपेतडाजेचसेन्यष्टप्रतीरयो॥ तलः पिचोन्नवेत्तलं ब्रह्मदारुविहायसो
मूलनादोशिपायांस्याद्वेतिकुंजेति केपिच॥ मूलं प्रदणो मृत्योकेतवेरोगयोग
यो॥ मूलानादुष्टवधार्थाय कीलकेपस्ययोपिति॥ स्खलं स्यात्पीवरेकूटेतिः प्रदे

॥२॥

पुनरंन्यवन॥ अक्षोरसस्यनेदेस्यादस्त्रिचांगेरिकोषयो॥ शुक्रोयोगांतरेश्चेतेकुं
रजतेमता॥ मलः पात्रेकपालेचमस्यनेदेबलियसि॥ नलो नलोचबाणेस्यानलो नलक
इष्टते॥ नलानकांचनलीस्यादोलआर्द्रचस्तरणे॥ चुल्लचिल्लो मतेहि ननेत्रेहिनादि
पिल्लवत॥ आतापिनिनवेत्तिलः चिल्लीस्यादोडवास्तुके॥ चुल्लीचितायामध्यानेक
वाद्येषुदीरिता॥ छल्लीवीरुधिसेतातेवक्कलेकुसुमांतरे॥ खल्लीतुहस्तपादावमह
नाख्यरुजिस्तता॥ खल्लीवस्त्रप्रनेदेस्यान्निम्लचर्मणिचांतके॥ आलुगलंति काया
स्यात्कंदनेचदेपोतके॥ पीलुगजेद्रुक्ताकोडेपरमाणुप्रस्तनयोः पीलुस्तालास्त्रिखंडे
मालुः पत्रलतास्त्रियोः शालुः कषायवृक्षेस्याक्षोरकार्मोषधेपिच॥ वलिश्चातरदंडेच
जरया म्लथचर्मणि॥ उदरावयवेदेत्येकरूपजोपहारयोः गृहदारुविशेषेचगंधके
चक्चित्मता॥ दोलायास्थानांतरेनीत्यांनेलास्यान्नेलकेमसौ॥ इलाकलत्रेसौम्य
धरित्र्यांगविवाचिच॥ कीलाकापालिनिघातिशंकोज्वालेतुलवत॥ शिलाकुनयो

की४

क्रिष्टनरएरागेसिनिवाचिबुधस्त्रियां॥ नोजनेपी शराण्या तडा लादुदितरिस्मता॥ आ
 तपोमैरुलुकगंशालाकापिविलोकाते॥ कलास्यान्मालरेहकौशल्यादावंशमात्रके॥ षोडशं
 शेचचंद्रस्यकलनाकाजयोः कला॥ कलेशुकेकलोलीणेष्यक्तमधुरधनौ॥ लोलाजीकाक
 मलयोलौलश्चलसट्कयो॥ लीलांविदुःकेलिचिलासस्वेला शृंगारतावप्रतवक्रियासु॥
 देलामवज्ञानविलासयोश्चहालां सुराणां नपतौ चहालां गोलास्त्रयीमणीवयोर्गोलंरहानु
 सारतः॥ पात्रांचनेकुनद्यांचगोदावर्गचमंडलेअलिमुरापुष्पलिहोरानिस्तविशदाशये॥ आ
 लिपंतौ चसरयांचसेतौ चपरीकीर्तिता॥ कलिस्यात्कलदे शरेकलिरंत्युगेयुधि॥ धलिः संखां
 तरेरेणोडुलिस्तकमठेमुनौ॥ मौलिः किरीटधूमिलेवकेलिहमचडयो॥ शालिस्तगंधमाऊ
 रेकलनादिषुचस्मृतः॥ पालिकैषिलताग्रेऽप्योपक्तावंचप्रदेशयोः॥ पालीप्रस्तेचप्रजायांजा
 तः स्मश्रुस्त्रियामपि॥ रूहीस्यादात्परुचिवर्त्तामुद्वर्तनाशुके॥ चक्षीस्यादजमोदायां पुष्पने
 देपिवीरुधि॥ पक्षीकुटीग्रामकयोः पक्षः स्खलकुश्लया॥ तक्षीतलुन्यातलस्तजलाधारांत
 रेपिचा॥ लत्रि॥ ॥ कमलंसलिलेताम्रजलेज्योमितिनेपजे॥ मृगप्रज्ञेदेकमलः कलमा
 श्रीवरस्त्रियोः॥ चपलः पारतेमीनेचोरके प्रस्तरांतरेचपलाकलांमविद्युत्तुपुंश्चलीपि
 षालीषुचा॥ चपलंरुणिकेशीघ्रचपलश्चिकुरेचले॥ उपलः प्रस्तरेरत्नेशर्वरायांस्तुतोपसा

॥६॥

८ हे

उत्पलंमांसश्रत्येस्यात्कुष्टेदीचख्योपिरे॥ अनलोवस्तुदेवेग्रावनिलोवसुवारयोः॥ स
 कलंचविखंडेचरागवस्तुनिवक्तुलो॥ गरलंतुविषेमानेगरलंष्टणश्लेके॥ तरलश्चंचलसि
 गेदारमध्यमणावपि॥ जामुरेचाथतरलायवागुसुर्योरपि॥ सरलः प्रकाष्टेस्यादुदारावक्र
 योरपि॥ कपिलोमुनिज्ञेदेस्यात्यावकेचानपत्रके॥ कपिलाशिशपायांचरणकागोवि
 शेषयोः॥ पुंडरीककरिण्यांचपिंगेतुकपिलोन्यवत्॥ पललंचिलचलेस्यात्पललंचंक
 मांसयोः॥ पलालायातुधानेचपटलंछदिषिन्नजे॥ पिरकेनेत्रगेचतिलकेचपरिखदे॥
 जगलः पिष्टमदोचमेदकेचमनक्रमे॥ केतवखगलखगेखगलीखागमातरि॥ दृढदारकते
 षजोष्ठगलंतीलवाससि॥ पिषलोबोधिदृष्टेस्यात्किंचेदेतिरंशुके॥ पिषलंवसतखे
 दनेदेपिसलिलंमता॥ कणायांपिषलीप्रोक्ताधवलः सुंदरेसिते॥ महोद्वेचाचवलीसो
 रनेय्यामुदीरिता॥ कुचलंचोत्पलेमुक्ताफलेपिबदरीफले॥ कुशलः शिद्धितेहेमपर्याप्ति
 मुक्ततोमुचा॥ कुशलंमुशलंतुस्यादयोगेमुशलीमता॥ तालमुल्यामापणीगृहगोधिक
 योरपि॥ निचुलोदिकलतरौनिचुश्चलेनिचालके॥ पिचुलोजांबुकेपिसादिकलेजलवा
 यसे॥ विपुलः पृथुलेगाधेमेरुपश्चिमज्जति॥ तुमलः कलिदृष्टेस्यात्तुमलंतुरणसंकु
 ले॥ बहुलः दृष्टपद्वेष्टौशितौचबहुलागवि॥ एलायोनीलिकायांचबहुलाः हतिका मुचा॥

मु४

बहुलं प्राप्य न सौ मातुलो दे मे न द्रुमे ॥ मातुलान्तरि ध्वस्तरे ॥ ब्राह्मिने दे पि मातुल ॥ कु
 लं वा च वहुने कुटिला सरिदे तरे ॥ उरिल स्तु जगामुने जटिलामां सिकोषधौ ॥ सुतल प्र
 तलौ चेति पातल लुवन दये ॥ स्याताम दालिका बधेत तां गुलिः करे क्रमात् ॥ पितृल तैज
 सद्रये पितृल पिसंगते ॥ पितृलान्तरि पिसंगते ॥ पितृलान्तरि पिसंगते ॥ पितृलान्तरि पिसंगते ॥
 शलांगल योरपि ॥ ककरो नागराजः स्यात्तान् प्रावारयोः क्रमौ ॥ कंबल स्यात्तरासंगे कंबल
 सलिले मतं ॥ शंबलं कलपापेयममरेषु मे सेरितं ॥ कंदल स्तु कपाले स्यादुपरगे न वां कुरे
 ॥ कलधनौ कंदली तु मृगहृद्विशेषयोः ॥ पिंगल स्यान्मनोरुद्रे चंडांशोः पारिपार्श्वके
 निधिने दे च पावगौ पिंगलः कपिले न्यवत् ॥ कपिकोशां वेश्यां पिंगला कुमुदस्त्रि
 यां ॥ जंगलोजलनिर्मुक्तौ देशे मांसे च जंगलं ॥ मंगले श्रेयसि श्वेतद्वयां मपि मंगला ॥ स
 वार्थरुद्रे च पिसंगते ॥ कुडलं च लये पाशे कुडलं कर्णं नृषणे ॥ गुड्यां कां च
 नद्रौ च कुडलिसमुदीरिता ॥ स्यान्मंडल दशराज के च देशे च बिंबे च कंदब के च ॥
 कुष्टप्रने दे पु पस्य के पि नृजं ने दे शुनि मंडल स्यात् ॥ स्यादकुलं तु कलौ ले दंडे वा
 त कपाटयोः ॥ निर्मलं विमले विद्या निर्मलं च कयोरपि ॥ शौकलं शुभ्रमास्य पाणि
 विपि शिताशने ॥ पांशुलः पुंश्चलेश तोः खड्गो पांशुला नु वि ॥ संकुलं वा च वद्याप्ते विस्पष्ट

॥३५॥

ध्वस्तरे च सपि ॥ उज्जलो दीप्तशृंगारविशेषु विकाशिति ॥ वंजुलो वेतसाशो कातिनिशेष
 थमं जुलं ॥ निकुंजेश बले मंजो जलरं कौतुमं जुल ॥ पिंजलं तु दरिद्रा ने कुलमात्रे पिंजल
 लं ॥ पुंजलः संदरा करि पुंजल स्यात्तमदे दयोः ॥ जंजलो देवता ने दे जंवीरे चापि जंजलः ॥
 तिलः श्यालके चोरे श्लोक्याया हरे रुषे ॥ चंडिलो नापिते खातो हरवारस्तु शाकयोः ॥ ग्रं
 थिलो ग्रंथि सहिते करिं प्रौवीं कते ॥ वामिलो दांजिके वा मे रामिलोरमणे स्मरे ॥ वार्दलं
 उद्दिने मेला नंदाया मपि वार्दलः ॥ तंदुलाख्या विडंगे स्यात्तान्धा न्यादिनि करे पि च ॥ वृषलः
 कथितः श्वे चंद्रगुप्ते च वाजिनि ॥ निःकलस्तु कला श्वेतं नष्टबीजे तु जेद्यवत् ॥ पाकलं
 कुष्ट नैष जेपाकलः कुंजखरे ॥ पाचलो राधन प्रयेष निस्सारपि ॥ माचलो छदि चोरे स्यात्
 ग्राहया दसि चामये ॥ पाटलः श्वेतरं स्यात्तान्धा श्वेती हौ च पाटलः ॥ पाटलो पाटलापि स
 अस्याः पुष्पे पि पाटला ॥ लोहलः श्वेत्तलाचार्ये न वेदव्यक्त वाचिनि ॥ लोहलो मघ ने दे स्यात्
 कोहला स्यान्मुनावपि ॥ तैतिलो दांजिके प्रोक्तः तैतिलं करणं तरे ॥ हेमलः स्वर्ण करे स्यात्
 रुक्मला ससिलां तरे ॥ श्यामलो मेच के श्वेत्ते कोमलं मृदुले जले ॥ काललः कतु के रोम
 रुदेश वसंतयोः ॥ पेचलो रुचिरे दंके गो किलो मुशले हले ॥ गोरिलो लोह करे स्यात्तान्धा
 गोरसर्पये ॥ फेनिल स्यादरिष्टे च फेनिल बंदरी फले ॥ मदन स्य कपे चाथवा च वत्के न वत्

लानल७

पि॥ शैवलाख्यातुशैवालेशैलेयेचैपिशैवलं॥ शैवलं पद्मकाष्ठेपिशैवलं च जलां च
 ले॥ १०॥ सीतलं पुष्पकासीसैशैलाजमलयोद्भवं॥ नवेदासनपण्याचशीतलाशि
 शिरेन्यवत॥ कक्षो लोहर्षउद्धासेकक्षोलः परिपथिनि॥ पटोला मोषधीवस्तुनिध
 दो ज्योत्स्नापटोत्यपि॥ काकोलोविषनेदेस्यातत्रोणकाककुलाजयोः॥ तमा
 स्तिलवेखदेतापिष्ठतरुणद्रुमे॥ सुवेलः प्रणतेशाते सुवेलः पर्वतातरे॥ अवेलः
 स्तपलापेस्यादवेलापगच्छकैकपालेशिरसोस्मिन्स्यात्तघटादेशकलेत्रजेकु
 छुरोगविषेशेचगोपालो गोपत्तपयो॥ बिडालस्तान्नकलशेकिडालो लोहगृथ
 के॥ पातालं नागकैलोस्यात्पातालवडवानले॥ प्रवालौ वल्लवीदंडे विद्रुमे
 नवपद्मे॥ अगलकुटिले सज्जसं समददंतिनि॥ करालो दंतुरेतुगे करालंतुक
 ठेरके॥ करालो धूणतैलेपि करालो नीषलेन्यवत॥ शृगालो जंबुकेदेत्ये शृगाल
 डमतिविद्रुः॥ कुलालः कुत्तकारे स्यात्तकुत्तुनेको शिकेपिच॥ उदालो युगपत्रे
 पिकुडालो नमिदारके॥ बिडालो नेत्रपिडेपि बिडालो पिखगांतरे॥ ज्वालेशे
 वलेपं केकी लालं रुधिरं जले॥ वंगलः शूलयो युद्धेनौ कायाश्चरतित्रके॥ अ
 तीलं चापि त्रक्षे स्यादातीलं च नयानके॥ नातीलेनातिगतां दिवं कुरेचो

॥ १५ ॥

त्रमः स्त्रिया॥ उतफुल्लकरणेस्त्रीणामुतालेपिविकस्वरे॥ शया लुः स्यादजगरेति प्राश
 लेपिकुकुरे॥ श्रमालुर्दोहदित्याचश्रमावति तुवा न्यवत॥ लाण्डं मेहनेपुच्छे शादरो लो
 रुसांतरे॥ व्याघ्रचपश्रुतेदेचमहस्तत्रनरच्छित॥ वातलो वातसंघाते वातलेमास्ता
 सदे॥ कुक्कुलं शकुसंकीर्णश्चनेचापितुषानले॥ कुक्कुलः स्यात्तद्वकुलंतुहो मे श्रुक्ता
 श्रुकेपिच॥ जंबुलो जंबुविटपे जंबुलः क्रकचछदे॥ उतालो होमक्रोडे स्यात्ताजे चोत्रा
 लउतरे॥ श्रेष्ठेपि विकरालेपि स्यादुत्रालं प्रवंगमे॥ चडालात्त चटायो स्यात्तचडावति तु
 वा न्यवत॥ विषाला चिरवारुणां विशालो ज्ञयनीपुरी॥ विशालो दृक्नेदेपि विशालं पु
 शुलेन्यवत॥ मेखला रवद्रुबंधे स्यात्तकां चीशेलनितंबयो॥ शंखला पुस्कटी वस्तुबंधे
 पिनिगडेन्यवत॥ कुचला विद्रुक् स्यात्तकुचेलस्तु कुवाससी॥ अचला वसुधाया स्या
 तअचलः शैलकीलनो॥ चंचला तु तडिच्छक्याः चंचलः कामुकेनिले॥ इचला स्तार
 कानेदेइचलोदैत्यमम्ययो॥ पिच्छला शास्त्रली सिंधु तदयोते कि कामुच॥ पिच्छला
 शिंशपायांच पिच्छलो विज्जलेन्यवत॥ सप्तला पाटलो जुजानवमालिकयोरपि॥ त्रव
 च्चर्मा कषायांच महिला नीरुगुं प्रयो॥ सिधला मम्य चरे स्यात्तसिधमलश्चकीलासि
 नि॥ संधला तु सुरंगायां नदीमंदिरयोरपि॥ रसा लासज्जिकायां स्यात्तजिह्वा दूर्वाविदा

रिषु। रसालं सिरुवे बोले रसालाश्च कुचड्योः॥ विमलाशा तनायां स्यात्तनुवो नेदे
 च निर्मले॥ विमलां चामला लक्ष्माममलं विशदे त्रके॥ श्रीफली नीलिका धात्रो म
 करे श्रीफलः स्मृतः॥ खंडाली तेलमाने च सरसिका मुकसियोः॥ पातिली वागुरायां
 स्यात्तारी नृत्तात्र नेदयोः॥ जावली श्रु कशिवा स्यात्तज्जगलश्च कपिजले जागुली वि
 षविद्यायां जागुलं जालिनी फले॥ कदली वैजयंतां चानायां हरिणां तरे॥ जागुली ज
 लपिष्यायां जागुलं कुसुमानं नै॥ शरपिलांगले तालगृहदारु विशेषयोः॥ अंगुली क
 रशाखायां कर्णिकायां गजस्य च॥ कदली शास्मली प्रश्रीडिंबिका मुचकथते॥ नकुली
 कर्कटिमांसी नकुलपांडवे पत्तौ॥ नाकुली कुकुटी वंदे नाकुली च व्यरास्योः॥ नेपा
 ली नवमाली मनःशिला सुबहा सुचा॥ तावली नागवल्ली च तां वलं क्रमुके पिचा॥ पा
 चाली पुत्रिका पयोः पंचाली जनदेशयोः॥ शास्मली तरु नेदे स्यात्तदोप नेदे च शास्मली
 केवली ज्ञान नेदे स्यात्त केवलस्यै क तृत्तयोः॥ नितो ते केवलं चोक्तं केवलः कुरुने क
 चित्॥ कादली तु तरुण्या स्यात्त कादलं नृपशुभ्रयोः॥ वाघनाडु विषो तु कादला का
 दलः खगौ॥ गधोली वरटी नम्रा शटी पुकशिता बुधैः॥ अंजलि कुडवे विद्यादे जलिः कर
 संपुटे॥ ॥ लचा॥ छ॥ मदकलः स्यात्त त्रे नेमदे नावक्रवाचि च॥ नवे कलः कलः सज्जं स

॥ ६॥

कोलाहले पिचा॥ स्मृतो विचकिलो मल्ली प्रनेदे दमने पिचा॥ बृहन्नलोगुडा के
 शे महापोटग्रले पिचा॥ परिमलो विमर्दपित्या न्महरां घवत्॥ रतो मर्दविकसदे प२
 हरागादि सौरने॥ यवफलः स्मृतो वेणोमांसी कुठर ऊयो पिरा॥ मुक्ताफलं तु क
 रुरे मौक्तिके लवली फले॥ सदाफलं कंधफले नालिकेरेण्डं बरे॥ विदुः कर्म
 फलं कर्मरंगे कर्मविपाकयोः॥ मयुफलं महा काले कदल्या मयुफल्यपि॥ नवे
 द्यायुफलं शक्र का मुं के कर के पिचा॥ दलाहलो विषे ज्येष्ठां हयलां लादयो रपि जे ६
 कृतहल कोतुके स्यात्प्रशस्ते पिकु त हलं॥ दला मलं मद न के तथा मरु ब के पिचा॥
 महा बलं शीर्ष के स्यात्त पर्कटी गदं तां योः॥ बलाद्यो पिमहा बलः॥ नवे दति बलायां
 च खतमाली बलाह के॥ धमे पि कुंदरालः स्यात्पर्कटी गदं तां योः॥ महा कालस्त्रि
 नयना किम्य के प्रशयां तरे॥ मरु नीली नंगरा जेमणी नाग विशेषयोः॥ नवे द
 दुफलानि रव्या मलयु पंती वृद्धयोः॥ जलां जलं स्वतो वारि निर्गमेशे वले पिचा॥ गव
 री लोला वाटे स्यात्त श्रुतस्त्रु लो पले गिरो उरु खलं गुग्गु लो स्यात्त कंडं न्यर्थे शुल खलं॥
 चक्रवालो द्वि नेदे स्यात्त चक्रवालं तु मंडले॥ स्मृतपो रगलः काशे नले पो टगु लो रुषे॥ द
 स्ति मध्नां नमा तंगे दस्ति मध्नां विनाय के॥ नस्मत्तलं ग्राभ रूटे पां शुवर्षे दिने पिचा॥

बालकेलिका ला ला पो सिंगा ना द तं लेखने ॥ कतं डं स्या कर के प र्क पा द पे पि च ॥ अह
 मा ला रु स्त रे स्या त्स्वरुं ध त्या म पि स्म ता ॥ मणि मा ला स्म ता दारे स्त्री णां दंत रु तां त रे ॥
 धनि का ला स्म ता वे णो का द ला वी ण यो र पि ॥ रज स्व ला पु ष्य व त्या से र ने ये रज स्व लः
 एका ष्ठी ला म पी प्रा दुः शिव म धो ष धी नि दि ॥ अति ब ला बा ला ने दे मां ब ले ति ब ला
 म तः ॥ न द का ली तु गं धो त्या मु मा या मो ष धी नि दि ॥ द रि ता ली न तो रे वा द वी र व
 दू ता च ॥ अ क पा ली स्म ता क द्यां धा त्रि का परि रं त यो ॥ ग ध फ लि प्रि यं गो स्या क्को र्के
 च प के पि च ॥ ॥ ॥ ल पं ॥ ॥ आ सु ती ब ल द त्या र व्या क ल्प पा ल क य ज्ब नो ॥ स्या त्या दु
 ७ ल कं च श्वे त कं ब ले च शि लां त रे ॥ एक कुं ड ल द त्ये ष सौ नं दि नि ध ना धि पे ॥ न वे दु रं द
 पा ल लु स र्प म स्य प्र ने द यो ॥ नृ पी ट पा ल मि ष्ठ ति के ति पा त स मु द्र यो ॥ न वे सु व त
 ता ली तु ॥ द ति का यां शि रः स्त्र जि ॥ ॥ इ ति लां त वर्गः ॥ ॥ ॥ वै कं ॥ वं प्र चे त सि जा नी या
 दि वा र्धे च त द व यं ॥ स्व द्वा ता वा त म ध न यो रा मी ये च प्र च र्च ते ॥ ॥ व द्धि ॥ ॥ न वः सं
 सा र स त्रा सि श्रे यः शं कर ज न्म सु ॥ द वो दा व द ति र व्या तो व ना शि व त यो र पि ॥ द्र वः प्र द्रा
 व र स यो गी नो न र्म णि चि द्र वे ॥ ध व प त्या न रे ध र्ते दृ द्ध ने दे पि की र्ति तः ॥ उ वो वे जि नि
 वे गे स्या त् दं द्र पु षे ज वा म ता ॥ ल वो ले शे वि ला से च छे द ने रा म द ने ने ॥ ल वः का र

॥ २७ ॥

७ ल ड वं ते के कु ल के ने ल के व पो ॥ श द क्क ति ग तो ल्प के चं ड ल ज ल का व यो ॥ स्र वं गं घ र्णे
 प्रा क्तं के व ती म के पि च ॥ द वो य डे त श द्वा ने नि द शे पि द वो म तः ॥ श वो म तो श व ती रे
 स वः सं धा न य ड यो ॥ क वः कृ ते रा जि का या त व न व्ये स त वे वि दुः ॥ ध्रु का की ले शि व शं
 को व सो यो गे व ट मु ने ॥ ध्रु वा म र्वा शा ल प र्णो गी ति लु ग ने द यो र पि ॥ ध्रु वं तु ति श्रि
 ते त र्के ति श्व ले शा श्व ते न्य व त ॥ श्र वा र्वा स ल की म र्वा श्र ने दे षु च वि श्र ता ॥ शि व
 तो हे सु र वि न द्रे स लि ले ष शि वो द रे ॥ वे दे यो गां त रे की ले बा लु के गु गु ला व पि ॥ पुं ड
 ७ ल री क रु ते चा पि शि वा रुं टी म र्वा ष धो ॥ अ न म म ल की गो री को ष्ठी मु क्त फ ला सु च ॥
 दि वं स र्गे अं त रि हे ली वं शं ठे ष पो रु षे ॥ जी वो द हे प्र ने दे स्या त जी वं जी वा च जी वि
 से ॥ प्र णि ति गी ष तो ॥ जी वा जी वं ति का न्द स्यो वी श च्च जि त व र्ति षु ॥ व्या या ग म म पि जी
 ना म्या जी वं जी वा च जी वि तो ॥ ना व स्व ना वे नि प्रा ये चे षा म ता म ज न्म सु ॥ क्रि या ली ला
 प दार्थे षु बु ध जं तु वि न्ति षु ॥ दे वः सु रे ध ने रा डी दे व मा स्या त मं द्रि यो ॥ दे वी नृ दारि का
 यां च ते ज नी स्य क यो र पि ॥ स चं गु णे पि शा चा दौ ब ले द्र व्य स्व त व यो ॥ आ त्म त्वे व्य व सा
 ये चा वि ते प्रा णि षु जं तु षु ॥ सां त्वं सा म वि द्वा हि ण्ये वी ए व पा पे मु नो वि दुः ॥ कि ए व पा पे मु रा
 बी जे वि चं तु श्री फ ले प ले ॥ त वं वा द्य प्र ने दे स्या त्स्वरु पे पर मा त्म नि ॥ इ स्व र वा वि नो

शशैवामनार्थन्यगर्थयोः॥विश्वसमस्तजगतोर्ध्वोदेवेषु॥नागरे॥विश्वावतिविषा
 यास्यादश्वःपुंतेदवाजिनोः॥पार्श्वकृद्धाधोचक्रोपांतेपशुगणोपिच॥प्राधंसुप्रणतेवा
 तिदरवत्तनिधधनो॥पक्वपरिणितार्थस्यादिनाशानिमुखिपिच॥घंघोरदस्येकलदेघं
 दंमिथुनयुग्मयोः॥ऊर्ध्वस्यादुष्टितेतुंगेचोपरिष्टादपिस्ततः॥धाववद्योःस्वर्गलोकेग
 गतेचप्रयुज्यते॥अविशैलेरवामेषेनवेन्मषरुक्चले॥रुतुमत्यामविप्रोक्रोशिवि
 तुजिनृपांतरे॥कविःकाव्यकरेशरेबांकविर्वा॥स्त्रीकिश्रुक्रयोः॥कविस्वस्तीनेक
 शिताछविःशोभास्त्वोर्मता॥ग्रीवापिकंधरौघास्यात्रछिरया मर्षिष्यते॥रेवातरंगि
 णीतेदेरेवानीत्यास्मरन्निगां॥लदाकरंजनेदेस्यफलेवाद्यखगांतरे॥नीवीपरि
 पणोग्रयोस्त्रीणांजघनवाससि॥पृथ्वात्तमोपृथोदिगुपत्रिकाहृक्कजीरयोः॥लघ्वा
 हृस्वविवर्क्यांप्रनेदेस्यदनस्यच॥॥वत्रि॥॥प्रत्नवोजलमूलस्याजुन्मत्तमो
 पराक्रमे॥आद्योपलब्धयोस्तानेविचनवानिचतौधने॥प्रसवस्तुफलेपुष्पेवृक्षाणां
 गतमौचने॥लोकोत्यादेचसचिवसहायेमन्त्रिस्ततः॥कितवो धूर्तवन्मतेवचके
 कनकाकपे॥त्रिदिवास्त्रिदशावासेत्रिदिवासदंतरो॥वस्त्रवस्तुपकारेस्याह्नीमसेनेपि
 गोदुहि॥पक्षवःकिशैलेशिगेविटपेविस्तरेबले॥मृगारलक्ररागेपिविद्रवस्तुपलाय

३ लि

॥६८॥

रि २

नो॥बुधौचपुंगवःश्रेष्ठेषुनेषेज्जांतरे॥ऊर्ध्वोमातुलेविस्तारस्तवेक्रतुपावके॥
 उसवोमदउसेकेदृष्टाप्रसरकोपयोः॥केशवोवास्तुदेवस्यातपुंतागेकेशवत्यपि॥
 कैतवंतुछलेद्युतेफेरवोऊर्ध्वकेस्त्रयो॥गौरवोतरकेघोरैकैतवःकितवेरिपौ॥कैरवंकु
 तुदेप्रोक्तंचद्रिकायांतुकैरवी॥नैरवंनीषणोगर्तैरवःसमुदाहृतः॥सैधवोमणिम
 थैपिसिंधुदेशोरुवाश्रयो॥वाडवंकरणेस्त्रिणांमौर्वेविप्रेपिवाडवः॥वाडवंवडवासं
 धेवाडवोरसमातयोः॥आश्रवःस्यात्प्रतिज्ञानेकेशेचवचनेस्त्रितो॥शात्रवंजावस
 दत्योःशत्रूणांशात्रवोद्विषि॥माधवस्तुवसंतेस्यादेशाविगुरुडधजे॥माधवीमदि
 यांचकुट्टन्यामपिमुक्तके॥मधुनःशर्करायांचगलवोश्रुनिलोध्रयाः॥आर्तवस्तु
 संज्ञतेस्त्रीरजःपुष्पयोरपि॥नार्गवःपरशुरामेस्यातगजेशुक्रैमुधन्यनि॥नार्गवीदे
 मवत्यांचकमलासितदूर्वयोः॥आहवःसंगरेयागेराघवोरघुवंशजे॥महमीनप्रनेदे
 पिजलधेरावःस्तुतः॥ताडवंकथितंनृत्येदणनेदेपितांडवं॥निह्रवंनिह्रतौविद्याव
 विश्वासापलापयोः॥संनवःकथितोदेतावुत्तमोमलकेपिच॥आधारानतिरिक्तत्वा
 आधेयस्यचसंनवः॥बांधवोबंधुमुहदापंचत्वनिधनेस्ततः॥पंचानामपिनावाथ

प्रतावशक्तितेजसोः॥ अनावस्यादसत्तायामनावोनिधतेपिच॥ विनावस्यात्परि
चित्तौकाम्यस्यादीपनेपिच॥ निषावः सूर्यपवनराजमाषेषुदिरितः॥ पावनेशं बिकारा
चनिः पाको निर्विकल्पकः॥ सुग्रीवः शोचनग्रीवः सुग्रीवो नराधिपः॥ राजिवाख्यामृगे म
सेपनेराजोपजीविनि॥ गंडीवगंडिवो जिह्वाः कोदंडे कामुकेपिच॥ अक्षीवंबास
वेविद्यादमत्रेही वमन्यवत्॥ पार्थिवो नृपतो नृमेर्विकारे पार्थिवो न्यवत्॥ पार्थिवी
स्यादुमायां चादीदिविधिषणात्रयोः॥ प्रसेवः कथितो धीरवीणांगस्य तयोरपि॥ वद
वास्यां नृनदास्योः स्त्रीविशेषे द्विजस्त्रियः॥ कारवीमधुरादीप्यत्तत्रात्र हस्तजीरके
सुखवीकारवोलास्यात्र हस्तजीरकजीरयोः॥ ॥ वच॥ ॥ नवेदनीषवस्ताने मद्यसं
धानयद्गयोः॥ उपपन्नवः सिद्धकेये विप्रवो त्यातयोरपि॥ परिपन्नवश्च लेस्यात आकले
पिपरिपन्नवः॥ कुशीवस्तु वास्त्वमीको नदया च कयोरपि॥ रामपुत्रौ कुशलवो वेकोत्तौ
त्रौ कुशीलवौ॥ अपरुवोपलापे च स्नेहे चापरुवो मतः॥ पराजयः कतिरस्मारे विनाशेपि
पराजयः॥ नवेत्यारसपारस्त्रेणैश्वरासुते द्विजात्॥ शास्त्रिणादीनवो दोषपरिजि
ह्मदुरंतयोः॥ विदुः शीतशिवं शम्यां शैलेयशंपुष्पयोः॥ सैधवेपि पुटग्रीवो गगरीता

॥६६॥

मृकुं नयोः॥ धार्मार्गवत्तु पा मार्गदेवदास्यामपि स्मृतः॥ अनुजावः प्रतावे च निश्चये
नावस्तचने॥ बलदेवस्ततो वाते कालंदी नेदनेपिच॥ बलदेवामपि प्रादुस्त्रायमाणो
षधे बुधा॥ जलविस्तृतपंचांगे कर्कटे जलचतुरो रोहिताश्वो बृहद्रथो हरिश्चंद्र
पात्मजे॥ सहदेवा बललादंडोत्पलासखीनेषजे॥ सहदेवो सार्धे प्यरिष्या सहदेवश्चापांड
वो॥ जीवजीवश्च कोरेस्याद्रुमपक्षिविशेषयोः॥ ॥ वपः॥ ॥ आशितं न वमन्ता दोतपावा
णासि संनवः॥ ॥ इति वां तवर्गः॥ ॥ शदि॥ ॥ वशमायत्र तायां स्यात्तवशमिच्छाप्रचुत्त
योः॥ वशा वंध्यासुता सोषास्त्रीगवी करिणीषु च॥ कुशोरामसुते दत्तेयो केदीपकु
शांजने॥ कुशीपालेपि वात्यां कुशापापिष्टमत्रयोः॥ कुशावाच्यवदाख्यातः स्पशं
णधियुद्धयोः॥ शशो गंधर्से लोघ्रस्यात्यशौ पुरुषांतरे॥ दशस्तु संगमे स्तर्यं चंद्रयोरव
लोकने॥ पक्षांत वैदिकविधौ दर्शश्च समुदाहृतः॥ स्पशोरुजायां दाने च स्पर्शने स्पश
केपिच॥ विदुस्तो वैश्यमनुजप्रवेशेषु मनीषिणिः॥ पाशः कचानां सघाभीकणां
शोचनो त्रकः॥ छत्रो घातं निदार्थः पाशः पक्ष्मादिबंधने॥ नाशः पालायने प्रोक्तो निधना
नुपलब्धयोः॥ काशस्तृणैस्यातकवथौ वाराणस्यां च पाश्यथ॥ केशो देत्यांतरे बालेहीवे

५ पु

रेचप्रचेतसि॥की शोर्गदिबरेप्रोक्तः कीशः शारवा मृगेपि च॥ईशः प्रनौशंकरे स्यात्तई
शालांगलदडके॥वेशो वेश्या गृहे प्रोक्तो नेपथ्ये गृहमात्रके॥लेशो दुखेपिरागादौ
व्यवसायेपि च क्वचित्॥वंशो वेलो कुले वर्गेष्टस्यावयवेपि च॥देशस्या तखंडने दो
षे देशो मर्मणि कीर्तितः॥सर्पकृतेपि सन्नादवनमद्विकयोरपि॥अंशुलेशो रवोरश्मौ आ
शुब्रीहौ च सत्तरे॥पाशुर्धूलिसमार्थचिरसंचितगोमये॥दृक् दर्शने लोचने च दृश
द्वौ वीक्षणेपि च॥दशावर्त्राववस्त्रायां वस्त्राशे सुदृशा अपि॥निशादारु हरिद्रायां स्या
त्रिया मादरिद्रयो॥आशा नृक्षादिशोत्रोक्ता राशिर्मेषादिपुंजयोः॥पेशी पल्लवपिंडां च
मांसां खड्गपिधानके॥अंडनेपि पेशी स्यात्सुपुंर्वकणपेपि च॥॥शत्रि॥॥कपिशः सि
द्धकेश्यावमाधव्यां कपिशी मता॥कुलिशो मसने दे स्यात्तदंजो लो कुलिशं मता॥वि
वशः स्यादवस्यात्मारिष्टदुष्टधियोरपि॥निस्त्रिशो निर्दये खड्गे सदृशं तच्चित्तं स मे॥बा
लिशः शावके मूर्खे लोमशां लोमसंयुगे॥मंदूके चापिकाशी शशुगाली जटिला सुच
लोमशाश्च कशं व्याचमर्कटी कावजं घयोः॥महामेदातिबलयोः शक्तिनिनिदिचेष्ट
तो॥विकाशो विजने व्यक्तौ संकाशः सदृशं तिके॥प्रकाशोतिप्रसिद्धे स्यात्प्रहसातपयोः

॥१००॥

३ स्त्रीप

सुटे॥निकाशोति श्रयेतुल्ये दृताशो निर्दये खले॥की नाशः कर्षके कृद्रे रुतां तोपांशु
घाति नोः॥सुखांशो राजति निशेशो च नो सप्रचेतसोः॥पिंगाशो मसज्जिदे स्यात्तथाप
तावपि॥पिंगाशी नलिकायां च पिंगाशं जात्यकां चने॥पलाशः किंशुकेश्यां राहसे द
रिते न्यवता॥पत्रे पलाशं संवेशः शयने वसनेपि च॥निवेशः शिविरोद्धाह विन्यासेषु प्र
काशितः॥निवेशो मसुते नो गे निवेशो वेतनेपि च॥प्रदेशो देशमात्रे स्यात्तत्तर्जन्यं
ष्टसंमिते॥नित्रावपि प्रदेशः स्यात्सदेशो न्यक्षदेशयोः॥निदेशः शासनोपात्तापणे
प्रयुज्यते॥आदेशो दर्पणे टीकाप्रतिपुस्तकयोरपि॥वर्कशैः पुरुषैः क्रूरैः रूपेण ति
दयेदृढे॥इक्षोसादसिक काशमर्दकं पिधयोरपि॥गिरीशो वाक्यतौरुद्रे गिरीशो प्रप
तावपि॥उडीशो ग्रंथने दे स्यात्त उडीशश्चंडिकापती॥सुंगीशः शंकरे चंद्रपक्षिशस्ता
हर्षिस्तयोः॥उपांशुर्जनेपेदे स्यादुपांशुर्विजने व्ययं॥दुःस्पर्शरिव्यावरस्पर्शकं टका
यां यवासके॥विपाशाख्यासरिद्धपाशवर्जिगो मता॥विकेशी पटुवर्तस्यादिकेशी
निकचस्त्रियां॥वृक्षेशी बल्वजेषु स्यात्त वृक्षेशो वलेवटे॥॥शचा॥॥अपदेशः
स्मृतौ लक्ष्यनिमित्तव्याजयोरपि॥गुडाकेशयश्च पतौ तथा स्यान्मध्यपांडवे॥जीवितेशो
यमेकां ते जीवितो जीविताधिपो॥पुरोडाशो हविर्न देवमस्यापिष्टकस्य च॥रसे सोमलता

योचदुतशेषेचकिर्तितः॥परीवेषःपरिवृतोमानोःसविधमंडले॥प्रतिकाशःसदायेस्याद्य
 तद्वरपुगेजयोः॥उपस्पर्शःस्पर्शमात्रेस्तानाचमुनयोरपि॥नृनिस्पृकवैश्यनरयोःरुद्र
 कस्याश्चलेशनोः॥अपल्लेशोपशब्दस्याज्ञाषातेदावपातयोः॥उपदेशोविदेशोचमेद्रोगे
 पिवर्तते॥खंडपशुःपशुरामेशंकरेचर्णपिलेति॥खंडामलकजैषजसिंहिकातनयपि
 च॥पादपाशीखटुकायाश्चखलाकटकेपिच॥स्मृतापंचदशीपूर्णमास्यमावासायोर
 पि॥॥इतिशांतवर्गः॥॥षडि॥॥वृषःस्याद्यसकेधर्मेसौरजेयचक्षुःत्रले॥पुंराशो
 नेदजोःशृंग्यामृषिकश्चयोरपि॥कपिकश्चरुषामोक्तावतिनामासनेवर्षा॥विषंतुगा
 रलेतोयेतिविषायाविषाजवेत्ता॥तुषोधात्यात्यचिरव्यातोविनीतकतरावपि॥मिषंच
 स्पर्शनेयाजेतर्षोत्तिस्मापिपासयोः॥वर्षसंवसरेवृष्टौजबदीपेघनेषिबु॥प्रावृद्धा
 लेतुवर्षाःस्फुःवर्षःवर्षणमानयोः॥माषोत्रीसंतरेस्तखेमानवृद्धोषत्तेदयोः॥मेषो
 राशिविशेषेस्यातकुरणेतेषजंतरे॥शेषःसंवर्षलेनतेउपयुक्तेतरेवधे॥प्रसादाजिज
 तिमायेदानेशेषाचकीर्तिता॥शेषस्तुशेषणेरजयस्तन्यपिनिगद्यते॥दोषःस्यादृष
 योपापेदोषरात्रौतुडेपिच॥कोस्तुषकुड्मलेपात्रेदिवेखड्मपिधानके॥जातिकोषे
 र्घशास्त्रेचपेश्याशब्दादिसंग्रहे॥घोषस्तुघोषलेधानगोपालाजीरपक्षिषु॥घोषातु

॥१०१॥

षि३

शतपुष्पायांघोषःकांस्तेबुद्धनो॥प्रेषःस्यात्प्रेषणेलेशेमर्दलोन्मानयोरपि॥पौषोमा
 सविशेषेस्यात्पौषंतुमदयुद्धयोः॥चिदकांतोव्यवसायेचडिगीषायांरुचौगिरि॥विदु
 व्यापनेचविष्टायांशुषिशेषविलेपिच॥रुद्रवैदवशिष्टादौदीधितावपिपद्यते॥उषाव
 णस्तारात्र्योरुषःकामितिगुण्युलो॥रुषाणागवलायांस्यादेसारिणिरुषोमतः॥क
 र्षःकरीषदहनेरुत्यायामपिचेष्यते॥॥षत्रि॥निकषःश्याणफलकेनिकषायातुमा
 तरि॥नद्युषोराडिजुडगेकलुपंचाविलोतसौ॥विलिपंकलमपेरागेपराधेपिवि
 लिपं॥निमेषनिमेषकालप्रतेदेहिनिमीलने॥परुषकबुरेस्योहेनिष्टुरवचस्य
 पि॥पुरुषःपुरुषसांख्येचपुन्रागपादयोः॥पौरुषपुरुषस्योक्तंनावेकमेणितेउसि॥वृद्ध
 विसृत्तदोषाणिनमानेत्रिषुपौरुषं॥कल्मषोराक्षसेरुक्तेकल्माषःरुक्तेपांडुरो॥रु
 क्माषोयवकेप्रोक्तःरुक्माषंकाजिकेपिच॥उष्णंषंतुशिरोवेष्टिकिराटेरुक्तेपांडुरो॥वि
 तरिषशो ननाकारेतेलेखिव्यवसाययोः॥रौहिषंकलणेइयंरौहिषोदरिणांतरे॥वि
 शेषःस्याद्विष्टनिविस्तेषोविधुरेपिच॥प्रदोषःकालनेदेस्यात्प्रदोषोदोषदृष्टते॥अ
 न्नीषुःप्रग्रहेरुक्तेप्रत्युषोदमुखिवसो॥गंदूषोमुखपूतोस्याकरिदस्तागुलावपि॥प्र
 सृतोन्मितेचशैल्यःकथितोतटविलिप्योः॥मारिषशाकनेदेस्यात्मारिषादहमातरि॥

नाद्योऽन्नाभांरिश्वायेताविषः कनकं बुधो॥ आनिषं पललेतो जेसं तो गोचो च
 शोरपि आनिषं सुंदराकरे रूपादिविषये पिचा॥ आकर्षः शारिपलके पाशं के द्युतद्वि
 ये॥ आकर्षणे पिचा कर्षः कोदंडा न्यासवस्तुनि॥ संदुर्षमा दुःखद्विषां प्रमोदे पिप्रते
 जने॥ शुश्रूषा श्रोतुमिच्छायां परिचर्या कथो नयो॥ डिगीषा देतुमिच्छाया॥ व्यवसायाप्र
 हर्षो यो॥ महिषी नृपपत्न्यां च सौरभ्या तोषधीतिदि॥ ॥ पचा॥ ॥ अनिमिषः सुरेमये
 पलकषो लुक्कषणे॥ अनुकषेरिथस्याधः स्थितदारुणि चेषते॥ अनुतर्षः सुरापानपा
 त्रेट्ठान्जिलाषयो॥ वातरूषस्तवा तरोचचयो शत्रुकार्तुके॥ अंबरीषरणे लाष्ट्रे
 णंबरीषो नृपातरे॥ मातृदोस्वदपरशावात्मा तव विशोरयो॥ परिघोषो निदाते स्याद
 वाचो जलदधुनो॥ नदिघोषो जुनैरेघोषे तदि जतस्य च॥ मादाघोषत तदायुमया
 घोषो तिघोषणे॥ स्मृता कर्कटं शृङ्गां च मदाघोषान्तीषिति॥ विपुरुषः विनरे स्या
 तलोक जे देयलंबुषः॥ छर्दने लंबुषा प्रोक्ता गौडी रिस्वर्गविस्मयो॥ पलकषा गोक्षुरक
 रास्त्रा गुणु लुविश्रुके॥ मुंडीरी लाक्योश्चापिराक्षु सेपि पलकषः॥ ॥ दापांतवर्गः॥ ॥
 सदि॥ ॥ रसो गंधसेखादेति क्तादौ विषरागयो॥ शृंगारादौ प्रचे वीयेदं दधातुं बुपा
 रदे॥ रसा तु सत्त्वकीपागजिह्वाधरणि कं गुणु॥ नासो नासिसमाख्या तो गोष्ठकुटुम्ब

॥१०२॥

ध्रुवो॥ दासः शृङ्गे दासपात्रे नृत्यधीवरयोरपि॥ दासिवेद्यां चक्रियां चुरासः कोलाहले
 धनौ॥ ताषा शृंगलके रासः क्रीडाया मपि गोदुहं॥ वासः सुवर्णचूडे स्यात्प्रज्ञेदेवि
 ध्रुपवर्णः॥ नाः प्रजावे मयूषे च माः स्मृतश्चंद्रमासयो॥ अदपरस्मिन्नत्रापि गोसागं
 धरसोषयो॥ वसतर्पकपल्लवि वर्षे वसंतु वक्रसि॥ गुमंस्तं वेदरे जेदे सत्त्वके ग्रं
 थिपर्णके॥ वासो जे देयवस्त्वने वास्या सोदाट्टरूषके॥ व्यासो मुनी स्याद्विस्तारत्रा
 सो न्नीमलिदोषयो॥ दंसो विदुर्गं जेदे स्याद्वे विस्त्रो दयातार॥ योगिमात्रा वि
 जेदे पुपरमात्मनि क्मसरे॥ निर्वो जे नृपतो दसः शारीरमरुदतरे॥ असः स्वधे वि
 नागे चकं सोदेत्यां तरे स्मृतः॥ कास्ये च कास्यपात्रे च मान जेदे चकीर्तितः॥ मांसस्या
 दामिषे मांसीकं कोली जटयोरपि॥ वसुर्मयराग्निधनाधिपेषु यो केषु शेषाद
 सुहाद्वे च॥ दृष्ट्याषध्याख्या तधनेषु रने वसुस्तं स्यान्मधुरेन्य वज्रु॥ नासा तु
 नासां काया स्यान्नादाघदारुणि॥ नसातु कथिता वासि श्रेष्ठमृत्तिवया बुधे॥ दि
 सा चोया दिवधयो शंसावचनवासयो॥ मिसिस्तु मधुरीमां स्याः शतपुष्पा जनेद
 यो॥ कासुर्विकलवाचिस्यात्कासुः शक्त्या युधे पिचा॥ प्रसरश्चा जतन्योश्च कदलीकी
 रुधोरपि॥ ॥ सत्रि॥ ॥ अलसपादरो जे स्यात्क्रिया मंदे दुमांतरे॥ अलसायां सपायां च

९ ध

रनौसोदर्विषयाः॥पतसःकंटकिफलेकंटकेकपिरुग्निदो॥सुरसःस्याममधुरेपणा
सेसुरसापिच॥सारसःपक्षि नोदंक्षोसारसंसारसीरुदे॥श्रीवसोदृक्कधूपेस्यात्यं वजे
पीतवाससि॥सादसुबलाकारेहतकायेदमेपिच॥वासोदृजलनियसिजगरेसु
निषर्षके॥लालसोलालसापिस्याद्यात्राट्टकातिरेकयोः॥श्रीसुकोतुसमाससुस
हेपेचसमर्थने॥कीकसःत्रमिजातोस्यादस्त्रिकीकसमिष्यते॥पायसमारमानेस्याधि
वासेपिचपायसः॥वायसोनाडिजंघेस्याध्रीवासेचागुंफुने॥काकोदुवरिकायाचका
कमांच्याचवायसी॥मानसंसारसीरवांतेपाश्यासोनिहंतोमतः॥आख्याधिकापरिके
देचान्यसो न्नासनेतिके॥उश्वासःप्राणनासासःगद्यबंधगुणांतरे॥इषासोधनिधन
षोर्विलासोत्तावलीलयोः॥वीतसंबनोपायमृगाणापक्षिणामपि॥तेषांतेवचविश्वो
सदेतोप्रारवणेस्मृतं॥उत्तंसःकण्ठिरेस्याधेपरेचावतंसवत्॥बीजसो न विव्रतरु
पुर्जनेचष्टणामनि॥विद्वानात्मविदेप्राइपडीतेचानिधेयवत्॥नृयान्यादुतरा
धेस्यामुनरर्थेवदोव्यायं॥आयानवृधेतिशस्तेचद्विदेतिव्यसर्पिषोः॥रेषास्याद
धनेरुरूपेपिचकथ्यते॥वेधाविधोबुधेविहोः॥आगःपापापराधयोः॥वचोदो
होपुरोषेचवचोरुपेपिचकचि॥छंदःपद्येचवेदेचखैरावाराजिलाषयोः॥ऐनो

रु ९

॥१०३॥

३ गुह्ये

पराधेकयुंउषेमनश्चित्तमनीषयोः॥रोदश्चरोदसीचापिदिविचक्ष्मौपृथक्पृथक्॥सहप्रयोगे
प्यनयोरोदस्यादपिरोदसी॥उज्ज्वलजसिधाक्तनामवष्टंनप्रकासयोः॥उज्ज्वलेचदीप्तोचते
जोधाक्षिपराक्रमे॥प्रजावतोजसोश्चाश्चूरजस्यादात्रवेगुणे॥रजःपराजरेणोत्तरजवत्
रिक्तीतितां॥वपुर्जव्यात्रतोदेदपयस्याहीरनीरसी॥वयःपक्षिणिबाल्यादोवयोयौवत
मात्रके॥श्रेयस्तुमंगलेधमेश्रियांशस्तेतुवाचवत्॥३२॥श्रेयसीकरिपिष्ठात्यांअनयारा
स्तयोःपि॥श्रोतोःबुवेजोःद्रिययोरोकाःसज्जनिजाश्रये॥३३॥शिरःप्रधानेसेनाग्रजाग
मस्तकयोःरपि॥तपश्चांजायणादौस्यादधर्मलोकांतरेपिच॥३४॥तपोमाधेचशिशिरेस
रस्तोयतजागयोः॥उषःप्रजातेसंध्यायामुरःश्रेष्ठेववक्षसि॥३५॥तनोधकारेस्वर्जनो
तमःशोकेगुणांतरे॥ननोव्योमित्तननामेधेश्चावलेचपतव्यदे॥घ्राणेमृणालस्त्रे
चवर्षासुचननास्मृता॥तारोबलेचमधेचवेगेचरेतःशुक्लेचपारते॥अर्चिममुरवसि
ग्वयोबर्हिःकुशदुताशयोः॥सहोबलेज्योतिषिमागंशोर्षहमतयोश्चापिसदाःप्रति
ष्टः॥रहोपिसुरतेचतत्रेमहोचवेदुसवतेजसोश्चा॥ज्योतिप्रकाशेदृशिताकासुज्योति
र्दितेशानल्योरपिस्यात्॥धनुःपियालद्रुमराशिचेदयोःशरासनेचापिधनुधरेच॥
आशिरुक्तादिताशसापवताशनदृष्टयोः॥राक्षसितिचदंष्ट्रायाराक्षसीराक्षसस्त्रियां॥
आशिरु

र ३

तामसीतिचदुर्गायां तामसोऽनुजगेरवले॥ पुष्पसीकालिकानीत्योः पु
 ष्पसः धपवेधने॥ सच॥ नवतघनरसां प्रनिर्गसेमोरटे सुचा कर्पूरे पीलु
 पण्याचिसम्यक् सिद्धरसेपिचा॥ सर्वरसः स्मृतो वाधे नाड जेदे च धरण के॥ स्मृतं ताम
 रसपदो तामकाचनयोरपि॥ सिद्धसोरसेया डिप्र नृ तिषपि दृश्यते॥ महारसः स्या
 श्वजरे कोशकारुक् शेरुणो॥ रासेरसुरासे स्याद्रससिद्धि बलावपि॥ षष्ठी जागरि
 वे गोष्ठां शृंगारपरिहासयोः॥ स्वः श्रेयसं च न द्रे स्यात्परा नंदे च शर्मणि॥ निः श्रेय
 संतु कल्याणे चंद्र चूडा पवर्गयोः॥ ऊं चीना साविषदं जाला कुलदष्टि जुजगमे॥ ऊं
 चीनसी जतन्या चलवणारव्या स्परकृतः॥ मलीमसतुमलिते पुष्पका शिशलोदयोः॥
 पौर्णमासपौर्णमासौ यद्वृत्तिमयोः नृमात॥ अधिः वासो निवासे च संस्कारधरपना
 दिनिः॥ चंद्र हासो दशग्रीवकूर वासिमात्रके॥ विश्वावसु स्याद्रुधर्व जेदे विश्वाव
 सुनिशि॥ विश्वावसुर्दिनमणो हार जेदे च पावके॥ पुनवसु जेदे काकुका चायन
 मुतावपि॥ राजहं सो नृपश्रेष्ठे का देवकलहं सयोः॥ कलहं सक्त का देवराजहं से
 नृपोतमे॥ अवधंसः पाश्र्वित्यागे निदनेष्वचूर्णने॥ स्मृतं तामहूरसां प्राकामृत्वि का
 दुग्धिका सुच॥ नीलजलासरो जदसरि द्देपि विद्यति॥ सुमेधास्तु बुधो स्यात्

१०४॥

४ स्या

जोतिष्मत्प्राप्यते॥ सुमना पुष्पमाला तयोस्त्रिदशे कोविदेपिचा॥ प्रचेतास्तु नोदष्टे
 प्रतीचीदिगधीश्वरे॥ विद्यायाश्च शकुंते स्याद्विहायः सुरवर्त्मनि॥ त्रिस्रोता जह्नु वन्यायां
 त्रिस्रोताः सरिदंतरे॥ अगोकाश्च नगोकाश्च सररुसं दपक्षिषु॥ उदचिरुद्रववह्नौ दि
 वोकाश्च तवेसुरे॥ दीर्घायुः शास्त्रलोका के माकंडेपिच जीवके॥ सप्तार्चिः पावेके प्रोक्तः
 सप्तार्चिः कूरचक्रुपि मकनीयाननु जेस्वत्येकनीयानतियुतिच॥ वरीयानतियुति
 स्यादरिष्टे श्रेष्ठयोग्योः॥ साधीयानतिवा लहस्या दतिसाधौ तु वाच्यवत्॥ सप॥
 स्यान्नं नश्चमसश्चंद्रे चित्रारूपेन्द्रजालयोः॥ दिग्गुनिर्मास इत्येति वेदिगुरसेपिचा॥
 दिव्यचक्रुः सुगंधस्य जेदे च सुलोचने॥ हिरण्यरेतसं प्रादुर्दिवा करदविभुजो॥
 इतिसांतवर्गः॥ हृदि॥ सहाबले सहा मुद्रपण्यां तु नख जेषजे॥ सहदेवानुमायो
 श्रसहः क्रांते सहा लुचि॥ ग्रहो निग्रहनिर्बंधग्रह लेशुरणोद्यमे॥ सूर्यादौ प्रतनादौ च
 सै हि केयो परागयोः॥ बह्वृष नस्वंधदेशे गंधवदेपिचा॥ बह्वृष केले किपिछे गृहा
 पन्या गृहं स्मृता॥ ग्राहो गृहो वराहे च नादौ बंधनरू टयोः॥ स्नेहस्ते लादिक संर
 प्रयो स्यात्सो हृदेपिचा॥ प्रोहो निपुणवै स्यात्प्रोहो हस्त्यादि पर्वणोः॥ मोहमिधं तिष्ठ
 र्वायामविद्यायां च सुरयः॥ लोहस्तु शौस्त्रके लोहं जांगवे सर्वते जसो॥ बृहस्प

कृ३

कलविन्यासेनिर्माणे वृंदतर्कयोः॥१॥ सिंहः कंठीरवेशौ सत्तमे चोत्तरास्तितः॥ सिं
 हीकृपावृहयोः स्यान्नसकेराकुमातरि॥ बक्रः स्याद्वि॥ पुन्ये च्यादिसंख्या
 स्वप्यनिधेयवत्॥ अहिर्विनासुरे सपेपीहान्द्यमवाच्योः॥१॥ गुहातुग
 करे सिंहपुच्छांस्कंदे गुहोमतः॥ वाहानुनायां वाहस्तुमानने देवदेहयोः॥
 महीचूचो महीनद्यां महत्सवतेजसोः॥ कुहूः स्यात्कोकिलात्नापनेष्टु
 कलदशयोः॥१॥ हन्त्रि॥ पटहस्तु समारंजे आनके पटहः स्मृतः॥ कलहः
 खड्गकोशे स्यात्तु मेघुद्धराटयोः॥१॥ प्रग्रहस्तु तुलास्तत्रे वंदां नियमने नु
 जे॥१॥ हयादिरस्मोरश्मौ वसुवर्णहिरिपादपे॥१॥ निग्रहो नर्मने प्रोक्तो
 मर्यादायां च बंधने॥ विग्रहः समरे काये विस्तारप्रविज्ञागयोः॥ संग्रहो वृद्धदुरं
 जे मुष्टिसंज्ञे पयोरपि॥ आग्रहो नृगदासुक्तो राग्रहो नृगपि च॥ प्रग्रहस्तु
 स्त्रेवर्षादिप्रग्रहपि च॥ वराहादि विज्ञातान् केषां प्रिमुक्तयोः॥ तवा
 हस्यात्तवदिननवारः प्रतीपतीर्थो॥ प्रवाहो व्यवहारस्यादपि श्रोतसिवारिणः॥

हृ३

॥१०५॥

कदा होद्यततैलादिपाकपात्रे कथ्यते॥ कटाहकर्मपट्टे च स्तूपे च महीषाशिशोः॥ उष्मा
 हस्तद्यमे सत्रे प्यारो होदैर्घमानयोः॥ आरोहणे तितं वेचसमुखयनिषादिनोः॥
 निग्रहः शेषरेदारे निर्यासे नागदतके॥ वातूहः कालकंठे स्याद्वातूहश्चातकेपि
 च॥ अतूहानीति कायां स्यादतूहश्चित्रमेखले॥ सुवहाशस्त्रकी गोधापदी सेपा
 लिमुच॥ एलापण्यां च सुवहावस्त्रकी रास्तयोरपि॥ सम्यच हेतुमुच्यते वाच्यं
 तमुदाहृतः॥ वैदेहीरोचनासीतावलिकुस्त्रीपिष्पलीमुच॥ वाराहीमाट्टोदेस्या
 दृष्टिनामौषधेपि च॥॥ हच॥॥ अग्रहद्विविधो दृष्टिरो जेगजातिके॥ स्वतं
 त्रार्थनिषेधे च प्रतिबंधे प्यग्रहः॥ प्रतिग्रहः स्वीकरणे सैत्यपृष्ठे पच्यते॥ द्विजेभ्यो
 विधिचदेयेतद्गृहे च ग्रहांतरे॥ परिग्रहः परीजने पन्थांस्वीकारमूलयोः॥ श्रीदेवप
 ग्रहो बंधामुपयोगे नुक्कुलके अग्निग्रहो जियोगे तिग्रहो गौरवेपि च॥ परिवर्द्धं तु राजा
 हवस्तन्यपि पश्ये॥ पितामहो विरंचे स्यात्तातस्य जनकेपि च॥ तमोपहः सदस्त्रां शुभगां क
 जिनवक्रिणु॥ उपताहो व्रणलोपपिडे चीणनिबंधने॥ परिचाहो जलाकासे महीभूद्योग

वस्तुनि॥ तद्वरुहंगरुहोमोर्वगरोहाटाकावपि॥ वरारोहस्तु कथितोहस्तारोहावरोहयो॥
 अवरोहोवतारेस्यावरोरगतोक्रमे॥ अश्वारोहाश्वगंधायां अश्वारोहाश्वचारके॥ महा
 सहामाषपण्या अम्लानकुसुमेपिच॥ गंधवहातुनासायां वायौ गंधवहोमतः॥ नवेदेवस
 हातिरव्यास्ततेदं होतृलेषधो॥ ॥ हपं॥ ॥ प्रपितामह इत्येष विधौ पितृपितामहे॥ ॥ इति हं
 तवर्गः॥ ॥ पांताः स्फुर्यद्यपि कं तावर्गानि नोतुरोधतः॥ पृथक् क्रमेण कथं ते तथाप्येते सम
 व्यायातः॥ ॥ कृद्धि॥ ॥ अकृकले तुषे च केशकटव्यवहारयोः॥ आत्मदेपाशके चाकं तुष्ट
 सौवर्चलेन्द्रिये॥ कृद्धो प्रिजेदे नष्टकेशो कलेरुतवेधने॥ कृद्धमुक्तं च न ह्येयदः श्रीगुह्य
 देवके॥ दृक्ः पटोहरवृषेताम्रचूडे प्रजापतौ॥ मुनिजेदे हुने वदोदके दृक्ता सुविस्मृता॥
 पद्मोमासाधके पार्श्वे ग्रहे साध्यविरोधयोः॥ केशादेः परतो दृंदे बले सखिसहाययोः॥ प
 तत्रेचुद्धिरधे च देहांगे राजकुंजरे॥ लक्ष्मशरव्ये संख्यायां लक्ष्मस्तनिकथ्यते॥ प्रकादिप
 विषेशे स्यात्तु कर्तृगर्दनादयोः॥ पिष्यलेदूरपाश्वे च गृहस्य परिकीर्तितः॥ न्यकः परशुरामे ॥१०५॥
 स्यान्महं कास्तीति कथ्योः॥ चोदोगी तं शुचौ दाकः तथातीक्ष्णमनोदयोः॥ धां कृत्स्नकाक
 वक्योस्तु के तिकु केगृहे॥ धां की कं कौलिकायां च कदो दोर्मले कथ्योः॥ सोरजे चरणे कद

शुभे काननवीरुधोः॥ कदो ग्राहिकां कां चीप्रकोष्ठगजस्तु॥ स्रष्टापादपरीधा तपश्चादं
 चलपक्षवे॥ रथतावेपिकृत्वा स्याद्दीकं विस्मयदृश्योः॥ मोक्षो मुष्कृदके स्यादपवर्गे च मो
 चने॥ रूपादपजा तो स्याद्दृष्टो प्रेक्षण्यचिक्रेण॥ तिहास्तौ च याज्यायां सेवा
 तिहितवस्तुनोः॥ प्रेकानपेदृष्टे बुद्धौ रहारहेण लक्ष्योः॥ ॥ कृत्ति॥ ॥ अर्धहो
 धिष्ठते प्रोक्तप्रत्यक्षे धर्मिष्यते॥ गोरं हो नागरं गे स्यादुवां च परिरक्षणे॥ आ
 रं रं रणी ये स्याद्दीर्घमर्मणि दंतिनां॥ रक्ताकः कासरे कुरे पारापतच कोरयोः॥
 सती द्वाग्रं च ते दे स्यात्तव बुद्धौ तिहा लने॥ उन्नेहा नवधाने स्यात्काव्यालं कणे
 पिच॥ नृगाही चेद्रवारुण्या नृगनेत्रा त्रियामयोः॥ गवाही शक्रवारुण्या गवा
 हो जालके कपोः॥ ॥ कृच॥ ॥ वीरवृद्धस्तु तलातकुत्तु मयोर्मतः॥ राजवृद्धः
 पियाले स्यात्सुवर्णलुतरावपि॥ देववृद्धः सप्तपण्तिगारादिषु गुणुलौ॥ नृतवृद्धः
 शुशाखो देतथो स्यात्ताकपादपे॥ विशालाक्षो हरेताक्षो विशालाक्षी चरस्त्रिया
 सकदोटाधवद्रो स्यात्काटाक्षसहितेपिच॥ ॥ इति हं तवर्गः॥ ॥ अथावयानिवह
 ते व्यक्तं पूर्वाक्षरक्रमात्॥ अकारादिकमप्यस्मिन् अधिकं पूर्वतो विदुः॥ अस्यादनेस्व

न्याये विष्ठावेषचनव्ययं॥ आडू सीमायामतिव्याप्तौ क्रियायोगे प्रदर्शयोः॥ आप्र
 गृह्यस्मृतौ वा कोऽसंतापप्रकोपयोः॥ इषेदेचरुषोऽनौ चकामदेवेनव्ययं॥ इदु
 खतो वने कोपे लक्ष्मिनी स्यादव्ययं॥ उसबुद्धौ रूषोऽनौ चशिववाची चनव्ययं॥
 ऊवाकारं न कृच्छरं व्यतिष्ठनव्ययं॥ ऊवापि कुसायां देवां वायां चनव्ययं॥ एऐशेषे
 तु हे हे वरस्मृत्या मंत्राणां हतिषु॥ उर्गशेषे तु दो दो वरसंबुद्ध्या कानयोर्मतोऽनुपा
 पे चेषदर्थे च कुसायां च निवारणे॥ मनागं च मंदे च थि कनिर्जर्जननिर्दयोः॥ अ
 गसंबोधने दधे पुनरर्थे च कीर्तिते॥ तिर्यक् तिरोर्थे च विदगादौ चनव्ययं॥ चान्वा
 चये समाहारे ष्यत्यो न्यार्थे समुच्चये॥ पक्षांतरग्रहे पादपूरणे व्यवधारणे॥ प्राक्
 प्रताते व्यतीते च दिग्देशकालतस्मृतं॥ प्रागपि च पूर्वस्मिन् न वेत्त प्रागष्टवांतरे॥
 ननु च प्रश्नदुष्टोक्तोः सम्यक् बाढप्रशंसयोः॥ किंचारं चैव साक्ये हि रुक्ममध्यवि
 नार्थयोः॥ नमः प्रज्ञावे निषेधे च स्वरूपा र्थेऽपि त्रैमे॥ इषदर्थे च सादृश्ये तद्विरुद्धत
 दंतयोः॥ ॥ अ॥ सुष्ठु प्रशंसने पिस्यादत्यर्थेऽपि च कथ्यते॥ अपष्टु निरबंधे स्मात् शो नना
 र्थेऽपि च स्मृतं॥ अंतरेण पदविद्यादिना मध्या र्थयोरपि॥ ॥ ए॥ तु पादपूरणे नेदे सनु

॥१७॥

चयेवधारणे॥ अरु स्मादत्यनुज्ञाते ष्य स्तया पीडयोरपि॥ श्वितप्रश्ने वितर्के च शश्वत्
 पुनः स दार्थयोः॥ पश्चात्प्रतीच्यां चरमे साहाय्यप्रत्यक्तुल्ययोः॥ सन्नसहैकवारे
 स्मात् आरादूरसमीपयोः॥ यावत्तावत्परिच्छेदे काश्चेन्मातेवधारणे॥ पुरस्ताच्चतुष्टुप्रा
 च्यापुरार्थे प्रथमे प्रतः॥ उत प्रश्ने वितर्के स्मादुतात्यर्थी विकल्पयोः॥ किमुतातिशये प्र
 श्ने विकल्पे च प्रयुज्यते॥ हतदुष्टे विषादे च वाक्यारंभानुक्रमयोः॥ स्वस्त्याशीः केन
 पुन्यादौ यद्वत्प्रश्नवितर्कयोः॥ नतामंगसंतोषखेदादुक्तोऽविस्मये॥ अहो बत
 नु कपायां खेदे संबोधनेऽपि च॥ तत आदौ परिप्रश्ने पंचम्यर्थे कथांतरे॥ आनंतये
 कृतप्रश्ने पंचम्यर्थे च निद्रुते॥ अतो न वेकारणापदेशनिर्देशयोरपि॥ पंचम्यर्थे त
 तः प्रोक्तं पंचम्यर्थे च शासने॥ संज्ञावनावयवयोरंततः पदमिष्यते॥ इतो यतश्च
 नियमे पंचम्यर्थे विज्ञागयोः॥ इति प्रकरणे देतो प्रकाशादिसमाप्तिषु॥ निर्देशने प्र
 कारे स्मादनुकर्षे च समतं॥ अतिशयः प्रशंसायां प्रकर्षे च न्येति॥ इति स्वरूपे स
 निध्ये विवक्षानियमे मते॥ नितोता संप्रति के पवाचकोप्ये पदशितः॥ प्रतिप्रतिनि
 ॥ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः॥ मात्रार्थे चातिमुख्ये च प्रतिदानादिषु प्रति॥ २६॥

अथोऽथ च संप्रश्ने मंगलारंभे योरपि ॥ अतरे च कास्ते च शंशये च प्रकी
र्तितौ ॥ यथा शब्दस्तु निर्दिष्टस्तु ल्ययोगानुमाने यो ॥ तथा स्यान्ति श्रयेषु
प्रतिवाक्ये समुच्चये ॥ उक्तौ चो देश निर्देश सादृश्ये तु प्रकीर्तितौ ॥ कारण
स्योपपत्तौ च सर्वथा हेतु बाधयो ॥ अन्यथा वितथार्थे स्यादन्यथा परमार्थके ॥
दृष्टानिः कारणे वध्ये दृष्टा स्याद्वाधिवर्जितौ ॥ ॥ य ॥ उत्प्रकाशे वियोगे च
प्राबल्यस्योक्तशक्तिषु ॥ प्राधान्ये बंधने तावे मोहे ला तौर्द्धर्मणो ॥ ॥ द
नु स्या प्रश्ने विवक्ष्यार्थे प्रतीतानुनाथार्थयो ॥ ननु प्रश्ने प्यनुनये नु हाने प्यव
धारणे ॥ आमंत्रणे चापि ननु किं ननु प्रश्न वितर्कयो ॥ नाना विनार्थे पि नवे
नानाने को नयार्थयो ॥ स्ताने नु कारणार्थे स्यात् युक्त सादृश्ये योरपि ॥ अ
नु हाने सहार्थे च पश्चात्सादृश्ये नु ॥ आयाते च समीपे च लक्ष्मदा वनुक्रमे ॥
नि निवेशे नु शार्थाधो जाव संशय शशिषु ॥ आश्रये वने धने मोहे दाने कर्म
णि दर्शने ॥ अत नाना वे च समीप्य को श लो परमेष्ठु च ॥ नित्यार्थे संयमे चापि हे
पार्थे पि च निश्चितं ॥ ॥ न ॥ अप स्यादपठेष्टार्थे धर्ज नार्थे वियोगयो ॥ विषयये

॥१०८॥

२०

वामा स्यादिक ल्योपमयोरेवार्थे पि समुच्चये ॥ विशेषेण तीत नानार्थे विः स्यात्पक्षि नव्यं ॥ ५
पि विवृतौ चोर्थे निर्देश दर्शयो ॥ उपसामर्थ्याद्विषय दोषारव्या ना त्वयेषु
चा ॥ आचार्य करदा ने व्यापार न प्रजयो ॥ तद्योगे पि च लिप्सा या मरणा
र्थे द्यमार्थयो ॥ उपहाने धिक् प्रोक्त मा सन्नेषु पकीर्तितं ॥ अतिसं जावता
प्रश्न शंका गहसं नु चये तथा युक्त पदार्थेषु कान्ता रक्रिया सुच ॥ ॥ प ॥
वेशष्ट उपमायां स्यादोवरु लोत्वन व्यं ॥ वै स्यात्सं बोधने पादप्ररणे नु न
ये पि च ॥ ॥ ब ॥ अति कं न्त कथने प्यति वीप्सा ति मुख्ययो ॥ ॥ न ॥ स पा
दप्ररणे ती ते सामि नि दार्थयो र्मतं ॥ अमा स हा र्था ति कयो नूनं निश्चित त
र्कयो ॥ का सं प्रका ने नु मता वस्त्या नु गमे पि च ॥ नाम प्रकाश्य संज्ञा व्यकुसा
न्युपगमे पि च ॥ सांप्रतं चाधुनार्थे स्याद्युक्तार्थे चापि सांप्रतं ॥ दुर्वितर्के परिप्रश्ने
उकोपे प्यनुती विषु ॥ उप्रश्ने गीत तौ रोषे आस्तु तौ चावधारणे ॥ उप्रश्ने चरुपोक्तौ च
प्राधनं नाना नु कु लयो ॥ किं प्रश्ने पि च कुसा या कं शिरः सुख वारिषु ॥ उमित्यनु मितौ
प्रोक्तं प्रणवे चाप्युपक्रमे ॥ एवं प्रकारोपमयो रंगी कारे वधारणे ॥ अस्तं नृपण

हस्यासंषोधनेपादः पूरणेन व्ययं शिवे ॥ हा विषादे च शोके च दुःखार्थेपि च कथ्यते
 हि पादपूरणे हतौ विशेषेण व्यवधारणे ॥ हि दुःखहेतुवुद्धिदोही विस्म विषादयोः ॥ हा हा
 खेदे च दुःखहेतुवुद्धिदोही विस्म विषादयोः ॥ हा हा खेदे च दुःखहेतुवुद्धिदोही विस्म विषादयोः ॥
 यो ॥ हा हा खेदे च दुःखहेतुवुद्धिदोही विस्म विषादयोः ॥ हा हा खेदे च दुःखहेतुवुद्धिदोही विस्म विषादयोः ॥
 धिष्ठ ॥ विद्यमाने च संबन्धे सहस्रप्रविर्तितः ॥ अहा धिगर्थेशो केच करुणार्थवि
 षादयोः ॥ आहोतता हो धावेनौ परिप्रश्नविचारयोः ॥ अह हेत्यनुते खेदे ही ही विस्म
 यहास्ययोः ॥ अह हस्यादनुशये परितो श प्रमेदयोः ॥ इह शब्दे नियो गार्थे हे पाथे
 पितिवध्यते ॥ मं कुशीध्रे न शार्थे च तवाथे पिब चित्तं ॥ श्री ॥ ॥ इत्यप्यपाने का
 धैर्कर्गः ॥ ॥ यद्यप्यवतया किंचिन्ना मात्र प्रतिज्ञाति च ॥ तत्र दानिष्य तां सदि
 तं निपा रायणादि जिः ॥ ॥ एतच्च ॥ वीजै रस्वितै रवश्यं प्रयोग संबोध फल
 दयाप्यै ॥ येन निवृत्ता चरं ततं सर्वज्ञाता स्वप्रणयि ततैव ॥ ॥ खैरप्रचा
 रैः परिकल्पिता निःशब्दार्थ संबोध कथा प्रथा जिः ॥ प्रावाणी निरप्राप्त मुदा प्र
 तो दमाधातु मंत्रेष परिश्रमो नः ॥ ॥ एतां तति तत धियः हत हत्य तावमापा

॥११०॥

दयंतु सदयं मदयंतु चेत् ॥ नित्यं महेश्वर कवेः परिज्ञा वयंतो वाचः परो न
 तिरता हितवंतितो के ॥ ४ ॥ इति सकल वैद्यराज चक्रराज शेष्वरस्य कविरा
 ऊपरमेश्वरस्य जगद्यविद्यानिधेः श्रीमन्महेश्वरस्य तौ विश्वप्रकाशे परि
 छेदो द्वितीयः समाप्तः ॥ परमेश्वरेत्यादि श्रीमत्केशवसेनदेवस्य ॥ ॥ विश्वा
 तिधानकोशानि प्रतिलोक्य प्रज्ञाप्यते ॥ अमरेणै कवी ज्ञेयै काक्षरनाममा
 लिका ॥ १ ॥ अतः कृत्वा स्वयं चरितं कामईः श्रीरुरिश्चरः ऊरु हण मरु देवे देव
 दानवमातरौ ॥ २ ॥ इदं वस्तु च वाराही नवेदे विष्णु रैशिवः ॥ उर्वेधातु रनंत
 स्यादं ब्रह्म परमः शिवः ॥ को ब्रह्मात्म प्रा काश च के कि वा युयमा जिष्ठ ॥ कं
 शीर्षे सु सुखे सु सुखे मो शब्दे च वि पुनः ॥ ४ ॥ स्याद्दे पतिंदयोः प्रभो वितर्के च
 स्वमिदिये ॥ स्वर्गे व्योमि नृपेश्वर्ये सुखे सविदिस्वरवौ ॥ ५ ॥ गस्तु गत रिगं

धर्वेजंगातेजोर्विनायके॥स्वर्गेदिशिपशोरशौक्नेनूमाविषोगिरि॥६॥ज
 लेक्षिद्यस्तुघंटीशेधाकिक्किण्यावधेधनौ॥डस्तुनैवरविषयेछयोश्चश्चप्र
 चौरयौ॥७॥छःसूर्येदेदकेकुनिर्मलेजस्तुजेतरि॥विगतेजूननोवाचि
 पिशाच्याजवनेपिच॥जोतदेचारुवायौजोगायनवधरेधनौ॥८॥टंष्ट
 थिव्याकरंकेचटाधनौठोमहेश्वरे॥शून्येवृहद्यनौचप्रमडलेडःशिवेध
 नौ॥९॥जायेगोनिगुणेशषेठकायांलस्तुनिफले॥कानेशस्तस्करेकोडतुछ
 योस्तापुनःप्रिया॥१०॥थोशीत्राणेमहीधेदेपत्न्यांदादाट्टदानयोः॥छेदेव
 धेचधागुलेकेशेधातरिधीमतौ॥११॥धूरैर्नोकिंपचिंतास्तुनस्तुनिबंधबुद्ध
 योः॥नित्यरंनेतरिनुःस्तुत्यानौस्तूर्यापस्तुपातरि॥१२॥पवनेजलपानेचफा
 ऊंजानितफलनयोः॥फस्तुफकारेस्यातथानिफलजाषले॥१३॥बप्रचेत

॥१११॥

नि३

सिक्कलसेबिखांडजयोर्ननुडौनोलिस्तुनयोः॥ज्ञाकांतौनूनुविस्मिनेनीर्त
 येमशिवेविधौ॥१४॥चंद्रेशिरसिमामानेश्रीमात्रोधारलेव्ययं॥मस्तुनर्ब
 धनेयस्तुमातरिश्चयंपशौ॥१५॥यास्तुयातरिषदांगेयानेलक्ष्यांचयोध
 नौ॥तीक्ष्णवैश्यानरेमैकोराःस्वर्णजलदेधनौ॥१६॥रीजनैरुनयेस्तूर्येतिच
 द्रेचलनेपिच॥ललावेनीःपुनःशेषेवलयेवोमहेश्वरे॥१७॥वरुणमास
 तेचस्यादौपम्ये॥पुनरव्ययं॥शंसुरवंशंमुनेचस्यातशीशयनेमुनिशा
 करे॥१८॥षष्ठेष्टःपुर्गनैविमोहेसःपरोक्षके॥सालक्ष्याहोक्रिपानेच
 हस्तेदारुणिश्रुतिनि॥१९॥कःकेत्रेरकसीत्युक्तामालाप्राकस्तूरिसंभता॥
 नाम्नामेकार्थनातार्थैकाक्षराणामियंमया॥२०॥॥श्रीः॥इतिश्रीमहापं
 डीतअमरविरचिताएकाक्षरनाममाला॥॥छ॥॥कःखेचरतिदा
 रम्याकोजातःकिंविच्छरणं॥कोवंधःकीदृशीलंकावीरमर्कटकंपिता॥

ग्रीष्मे विंशत्युत्तराश्विने ज्येष्ठे विंशत्युत्तराश्विने कृत्तिके विंशत्युत्तराश्विने ॥ स्त्रीणां विंशत्युत्तराश्विने
यं रतिपतिवशिनः किंप्रलं कामिनीनां भद्रसानी तं मनोजं ज्वरमुरसिदृढ
यज्जहीते त्रयाणां लोकानां जीवनं किंकविवरसपदी ब्रह्मवर्षे श्वत्थुतिः
॥ पयोधरा ॥ ॥ संवत् १९४३ वर्षे शाके १६०८ प्रवर्तमाने आश्विन मासे १२ तारीखे
तीर्थजां निजा उस्तुत देवरा मेण लिखितं ॥ कार्तिकेयदि ३० शुक्ले ॥ सं
विश्वप्रकाश ॥